बाँहों में आकाश

उपन्यास

डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय

हर्फ पब्लिकेशन
नई दिल्ली

पुस्तक का नाम : **बाँहों में आकाश**
ISBN :
उपन्यासकार : **डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय**
मूल्य : दो सौ रूपये मात्र
संस्करण : प्रथम
प्रकाशन वर्ष : 2018
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
मुद्रक : आर.के. ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली
प्रकाशक : **हर्फ़ मीडिया**
पता : बी–84 ग्राउंड फ्लोर, सेवक पार्क साइड, पटेल गार्डन एक्सट. द्वारका मोड़,
नई दिल्ली–110059
ईमेल : editorharfmedia@gmail.com
mail@harfmedia.com
वेबसाइट : www.harfmedia.com
www.kitabgali.com
संपर्क : +91- 9971072032, +91-9570399300
+91- 9891460279

समर्पण

परम पूजनीया माँ
श्रीमती उमादेवी पाण्डेय
को
सादर समर्पित

भूमिका

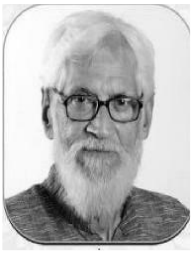

'बाँहों में आकाश' डॉ० राजीव कुमार पाण्डेय का नया उपन्यास है। उपन्यास भले ही प्रेम कथा पर आधारित हो लेकिन मौजूदा दौर की कई विसंगतियों और जटिलताओं को उजागर करता है। शेखर और दिव्या की प्रेम कथा से शुरू हुई कथा कई नाटकीय मोड़ लेते हुए सुखद अंत पर समाप्त होती है। कथा में कई ऐसे पड़ाव हैं जो आम जिन्दगी में सहजता से देखने को नहीं मिलते लेकिन आज के समाज, रहन-सहन, आचार-विचार की परतें बखूबी उघाड़ते हैं।

एम एन सी (मल्टी नेशनल कम्पनी) के तौर तरीकों से शुरू हुई कथा इन कम्पनियों के काम काज के तौर तरीकों को उजागर करने के साथ साथ वहाँ के माहौल से उपजे मनोभावों को भी रेखांकित करती है। कथा विन्यास में डॉ० राजीव कुमार पाण्डेय ने स्त्री पुरूष के दैहिक रिश्तों को परिस्थितिवश जन्मी विसंगतियों के बीच बेहद सन्तुलित तरीके से दर्शाया है। मामला चाहे वैश्यावृत्ति का हो या प्री-टेस्ट का असामान्य दैहिक रिश्तों में धकेल सकता है। यह हर कोई जानता समझता है, वैसे भी यह एक बहुत सामान्य सी बात है लेकिन यह साधारण सी बात उपन्यास की कथा का आधार है और पूरा उपन्यास लेकर चलती है।

दिव्या की जिन्दगी में आया पहला पुरुष मोहित उसका असल प्रेमी है या नहीं यह भले स्पष्ट न हो लेकिन माना जा सकता है कि उपन्यास की कथा का ताना-बाना बुनने के लिये उसकी उपस्थिति जरूरी थी।

दिव्या और मोहित सुखद वैवाहिक गृहस्थी का सपना सँजो रहे हैं कि उसी दौरान दुर्घटना वश दोनों ही एच आई वी पॉजिटिव हो जाते हैं। इस रोग (एड्स) को आधार में रखकर कितने उपन्यास लिखे गये यह तो मुझे पता नहीं लेकिन एड्स को केन्द्र में रखकर डॉ० पाण्डेय ने जीवन के नैराश्य पक्ष को दरकिनार कर जीवन की संभावनाओं को बरकरार ही नहीं रख, बल्कि उपन्यास के पूरे तंत्र का भी विस्तार से बखान किया है। पूरे उपन्यास में खटकने वाली बात यह है कि मनोवैज्ञानिक रूप से व्यक्ति या समाज एड्सग्रस्त से इतनी संवेदनशीलता से नहीं जुड़ता।

'बाँहों में आकाश' की नायिका दिव्या कथा में एक उन्मुक्त, स्वतंत्र विचरण करने वाली नायिका की तरह प्रवेश करती है। वह अपने भावी जीवन साथी के पौरुष की जाँच की हिमायती भी है। अपने पुरुष साथी से सन्तुष्ट भी होती है, लेकिन कथा के उत्तरोत्तर में वह एक साहसी, जुझारू और दृढ़प्रतिज्ञ युवती के रूप में इस कदर उभरकर आती है जिस पर कोई भी चारित्रिक दोषारोपण की सम्भावना नहीं रह जाती। कथा में ग्लोबल विचार को समेटकर उपन्यास सुखद अंत के साथ समाप्त होता है। उपन्यास का शीर्षक 'बाँहों में आकाश' अंत में ही पाठक के सामने अपने होने की वजह साबित करता है।

उपन्यासकार डॉ० राजीव कुमार पाण्डेय का यह उपन्यास कथा क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाये इस हेतु असीम शुभकामनायें।

से.रा.यात्री
वरिष्ठ कथाकार
F/E-7, कविनगर
गाजियाबाद

आत्म कथ्य

यह मेरी दूसरी औपन्यासिक कृति ''बाँहों में आकाश'' आपके कर कमलों में है। इससे पूर्व मेरा प्रथम उपन्यास ''आख़िरी मुस्कान'' को काफी चर्चा मिली थी एवं अनेकों प्रतिक्रियायें भी प्राप्त हुयीं थी। उसी समय से एक कथानक मन को उद्वेलित कर रहा था जिसकी परिणित ''बाँहों में आकाश'' के रूप में अब साकार हुयी है।

अपने इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में जाने से पहले एक दृष्टि उपन्यास पर भी डालना आवश्यक है। उपन्यास की परिभाषायें निम्न विद्वानों ने निम्न प्रकार बतायीं हैं। अंग्रेजी विद्वान लार्ड डेविड सेसिल कहते हैं, ''उपन्यास एक कलाकृति है जो हमारा जीवन्त जगत से परिचय कराती है, कुछ बातों में हमारे संसार से मिलता-जुलता है किन्तु उसकी अपनी वैयक्तिकता है।''

ई. एम. फोस्टर के शब्दों में, ''उपन्यास का आकार पचास हजार शब्दों से कम नहीं होना चाहिए।''

एवल बेलवी ''उपन्यास एक निश्चित आकार वाला गद्यमय आख्यान है।''

हिन्दी के मूर्धन्य उपन्यासकार मुन्शी प्रेमचन्द के मतानुसार, ''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ, मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''

डॉ० श्याम सुन्दर दास के शब्दों में, ''उपन्यास मनुष्य के जीवन की काल्पनिक कथा है।''

प्रसिद्ध कथाकार एवं नाटककार जयशंकर प्रसाद कहते है, ''मुझे कविता और नाटक की अपेक्षा उपन्यास में यथार्थ का अंकन सरल प्रतीत होता है।''

जैनेन्द्र के अनुसार- ''पीड़ा में ही परमात्मा बसता है, उपन्यास आत्म पीड़ा का ही संसाधन है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर मेरा यह उपन्यास ''बाँहों में आकाश'' कितना सफल हुआ है यह तो पाठक वर्ग ही तय करेगा।

अब उपन्यास के क्रमिक विकास पर भी नजर डाल लेते हैं।

उपन्यास साहित्य का क्रमिक विकास को तीन युगों में बाँटा जा सकता है।

१- पूर्व प्रेमचन्द्र युग २- प्रेमचन्द्र युग ३- प्रेमचन्द्रोत्तर युग

प्रेमचन्द्रोत्तर युग में भी विकास की सीमायें आगे बढ़ रही हैं, जिनको भी कुछ श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

१-सामाजिक उपन्यास २-मनोवैज्ञानिक उपन्यास ३-प्रगतिवादी उपन्यास ४-राजनैतिक उपन्यास ५-ऐतिहासिक उपन्यास ५-आँचलिक उपन्यास ७-आधुनिकबोध युक्त उपन्यास

उपन्यास को इन्हीं सीमाओं में कैद करना समीचीन नहीं होगा। जैसे-जैसे युग आगे बढ़ता गया आधुनिक युग बोध भी आगे बढ़ जाता है। इसमें महानगरीय और ग्रामीण आधुनिक बोध को दर्शा सकते हैं।

आधुनिक युग में साहित्य के विभिन्न अंगों में उपन्यास को अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुयी है। इसका कारण है कि वर्तमान युग के वास्तविक जीवन की दिखाने के लिए उपन्यास सच्चा प्रतिनिधि है। समाज जो रूप धारण करता है उपन्यासकार उसका चित्रण ही नहीं करता बल्कि समाज में सुधार तथा परिवर्तन की चेतना को जगाता है। सुन्दर कथानक, सुन्दर संवाद, सुन्दर पात्र एवं परिस्थिति का सुन्दर चित्रण से उपन्यास एक ही समय में नाटक तथा कथा का आस्वाद दे सकता है इसलिये इसे पॉकेट थियेटर भी कहा जाता है।

एक उपन्यास को निम्न तत्वों के आधार पर कसौटी पर कसते हूँ।

कथानक/कथावस्तु, पात्र एव चरित्र चित्रण, संवाद योजना, वातावरण, भाषा, शैली और उद्देश्य। सभी उपन्यासों में इन्हीं तत्वों के आधार पर आगे बढ़ा जाता है।

अब पुनः उसी बात पर वापस लौटता हूँ जहाँ से अपनी बात को प्रारम्भ किया था। प्रस्तुत उपन्यास ''बाँहों में आकाश'' के शुभारंभ में केवल एक कहानी ने जन्म लिया था लेकिन कहानी लिखने के उपरान्त ऐसा लगा कि यह विषय आगे बढ़ सकता है। परिस्थितियाँ ऐसी बनती गयीं कि विषय में से विषय निकलते गये और महानगरीय चकाचौंध की कुछ विडम्बनायें स्फुटित होती गयीं और उपन्यास की शक्ल धारण कर ली उस नवजात कहानी ने।

यद्यपि इस उपन्यास में पात्रों तथा घटनाओं का किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। केवल वर्तमान की विसंगतियों को कल्पना लोक में लेकर चलने का प्रयास किया है। इन प्रयासों में वर्तमान परिवेश की विडम्बना भी हैं, हकीकतें भी और सीखने वाले लोगों के लिए प्रेरणा भी है अपने लक्ष्य तक पहुँचने की जिजीविषा भी है और भटकती युवा पीढ़ी हेतु मार्गदर्शन भी।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। लम्बा संघर्ष, त्याग और उचित दिशा ही हमारी मंजिल तय करती है। इसलिए शेखर और दिव्या जो इस उपन्यास के मुख्य पात्र है, उन्हें भी सफलता मिलती है और जीवन के विविध रंगो की अभिलाषा भी पूर्ण होती है।

इस उपन्यास को लिखने में काफी समय लगा क्योंकि बीच-बीच में काफी दिनों का अंतराल भी हो गया। इसलिए तारतम्य बिठाने में काफी मसक्कत भी करनी पड़ी। तब कही जाकर शेखर और दिव्या का मिलन सार्थक हो पाया।

महानगरीय संस्कृति में पनपने वाली समस्या भी इस उपन्यास में है और उसका समाधान भी। जीवन की घोर निराशा भी है तो उसमें सफलता पाने की जिजीविषा भी है। इन्हीं सफलता और निराशा के बीच कहीं स्वतः बढ़ते-बढ़ते उपन्यास की दहलीज तक आ पहुँचे, परितोष इसी बात का है कि आख़िर में दिव्या की ''बाँहो में आकाश'' आ ही गया।

इस बात का दावा बिल्कुल नहीं है कि इस उपन्यास में उपन्यास की दृष्टि से सभी तत्व विद्यमान हैं लेकिन यह भी सच है कि किसी न किसी दृष्टि से उन तत्वों तक पहुँच अवश्य बनी होगी। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र शेखर पर अति उद्दात्त चरित्र का दोष अवश्य लग सकता है क्योंकि उसे दिव्या के अलावा कोई भी इस संसार में दिखती ही नहीं भले ही वह लाइलाज बीमारी से पीड़ित है। लेकिन सन्तोष जरूर मिलेगा की वह न केवल लक्ष्य तक पहुँचता है बल्कि दिव्या के अन्दर भी जीने की प्रेरणा जगाता है और उसे मुकाम तक पहुँचाने में सफलता अर्जित करता है।

भाषिक दृष्टि से जनसाधारण की भाषा को ही कलम ने अपनाया है। यह यथोचित भी प्रतीत होता है क्योंकि बहुसंख्यक वर्ग इसका रसास्वादन कर सके। यदि किसी एक भी मनुष्य के जीवन का भटकाव इस उपन्यास को पढ़कर दूर हुआ तो उपन्यास लेखन सार्थक हो जायेगा। क्योंकि हम जानते हैं कि भटकाव उम्र का दोष होता है, जिसमें किसी न किसी प्रकार से संस्कार क्षीण होता ही उसी से संस्कार को स्थिर करना या उसके मानस पटल पर स्थायी भाव का प्रभाव छोड़ना भी लेखक का उद्देश्य हो सकता है। सफलता कहाँ तक प्राप्त हुई ये तो पाठक वर्ग ही तय करेगा।

लेखकों, कथाकारों एवं पाठकों की बहुमूल्य प्रतिक्रियायें न केवल मेरा उत्साहवर्धन करेंगी, बल्कि इस औपन्यासिक पथ पर चलते रहने के लिए भी प्रेरित करेंगी।

मेरी इस साहित्यिक यात्रा में मेरे परिवार के सभी सदस्यों को क्रमशः स्मरण कर उनके प्रति अपना प्यार, दुलार, आभार, सम्मान, प्रकट करना भी अपना धर्म एवं दायित्व समझता हूँ। सर्व प्रथम मैं सन्त तुल्य मौन तपस्वी अपने पिता स्वर्गीय श्री ब्रह्मानन्द पाण्डेय के श्री चरणों में सदैव नमन करता हूँ। मेरी परम पूजनीया माता जी एवं मेरे पथ की प्रदर्शिका श्रीमती उमादेवी पाण्डेय जिनके अथक परिश्रम ने मेरे जीवन की मूर्ति को गढ़ा उनका अथक प्रयास चिरस्मरणीय रहेगा। उन्हें यह कृति समर्पित करता हूँ। मैं उनके चरणों मे श्रद्धा से नत होते हुए सदैव आशीर्वाद का आकांक्षी रहूँगा। मेरी धर्म पत्नी श्रीमती सरस्वती पाण्डेय जिनका भोलापन मेरी साहित्यिक यात्रा में कभी बाधा

नहीं बना एवं मनोकामनाओं को मेरे सहित्यिक यज्ञ में समर्पित कर दिया उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मेरी छोटी सी बगिया के दो पुष्प बेटी सुरभि पाण्डेय, बेटा संकल्प पाण्डेय जो मेरे प्रथम पाठक और समीक्षक भी हैं उनके प्रति प्यार प्रदर्शित करना कर्तव्य समझता हूँ। मैं अपने चाचा श्री शांति स्वरूप पाण्डेय का भी हृदय से धन्यवाद प्रकट करता हूँ। मेरी बड़ी बहिन श्रीमती रानी चतुर्वेदी, एवं बहनोई श्री मंजुल चतुर्वेदी, दूसरी बड़ी बहिन श्रीमती रीना उपाध्याय एवं बहनोई श्री सुभाष चन्द्र उपाध्याय, मुझसे छोटी बहिन श्रीमती रजनीश त्रिपाठी एवं बहनोई स्वर्गीय अनिल कुमार त्रिपाठी की सद्भावनाएं हमारे साथ रहीं उन सबका धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मेरी भांजी मीनू, शिवम, स्वाती, शिखा और भांजे क्रमशः अवनीश, हिमाँशु, शिवम, सम्भव की बाल मनुहार भी मुझे प्रेरित करती रही है।

देश के वरिष्ठ कथाकार परम श्रधेय श्री से.र.यात्री जी का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मेरे इस उपन्यास की भूमिका लिखकर उपकृत किया। साथ ही लोकप्रिय गीतकार एवं कथाकार डॉ० रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने अपने आशीर्वाद से अभिसिंचित किया।

हर्फ़ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक श्री जलज़ कुमार अनुपम का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इतने सुन्दर कलेवर में इस उपन्यास को कम समय में प्रकाशित कर महनीय कार्य किया है।

अषाढ़ पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा)
विक्रम संवत् 2074
तद्नुसार 27.07.2018

डॉ० राजीव कुमार पाण्डेय
(प्रधानाचार्य)
1323/भूतल सेक्टर-2, वेव़ सिटी,
गाजियाबाद
मो० : 9990650570
ई-मेल : dr.rajeevpandey@gmail.com

ऑफिस में काफी चहल-पहल थी। की-बोर्ड पर ऑपरेटर्स के अंगुलियों के पड़ने आवाजें आ रही थी। कोई फाइल निपटा रहा था। कोई लैपटॉप चला रहा था, सभी व्यस्त थे। खिड़की से झाँकती हुई धूप चेहरों पर पड़ रही थी। पास में रखे मोबाइल की घण्टी कई बार बज चुकी थी। चपरासी गुडमार्निंग के साथ केबिन में ट्रे लेते हुए दाखिल हुआ लेकिन इन सबसे अनजान था शेखर। किसी दुनिया में खोया अपने आपको भूला हुआ चिंता में मग्न।

''कब से आपका मोबाइल बज रहा है, कहाँ खो गये सर जी।'' जोर से आवाज लगाई चपरासी ने।

''अरे हाँ, खुशीराम तुम कब आये?'' शेखर ने चौंकते हुए पूछा।''

''अरे सर मैं बहुत देर से आवाज लगा रहा हूँ, आपको पता नहीं आप कहाँ खो गये हैं?''

''नहीं ऐसी बात नहीं खुशीराम कुछ जरूरी काम पेण्डिंग पड़े हैं। बस उन्हीं को निपटाने की सोच रहा था। तुम्हें तो मालूम है साल का आख़िरी महीना चल रहा है। सचिवालय से कई रिमाइण्डर भी आ चुके हैं। फाइलें कभी भी चेक करायी जा सकती हैं।'' अपनी बात को टालने की मुद्रा में शेखर ने कहा।

''वो तो... है सर, लेकिन एक बात कहूँ यदि आप बुरा न माने तो... कहीं फिर आपको दिव्या की याद तो नहीं आ गयी।'' कहते-कहते बात पूरी कर गया खुशीराम।

''चुप करो खुशीराम। तुम आजकल कुछ ज्यादा ही बोलने लगे हो। अच्छा चाय यहाँ रख दो और जाओ अपना काम करो और आइन्दा ऐसी बात मत करना।''

आज शेखर की आवाज में कड़कपन नहीं था, मिठास भी नहीं थी; अन्दर के दर्द की झलक जरूर थी।

शेखर ने प्यार भरी डाँट दी थी खुशीराम को लेकिन उसने वास्तव में शेखर की दुखती हुई रग पर हाथ रख दिया था।

आज दिव्या से अलग हुए दो महीने हो चुके थे लेकिन शेखर के दिमाग से वह पूरी तरह नहीं निकल पा रही थी। वह एक बार मिलकर उसका धन्यवाद ज्ञापन करना चाहता था। आज जिस सोच में डूबा था शेखर उसके सारे पृष्ठ धीरे-धीरे खुलते जा रहे थे। जिस पर उम्मीदें लिखी थी, बाग बगीचों की फुलवारियां लिखी थी जिन्दगी को साथ जीने की इच्छायें लिखी थी। आलौकिक सौंदर्य लिखा था; सुबह लिखी थी शाम लिखा था।

जाने कितने विचार मन में हिलोरे ले रहे थे, उन्हीं हिलोरों में से कुछ तारतम्य बिठाने की कोशिश और उसी विचार पुंज में से कोई परिणाम निकलने की

आशा लेकिन...। बात एक साल पहले की थी जब पहली बार दिव्या को नौकरी पर रखा गया था। एक दिन सुन्दर रंगीन सलवार सूट पहने हुए एकदम अप्सरा सी हाथों में मिठाई का डिब्बा पकड़े हुए दाखिल हुई ऑफिस में एक नवयौवना।

''लीजिए सर मिठाई खाइये' आज से मेरी नियुक्ति भी इसी ऑफिस में सॉफ्टवेयर इन्जीनियर के रूप में हुई हैं। इतना कहते हुए उस नवयौवना ने मिठाई का डिब्बा शेखर की ओर बढ़ाया।

शेखर टकटकी लगाकर देखता ही रह गया उसके रूप लावण्य को।

''कहाँ खो गये सर? लीजिये मिठाई खाइये।'' दिव्या ने कहा।

''नहीं-नहीं मैं कहीं नहीं खो गया बस यूँ ही...'' कहते कहते शरमा गया और मिठाई की तरफ हाथ बढ़ाते हुए इतना ही कहा 'बहुत-बहुत बधाई सीनियर इन्जीनियर शेखर की तरफ से।'

''थैंक्यू सर''

''बैठिये-स्वागत है इस ऑफिस में आपका। बहुत दिनों से खाली थी यह कुर्सी। यह आपका ही इन्तजार कर रही थी काफी दुखी थी। आज आपको पाकर यह कुर्सी धन्य हो जायेगी।''

''नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं है। खुशी तो मुझे हो रही है कि इतनी प्रतिष्ठित कम्पनी में मुझे यह नौकरी मिली और हाँ सर एक प्रार्थना है आपसे आप सीनियर हैं, हमें उम्मीद है आप मुझे सिखाने में मदद करेंगे।''

''कैसी बातें कर रहीं हैं आप? ये तो मेरा सौभाग्य होगा मैडम आप बेझिझक पूछ लीजियेगा।''

जी, इतना कहकर फिर अपनी कुर्सी पर विराजमान हो गयी अपने काम को समझने लगी, फाइलों को पलट-पलकट कर देखने लगी धीरे-धीरे शाम हो गयी चलने का वक्त हुआ अपने सामने रखा कम्प्यूटर बंद किया। ''अच्छा गुड ईवनिंग सर मैं चलती हूँ कल से समय पर आ जाऊँगी।''

''इट्स ओ.के. मैडम; आप बुरा न माने तो मैं आपका नाम जान सकता हूँ' पहले मैं ध्यान से सुन नहीं पाया था'' शेखर बोला।

''क्यों नहीं सर मेरा नाम दिव्या है।''

''आपका नाम भी आपके समान सुन्दर है।'' शेखर बोला।

कुछ शरमा गयी अपनी तारीफ सुनकर। अपनी गर्दन नीचे करते हुए धन्यवाद प्रकट करते हुए चलती बनी।

शेखर भी अपने घर चला गया लेकिन रास्ते भर सोचता रहा। घर पर भी उसका मन नहीं लगा। केवल दिव्या की खूबसूरती ही उसके मन में हलचल पैदा कर रही थी।

सुबह ऑफिस आना दिन भर में मेहनत कर शाम को वापिस जाना, आपस में बातचीत करना, हँसी ठिठोली करना यह क्रम बन गया था दिव्या और शेखर का। कम्पनी में दोनों की मेहनत की चर्चा भी होने लगी थी और कुछ सुगबुगाहट भी। इनके काम से डायरेक्टर भी खुश था। पद भी बढ़ गया था। वेतन भी वृद्धि पा गया था। दोनों अपने कार्य से काफी खुश थे।

'अब तो आपको दो महीने हो गये मन तो लग गया होगा दिव्या जी।'' शेखर बोला।

''मैंने कितनी बार आपसे कहा कि मुझे दिव्या कहा करें दिव्या जी नहीं'' दिव्या बोली।

''नहीं-नहीं शोभा नहीं देता केवल नाम लेना''

''अरे इसमें शोभा की क्या बात। इन दो महीनों में हम लोग इतना घुल-मिल गये हैं तो कुछ औपचारिक शब्दों को छोड़ देना चाहिए और फिर आपने की कहा था कि हम लोग मित्रवत काम करेंगे और इसी वजह से हमारा भी काम में मन लगा गया है'' दिव्या बोली

''अच्छा तो ठीक है दिव्या जी।''

''फिर आपने 'जी' लगाया।''

''सॉरी, अब याद रक्खूँगा।'' शेखर बोला।

इस तरह की बातें, मित्रवत व्यवहार चलता रहा। हँसी-ठिठोली भी होने लगी। दोनों लगभग हम उम्र थे यही कोई दो-तीन साल बड़ा होगा शेखर। शेखर के मन में प्यार के बीज अंकुरित होने लगे थे, वह आकर्षित होने लगा था। उसने मजाक-मजाक में कई बार कह भी दिया था 'आप जिस दिन ऑफिस नहीं आती हो मन नहीं लगता है। पता नहीं क्या जादू कर दिया है आपने।'

दिव्या इसे केवल मजाक हीं समझती रही। कभी गम्भीरता से नहीं लिया उसने।

शेखर के ऊपर घर का काफी दबाव पड़ रहा था। शादी के लिए बार-बार फोटो दिखाये जा रहे थे। लेकिन वह हर बार नापसन्द कर वापिस कर देता था। वह दिव्या को चाहने लगा था। दिव्या से इकतरफा प्यार करने लगा था लेकिन कह नहीं पा रहा था।

एक दिन दिव्या ने पूछा ''सर आप कई दिनों से खोये-खोये रहते हो क्या बात है? आपके मन में कुछ चल रहा है कुछ छिपा रहे हो। जब आपने मुझे अपना मित्र मान ही लिया है तो छिपाने की क्या बात है?''

''नहीं-नहीं ऐसी कोई बात नहीं है'' शेखर बोला

''ठीक है आप मुझे अपना नहीं समझते हो तो मत बताओ जबरदस्ती नहीं करुँगी।'' दिव्या बोली

शेखर ने कहा- ''मेरे घर वाले मेरी शादी का दबाव बना रहे हैं लेकिन मैं अभी शादी नहीं करना चाहता हूँ।''

'क्यों?' दिव्या ने पूछा।

'क्योंकि मैं किसी और लड़की से प्यार करता हूँ।'

'वह तो बड़ी सौभाग्यशाली होगी, जिसे आपका प्यार मिला है आप जैसे कर्मठ, ईमानदार, मेहनती अधिकारी को पाकर उसे तो खुश होना चाहिए। दिव्या ने कहा।

''पता नहीं खुश होगी या नहीं मैं नहीं जानता क्योंकि आज तक मैंने उससे अपने दिल की बात कह नहीं पायी है।''

शेखर ने कहा।

''अजीब बात है, आप इतना शरमाते हो'' बताओ तो मैं आपकी सहायता करुँ।'' दिव्या ने हमदर्दी में कहा।

''नहीं-नहीं।''

''फिर भी मुझे बताइये वह कौन सी लड़की है? नाम पता तो बताइये मैं कह देती हूँ आपकी तरफ से।'' दिव्या बोली।

बड़ी हिम्मत करके धीरे से बोला, ''वो कोई और लड़की नहीं, तुम हो दिव्या।'' अपने रुमाल से अपना पसीना पौंछते हुए शेखर ने कहा।

दिव्या एकदम अवाक रह गयी यह शब्द सुनकर। उसने तो ऐसा कभी सोचा ही नहीं था और सोच भी नहीं सकती थी क्योंकि उसे एक ऐसी समस्या थी जो किसी को बता भी नहीं सकती थी। वह जिन्दादिली के साथ मेहनत करके रोटी कमाकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। हँसना, बोलना उसकी आदत में था शायद इसी को शेखर ने प्यार समझ लिया था। दिव्या चुपचाप खड़ी रही कुछ नहीं बोली केवल इतना ही कहा ''लगता है आपका ध्यान भटक गया है, मैं प्यार नहीं करती हूँ बस मित्र ही रहना चाहती हूँ। इससे ज्यादा और कुछ नहीं। हो सके तो आप यह ख्याल अपने मन से निकाल दें।'' दिव्या ने गम्भीरता पूर्वक कहा। ''आप नाराज मत होइये दिव्या।'' मैं कोई अधिकार नहीं जमा रहा केवल आपने पूछा तो बता दी अपने दिल की बात। कोई

बात छिपाई नहीं। यह सच है कि मैं आपसे बेहद प्यार करता हूँ। आपके बिना यह जीवन असम्भव है। आप मुझे प्यार करें या ना करें लेकिन मैं करता रहूँगा और इन्तजार करता रहूँगा जब तक आप हाँ नहीं बोल दोगी। मेरी शादी होगी आपसे वरना आजीवन कुँवारा ही रहूँगा यह मेरा दृढ़ निश्चय है। शेखर की आवाज में दृढ़ता थी।

''लेकिन आप यह ठीक नहीं कर रहे हो।''

''ठीक है या नहीं मैं यह नहीं जानता आप हाँ करें या ना करें इससे भी कोई अन्तर नहीं पड़ता लेकिन मैंने खूब सोच समझकर ही कहा है फैसला आपके हाथ में है।''

दिव्या ने कहा ''पुरुष लोग भी बड़े भोले होते हैं। हँसी-मजाक और मित्रता को प्यार समझ लेते हैं और अपने जीवन को बरबाद करने पर उतारु हो जाते हैं।''

''मैं बहुत ही व्यवहारिक हूँ समझ भी रहा हूँ आप निश्चित रुप से किसी न किसी लड़के से प्यार करतीं होंगी और उसी से शादी करना चाहती होंगी।'' शेखर ने कहा-

''ऐसी बात नहीं शेखर जी, मैंने शादी के बारे में तो कभी सोचा ही नहीं और जहाँ तक बात प्यार की है तो मैं किसी से कर ही नहीं सकती मैं शादी करूँगी ही नहीं। आप ये सब छोड़िये यह मेरा व्यक्तिगत जीवन है इन सबसे आपको मतलब भी नहीं होना चाहिए। और हाँ, आप अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करो और अपना संसार बाताओ'।' दिव्या ने कहा।

शेखर का मन उद्देलित हो रहा था तभी उसने कहा- ''हो सकता है आपके मन में ऊँच-नीच, जाति-पाति का कोई ख्याल हो...। तो हम बराबर के समान जाति धर्मा है आपके माता-पिता को भी कोई आपत्ति नहीं होगी जहां तक मैं समझता हूँ।''

शेखर जी, आप समझिये मेरी मजबूरी है; मैं आपको बता नहीं सकती। इतना ही कह सकती हूँ हमारा मिलन इस जीवन में तो सम्भव नहीं है।''

लेकिन शेखर हार मानने को तैयार नहीं था तभी तो उसने कहा ''मैं इस जन्म तो क्या अगले जन्म में भी आपकी ही प्रतीक्षा करुँगा।''

दिव्या ने सोचा चलो आज किसी प्रकार इससे पीछा छुड़ाया जाये तभी विवश होकर उसने कहा ''यदि आप नहीं मानते हो तो आपको मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी।''

''वो क्या?''

''जिस दिन आप पी.सी.एस. की परीक्षा पास कर लोगे तो मैं आपके फैसले पर विचार करुँगी'' उसने टालने की मुद्रा में कहा था क्योंकि वह जानती थी कि कम्पनी में दस-बारह घण्टा मेहनत करनी पड़ती है ऐसा सम्भव नहीं है कि इतनी मेहनत के बाद कोई तैयारी कर पायेगा।

शेखर ने कहा ''आपकी शर्त मंजूर है, इतना कहकर दोनों चले गये।

लगभग छः महीने बिना किसी चर्चा के सामान्य क्रम चलता रहा शेखर ने गाँठ बाँध ली थी कि वह पी.सी.एस. की परीक्षा पास करेगा। दिन-रात एक कर दिया और पी.सी.एस. को अच्छी रैंक के साथ पास भी कर लिया।

दिव्या ने अखबार में फोटो छपा देखा तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा लेकिन एकाएक अपना वचन याद आया तो उसके पैरों तले जमीन खिसक गयी। ऐसा इसलिए नहीं कि उसे शादी करनी पड़ेगी। शादी के लिए कौन तैयार नहीं होगी उससे। लेकिन उसके सामने भयंकर मजबूरी थी।

उसे बधाई देने वालों की लाईन लगी थी लेकिन उसकी आँखे तो केवल दिव्या को ढूँढ़ रही थी क्योंकि उसने फोन से बधाई दे दी थी और शाम को मिलने को भी कहा था। तभी दिव्या अपने हाथों में मिठाई का डिब्बा लिए हुए आयी और मिठाई खिलाते हुए बोली ''आप जीत गये और मैं हार गयी। आपको बहुत-बहुत बधाई और हाँ आप इस डिब्बे को खोलकर अवश्य देख लीजिएगा इसमें एक पत्र रखा है इसमें हमने अपनी हार स्वीकार कर ली है। अब आप जैसा कहेंगे हम करने को तैयार हैं। जब ऑफिस वाले आसपास के बधाई देकर चले गये। दिव्या भी घर चली गयी तो अकेले में उसने डिब्बे को खोला उसमें से एक पत्र निकाला जिसमें लिखा था-

''क्षमा कीजिए, शेखर जी मैं आपके लायक नहीं हूँ। मैं बार-बार आपसे कह रही थी कि मेरी मजबूरी है, मैं सामने खुश दिखती हूँ लेकिन अन्दर से खोखली हूँ। मैं किसी की जिन्दगी बरबाद नहीं कर सकती और करने का अधिकार भी नहीं है। मेरी जिन्दगी का कुछ पता नहीं कब जीवन की शाम हो जाये- मैं एच.आई.वी. पोजीटिव हूँ। मेरा ख्याल छोड़ दीजिए और अपने माँ बाप के अनुसार अपनी शादी कर लीजिए अपनी जिन्दगी बरबाद मत करो मेरी आपसे गुजारिश है हो सके तो क्षमा करना मुझे भूल सको तो भूल जाना अपना नया संसार बसा लेना। आपकी मित्र- दिव्या।''

आज अपने ऑफिस में बैठा यही सोच रहा था कि जिस दिव्या के कारण उसने पी.सी.एम. उत्तीर्ण किया वह उसके जीवन की साथी नहीं बन पायी, जिसको उसे जिन्दगी भर अफसोस रहेगा। इसी सोच के कारण उसे अपने चपरासी खुशीराम के आने की आहट सुनाई नहीं दी।

❑

शाम को ढ़लता हुआ सूरज किसी नदी पोखर या सागर में डूब रहा था, अँधेरा हो जाने का संकेत देने लगा था, पक्षी अपने घोसलों को वापस लौटने लगे थे। जानवरों के घर वापिस जाने से आसमान में धूल उड़ रही थी। आसपास के जंगलों में

से शियारों की आवाजें सुनाई देने लगी थी। लेकिन दिव्या अपने विचारों में मान उस तालाब के किनारों बैठी शान्त तालाब की हल्की लहरों को पढ़ने की कोशिश कर रही थी जो कहीं गुम हो गया था। उस गुमनामी में केवल अँधेरा था, धुप्प अँधेरा।

कभी-कभी अँधेरा इतना सघन होता है कि उस तमस को चीरने की औकात भास्कर भी नहीं कर सकता। भास्कर भले ही पूरे यौवन के साथ खड़े हों लेकिन उसे नीचे बादलों ने घेर रखा है, तो ऐसे में पृथ्वी पर प्रकाश की सोचना बेमानी है। वो भी बादल ऐसे जो मानसून के हों तो फिर कहा ही क्या जा सकता है?

इसी ऊहापोह में अजीब स्थिति थी दिव्या के लिए। वह उन दिनों को कोस रही थी जिन दिनों ने उसके जीवन में अँधेरा भर दिया था। जिसके कारण उसको जान से भी ज्यादा चाहने वाले शेखर को इन्कार करना पड़ा था। भले ही मजबूरी में लेकिन वहाँ केवल एक जिन्दगी का प्रश्न नहीं था बल्कि किसी की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकती थी। अपनी तो जिन्दगी का सूरज ढ़लना तय था, लेकिन उस ढ़लान का उसके जीवन में आगमन कैसे हुआ यही सोचकर सिहर गयी और एकाएक पूरी कहानी एक फिल्म की रील की तरह घूम गयी।

बात उन दिनों की है जब दिव्या की एम.सी.ए. अंतिम चरणों में थी और उसकी मोहित के साथ दोस्ती कॉलेज के लिए चर्चा का विषय थी। मोहित और दिव्या की पृष्ठभूमि जो भी रही हो लेकिन समय के अनुसार सोच आधुनिक थी। मोहित कुछ ज्यादा ही आधुनिक विचारों का लवादा ओढ़े था। इस दौड़ती भागती दुनिया में जल्द ही मुकाम हासिल करना चाहता था लेकिन दिव्या उसकी कमजोरी थी। वह दिव्या को अनेकों दिवा स्वप्न दिखा चुका था। एक दिन काफी हिम्मत बटोर कर उसने कहा था-

"दिव्या मैं तुमसे अपने हृदय की बात कहना चाहता हूँ यदि बुरा ना मानो तो कहूँ।"

"बुरा मानने की क्या बात है मोहित? जब हम पिछले पाँच वर्षों से एक साथ पढ़ रहे है और एक दूसरे के मित्र हैं। आपस में सभी बातें शेयर करते हैं तो हिचकने की आवश्यकता है? तुम तो ऐसे शरमा रहे हो जैसे लड़कियां शरमाती है। तुम्हीं हो, जिसने मेरी जैसी शर्मीली लड़की को एकदम बोल्ड बना दिया है। अब मैं अपनी बात पूरी हिम्मत के साथ कह सकती हूँ।" एक साँस में कह गयी दिव्या।

"अरे तुमने तो इतना बड़ा लेक्चर दे दिया।" कहकर शांत हो गया मोहित।

"अरे ओ मोहित! तुम क्या अपने हृदय की बात कह रहे थे? जरा मैं भी तो सुनूँ।" दिव्या बोली।

"देखो दिव्या इन पेड़ों पर पक्षियों का कलरव। कितना अच्छा लग रहा है। इस कलरव में कितना अपनापन है। कितनी मिठास है...." कहते-कहते रुक गया मोहित और एक गहरी श्वॉस ली।

दिव्या बोली- ''ये क्या पहेलियाँ बुझा रहे हो, इन पेड़ों, पक्षियों को क्या पहली बार देखा है? इस गार्डन में रोजाना बैठते हैं। आज क्या खास बात है?''

''वह जीवन कितना आनन्ददायक होता है, जहाँ एकांत हो, पक्षियों का कलरव हो, नदी का किनारा हो, ढ़लती हुई शाम हो, पूनम की रात का आगमन हो और...''

बीच में टोकती हुई दिव्या बोली, ''अरे ओ शायर, कहाँ कल्पना लोक में खो गये? जरा हकीकत में तो आओ, धरातल पर उतरो कहाँ आसमान में विचरण कर रहे हो?''

''दिव्या बात ही कुछ ऐसी है जो मुझे कल्पना लोक में ले जा रही है।'' गहरी श्वॉस खींचते हुए मोहित बोला।

''ऐसी क्या बात है मोहित?''

''दिव्या मैं तुमसे बेइन्तहाँ मोहब्बत करता हूँ और तुमसे शादी करना चाहता हूँ।''

''अरे ओ मजनूँ की औलाद, इतनी सी बात कहने में चार साल लगा दिये। मैं भी तुमसे बेहद प्यार करती हूँ लेकिन ये सब मैं तेरे मुँह से सुनना चाहती थी कि हिम्मत है या नहीं'' दिव्या ने भी अपने दिल की बात कह दी।

''वैसे तो काफी दिनों से कोशिश कर रहा हूँ इस बात को कहने के लिए लेकिन सफलता आज प्राप्त हुई है। रोजाना सुबह भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे हिम्मत दो इतनी बात कहने के लिए।'' हकीकत कुछ इस तरह व्यक्त की मोहित ने। ''दो चाहने वालों की चाहत जरूर पूरी होगी।'' दिव्या बोली दृढ़ता के साथ इसे जोड़ते हुए- ''मेरे हृदय में भी जाने कब से तुम्हारे प्यार के फूल खिल रहे हैं और उसकी खुशबू से सुवासित हो रही हूँ।''

मोहित बोला- ''हम दोनों को लगभग डिग्री मिलने वाली है। कैम्पस सलेक्शन भी हम दोनों का हो चुका है। मुझे लगता है ऊपर वाला बहुत सोच समझकर ही हम दोनों को मिलाना चाहता है। अब हम दोनों अपने पैरों खड़े हो गये हैं तो अपने माँ-बाप को शादी के लिए मनाना कोई बड़ी बात नहीं होनी चाहिए।'

दिव्या ने कहा- ''हमारे माँ बाप भी हमारी खुशी चाहते हैं। हमारे दोनों परिवारों की स्थिति लगभग एक जैसी ही है, हम दोनों समान जाति के ही हैं, ऐसे में परिवार वाले को भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

''मुझे लगता अब समय काफी हो गया है हमें घर चलना चाहिए'' मोहित ने कहा।

दोनों उठते हैं एक दूसरे के गले लगते हैं और अपने पहले प्यार का इजहार करते हैं और अपने-अपने अधरों से अपने पहले प्यार का अंकन भी कर देते हैं। कुछ समय के लिए भूल जाते हैं किन्तु कुछ ही क्षणों में अलग होते हैं और एक-दूसरे का हाथ में हाथ लेकर चल देते हैं अपने-अपने घरों की ओर उसी मीठे अंकन की यादों को लेकर।

❑

पूरे गाँव से विदाई लेकर टैम्पों में सवार हो लिया गाजियाबाद रेलवे स्टेशन के लिए जहाँ से ट्रेन पकड़नी थी। उसी टेम्पो में सवार उसके पिता के मित्र शिवलाल गुप्ता बैठे थे। मोहित ने नमस्कार किया।

शिवलाल ने पूछा 'बेटा बैग लेकर कहाँ प्रस्थान की योजना है?'

''अंकल मेरी जॉब लग गयी है मैं कोलकाता जा रहा हूँ। गाजियाबाद रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़नी है।''

''तुम्हें वहाँ कब ज्वॉइन करना है'' गुप्ता जी ने पूछा।

''अंकल अभी चार-पाँच दिन का समय है।''

''तो इतने पहले से क्यों जा रहे हो?''

''बस जगह वगैरह देख भाल लूँगा और कमरा भी ढूँढ़ना है। इसलिए पहले जा रहा हूँ।'' मोहित ने बड़े भोलेपन से कहा।

''तो एक काम करो बेटा''

''क्या अंकल?''

तुम ट्रेन से क्यों जा रहे हो तुम तो जानते हो मेरी ट्रान्सपोर्ट कम्पनी है रोजाना एक दो ट्रक कलकत्ता जाते ही है आज ही दो ट्रक जा रहे हैं, लोड हो चुके होंगे। मैं तुम्हें उसमें बैठाल दूँगा अपना ड्राइवर सही सलामत पहुँचा देगा और तुम्हें कमरा भी अच्छी जगह जान पहचान में दिलवा देगा तुम्हारी नई-नई नौकरी है वहाँ जान-पहचान भी नहीं होगी ऐसे में कमरा ढूँढ़ना मुश्किल होता है अपरिचित व्यक्ति के लिए।''

सँकुचाते हुए मोहित बोला ''टाइम बहुत लगेगा।'' सीधे मना नहीं किया।

गुप्ता जी बोले, ''बेटा जब तुम्हें कमरा एक दिन में ही हमारा ड्राइवर दिलवा देगा फिर वहाँ पहुँचकर खर्चा-पानी भी करना पड़ेगा यहाँ कुछ बच जायेगा वो तुम्हारे काम आयेगा। यह यात्रा मेरी तरफ से गिफ्ट समझो। जैसे मेरे लिए मेरा अनुज वैसे तुम। मेरी गिफ्ट स्वीकार करोगे तो मुझे अच्छा लगेगा।''

मोहित बोला - ''नहीं अंकल ऐसी कोई बात नहीं है'' गुप्ता जी जान बूझकर मोहित की सहायता करना चाहते थे क्योंकि मोहित की आर्थिक स्थिति से भली भाँति परिचित थे, उसकी शंका को भाँपते हुए कहा ''ये तुम मत सोचना कि तुम लेट हो जाओगे। निश्चिंत होकर जाओ मेरी गाड़ियाँ कभी लेट नहीं होती और हाँ मैं तुम्हारे पिताजी को सूचित कर दूँगा कि मैंने तुम्हें सुरक्षित भेज दिया है। फिर ये तो तुम जानते ही हो कि यात्रा में यदि कोई परिचित हो तो ठीक रहता है।

''अच्छा ठीक है अंकल आप मेरे भले के लिए ही कह रहे हो।'

बीच में घर परिवार की बात होती रही तब तक ट्रान्सपोर्ट कम्पनी पहुँच चुके थे वे दोनों।

सायंकाल को ट्रक तैयार हो गया। ट्रक ड्राइवर कंडक्टर और मोहित तीनों सवार हो गये। मोहित के अरमानों को पंख लगे हुए थे। ट्रक चलने लगा। उसके मन में तरह-तरह के हसीन सपने कुलाँचे मारने लगे। बात तो केवल छः महीनों की है; उसके बाद दिव्या उसकी होगी और वह दिव्या का। यही सोचते-सोचते कब उसकी आँख लग गयी उसे पता नहीं चला। रात भर सोता रहा उसी ट्रक में। ड्राइवर अपनी मस्ती में झूमता गाता हुआ चलाता जा रहा था चल मेरी गाड़ी कलकत्ता चल मेरी....।

प्रातः काल को आँख खुली तो पाया कानपुर से आगे निकल चुका है। रात भर गाड़ी चलाने से ड्राइवर भी थक चुका था। सुबह किसी ढ़ाबे पर लगा दिया फ्रेश होने के लिए। मोहित भी फ्रेश हुआ वहीं नहाया धोया। सभी ने नाश्ता वगैरह भी किया। ड्राइवर ने मोहित को भुगतान नहीं करने दिया कहा कि तुम कलकत्ता तक मेरे मेहमान हो। नाश्ता करने के उपरान्त वहीं पड़ी चारपाई पर लेट गये तीनों आराम करने के लिए। कुछ घण्टे आराम करने के उपरान्त फिल चल देना यही क्रम तीन दिन तक चला। तीसरे दिन जब लगा कि कलकत्ता केवल डेढ़ सौ किमी. रह गया है तो सोचने लगा कि आज रात इसी छोटे कस्बे के एक ढ़ाबे पर विश्राम किया जाये और दो तीन दिन की थकान को दूर किया जाये। अब मोहित को विश्वास हो गया था कि कोलकाता समय से पहुँच जायेगा इसीलिए वह भी जल्दबाजी में नहीं था। फिर ड्राइवर से घुल-मिल चुका था। अतः आराम कर लेना ही सभी के अच्छा विकल्प था।

शाम को नहाने धोने के उपरान्त खाना खाने बैठ गये तीनों लोग। ट्रक ड्राइवर ने संकेतों में आर्डर दे दिया एक बोतल लाने के लिए 'जब सामने बोतल आ गयी दोनों जम गये। मोहित को अपने पास बुलाने का संकेत करते हुए ''आ मेरे दोस्त दो-दो घूँट हो जायें।''

मोहित ने हाथ जोड़कर आग्रह किया... ''नहीं ये सब मैं नहीं लेता मुझे क्षमा करें इसमें मैं आपका साथ नहीं दे सकता।'' उन दोनों ने कोई जोर जबरदस्ती नहीं की और अपने दोनों जमे रहे। जब अंगूर की बेटी का नशा छाने लगा तो ड्राइवर ने इशारे

से ढ़ाबे मालिक से कहा, ''माल कहाँ है?'' ढ़ाबे मालिक ने अन्दर कमरे की तरफ इशारा करते हुए कहा कि माल इकदम झक्कास है जिंदगी भर नहीं भूलोगे।'' ड्राइवर ने कहा, ''मुँह-माँगी रकम देंगे यदि इस माल ने हमें खुश कर दिया।''

ढ़ाबा मालिक बोला, ''शिकायत का कोई मौका नहीं मिलेगा एकदम न्यू ब्रांड है पहली बार सेवा का अवसर है।''

मोहित की समझ से परे थी ये संकेती भाषा और ज्यादा गौर भी नहीं किया उसे मतलब भी नहीं था। उसने सुन रखा था ड्राइवर तो पीते खाते हैं कुछ जुआ वगैर भी खेलते है यह कोई नई बात नहीं है।

ड्राइवर और कंडक्टर दोनों अन्दर चले गये। कमरे में अजीब सी खुशबू महकती हुई मदहोश बनाने के लिए काफी थी। हल्की-हल्की लाइट जल रही थी कोने में पड़े बेड पर एक षोड़सी बाला अपने यौवन में उन्मत्त चहल कदमी कर रही थी। जैसे ही ड्राइवर कंडक्टर अन्दर घुसे उस बाला ने अन्दर से गेट बन्द कर लिया और दोनों बाँहे ड्राइवर के गले में डालकर बोली- ''जानम आज की रात तुम्हारे नाम करती हूँ।'' ड्राइवर बड़बड़ाता हुआ उसके अधरों पर उंगुली फेरता हुआ बोला,'' आज पहली बार सौ टका खरा माल मिला है।''

कंडक्टर ने भी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा सही कहा उस्ताद और बाला के पीछे से उसकी पीठ को सहलाया और मदहोश हो गया।

अंगूर की बेटी इतनी चढ़ चुकी थी कि ज्यादा होश ही नहीं रहा दस पाँच मिनट मनोरंजन करने पर ही दोनों नशे में धुत होकर गिर पड़े बस यही बोलते हुए माल बहुत अच्छा है।''

लेकिन उस बाला के शरीर से आग निकल रही थी एक शोला धधक रहा था। उस ज्वाला को प्रदीप्त तो कर दिया था दोनों ने लेकिन शान्त नहीं कर पाये थे उससे पहले ही ढ़ेर हो गये थे। बाला भूखे शेर के समान बौखला रही थी उन दोनों को नौंच लिया। कहते हैं खिसियानी बिल्ली खम्भा नौचे, यह अक्सर सुना जाता है कि जब शेर भूखा होता है जब त्यादा ही हिंसक हो जाता है यही हालात थी उस षोड़सी बाला की। उसे अपने शरीर की आग का शान्त करने लिए शिकार चाहिए था। अचानक उसके मन में एक विचार आया कि इन दोनों के साथ एक नयी उम्र का लड़का भी आया है। वह अन्दर नहीं आया चलो उसे ही अपना शिकार बनाया जाये। अपने कपड़े सँभालते हुए बाहर आयी तो देखा वह चारपाई पर पड़ा सो रहा है। धीरे से आवाज लगायी 'ऐ बाबू सो गये क्या?'

जब कोई उत्तर नहीं मिला तो उसका कंधा पकड़कर हिलाया 'ऐ बाबू सो गये क्या?' मोहित पर कोई असर नहीं हुआ। उसने मोहित का जोर से हिलाया 'ऐ बाबू सो रहे हो उठते क्यों नहीं?'

अचानक उसकी आँख खुली तो देखा उसके सामने एक लड़की शृंगार किये हुए खड़ी है। उसके रौंगटे खड़े हो गये यह कौन सा बवाल है। फिर भी हिम्मत करके बोला, ''क्या बात है, मुझे क्यों जगा रही हो?''

''यहाँ क्यों सोते हो? यहाँ मच्छर ज्यादा है चलो अन्दर चलकर सो जाओ।''

उसके कुछ शक हुआ। इस तरह अनजान शहर में यह खूबसूरत बाला, कहीं कुछ उल्टा सीधा न कर दे कहीं लूट न ले तो कहीं के नहीं रहेंगे'' इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए देखा आस-पास कोई नहीं था फिर भी हिम्मत करके बोला- ''नहीं-नहीं मैं यहीं ठीक हूँ।''

दो-तीन बार प्रयास किया किन्तु मोहित नहीं माना तो उसने अन्तिम चाल चली ''मैं इस ढ़ाबे की मालकिन हूँ अन्दर तुम्हारे साथी तुम्हें बुला रहें हैं कि यहीं आकर सो जाओ।''

साथी बुला रहे हैं सुनकर विश्वास हुआ तो बालो, ''चलो हम आते हैं।''

मोहित को इस प्रकार के वातावरण से कभी पाला नहीं पड़ा था। भोला था चल दिया अन्दर कमरे की ओर। वह बाला अन्दर पहुँचकर गेट के पास सटकर खड़ी हो गयी जैसे ही मोहित ने अन्दर कदम रखा उसने पीछे से चुपचाप कुण्डी लगा दी। हल्की मन्दिम लाइट में देखा कि उसके दोनों साथी उल्टे-सीधे नशे में धुत पड़े हुए हैं, उसने बाला की तरफ मुड़कर कहा, ''ये तो धुत पड़े हुए हैं, तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला कि ये बुला रहे हैं।''

''नहीं बाबू हमने झूठ नहीं बोला, इन्होंने मुझे भूखा छोड़ दिया है मेरा बदन बुरी तरह जल रहा है इस शरीर की आग को शान्त कर दो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।''

''क्या बकवास करती हो? चलो हटो मुझे बाहर जाने दो।''

कहकर चलने ही वाला था मोहित तब तक उस बाला ने हाथ पकड़ लिया और अपनी ओर जोर खींचकर सीने से लगा लिया।

''देखते क्या हो बाबू आओ खेलो मेरी जवानी से, मेरा शरीर तड़प रहा है।''

''क्या बकवास करती हो? तुम्हें शरम नहीं आती है। एक महिला होकर ऐसी बात करती हो। मैं भले घर का हूँ मेरे रास्ते से हट जाओ, जैसा तुम समझ रही हो वैसा मैं नहीं हूँ।''

''वो तो मैं जानती हूँ, रही बात महिला होने की तो मेरा ये धन्धा है अपना पेट पालती हूँ तुम लोगों की सेवा करती हूँ आज ये दोनो ढ़ेर हो गये नहीं तो मैं तुम्हें परेशान नहीं करती।'

''ये तुम जान चुकी हो कि मैं ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ फिर मेरे पीछे क्यों पड़ी है, मुझे बाहर जाने दो।''

''अरे इतने भी अनाड़ी मत बनो मेरे प्रीतम''

''कैसी बातें करती हो, तुम्हें शरम नहीं आती।''

''कैसी शरम कैसी हया, धन्धे में शरम नहीं होती।'' फिर खींचा अपनी तरफ

पीछे हटते हुए ''लेकिन मैं सौदगार नहीं हूँ मेरे पास पैसा नहीं है फिर मेरे साथ जबरदस्ती क्यों?''

''ऐ बाबू मुझे तुमसे पैसा नहीं चाहिए। पैसा तो इन दोनों ने दे दिया है आज की पूरी रात का लेकिन दोनों बीच में ही गिर पड़े और मुझे छोड़ दिया बिना तृप्त किये हुए।''

मोहित सरोष बोला, ''मुझसे तृप्ति की आशा मत रखो जाओ अपना काम देखो।'' इतना कहकर चल दिया बाहर की ओर।

इस बार उस बाला ने उसे जोर से खींचा दोनों बिस्तर पर जाकर गिर पड़े इतनी देर में उसने अपने ऊपरी वस्त्र उतार दिये केवल अन्तः वस्त्र ही रह गये थे। उसके शरीर पर उसके उरोज उसकी छाती से छू गये। एक बार तो मोहित सिहर गया फिर भी अपने को काबू में करते हुए उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर बोला मुझे जाने दो। मुझे परेशान मत करो।''

वह बाला बोली- ''अब परेशान तो तुम मुझे कर रहे हो सीधे कहे देती हूँ चुपचाप मेरे शरीर के साथ खेलो नहीं तो...।''

''नहीं तो क्या करोगी?'' मोहित बोला।

''नहीं तो मैं क्या करूँगी, तेरा जीवन बरबाद कर दूँगी, अभी जोर से चिल्लाती हूँ बाहर सड़क पर पुलिस की जीप घूमती रहती है तुझे बलात्कार के केश में बन्द करा दूँगी। इसलिए कहती हूँ चुपचाप मेरी बाँहों में आ जाओ। समय बरबाद मत करो इसी में तुम्हारी भलाई है।''

मोहित एकदम काँप गया बिना कुछ किये बलात्कार के केस में अन्दर, नौकरी भी गयी, सारे सपने चकनाचूर। अब बेचारा मरता क्या न करता, बोला- ''तुम्हारी जैसी मर्जी'' और कोसने लगा मैं ट्रक से आया ही क्यों? लेकिन मन में इतना जरुर सोच लिया कि यहाँ से सुरक्षित निकलने का और कोई मार्ग नहीं है अब जो होगा वो होगा फिर यहाँ की घटना को कौन जान पायेगा? मैं भी समझ लूँगा कि यह एक मानसूनी बुलबुला था जो कभी आया और अचानक फूट गया।

वह बाला निर्वस्त्र होकर टूट पड़ी भूखे भेड़िये की तरह उसको अपनी बाँहों में ले लिया और एकाकार हो गये। पन्द्रह बीस मिनट खेलती रही मोहित के यौवन से।

आज भरपूर तृप्ति मिली थी उसे। उसने मोहित का धन्यवाद किया और कहा जाओ आज के बाद भूल जाना कि तुम मुझे कहीं मिले थे। मोहित ने भी ऐसा ही सोच लिया था लेकिन अपराध बोध से ग्रसित हो गया था। अपने मन को समझाकर बाहर निकल आया। चारपाई पर पड़ा सोचता रहा। लेकिन अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गयी खेत। यही सोचते-सोचते नींद के आगोश में आ गया।

उन दोनों का सुबह नशा उतरा तो बाहर आकर मोहित को जगाया और तैयार होकर निकल पड़े कलकत्ता की ओर।

मोहित के मन में अपराध बोध था। अन्दर ही अन्दर घुट रहा था। किसी से कुछ कह भी नहीं सकता था। एक ऐसा भय था जो अदृश्य था। सदृश्य भय से तो बचा जा सकता है लेकिन अदृश्य भय अधिक भयंकर होता है। मन में ऊहा-पोह की स्थिति थी लेकिन अजीब। पिछली रात का अजीब सा एहसास देह में सिहरन भी पैदा कर रहा था। कभी-कभी पहले अनुभव इतने मधुर बन जाते हैं और कभी-कभी इतने कटु जिन्हें व्यक्ति ताउम्र नहीं भूल पाता है। इन्हीं दोनों विचित्र स्थितियों के मध्य में खोया मोहित गुमसुम ट्रक में बैठा चला जा रहा था और कोस रहा था अपने आपको।

इन्हीं विचारों का क्रम तोड़ा ट्रक ड्राइवर ने इन शब्दों के साथ- ''क्या बात है बच्चू! कैसे गुमसुम दिखाई दे रहे हो? क्या रात भर सो नहीं पाये?''

वे दोनों नशे में इतने धुत थे रात को कि मोहित साथ घटित घटना की जानकारी भी नहीं है ऐसा महसूस हुआ उसे। अचानक विचारों का पुंज थम गया और बोला -

''भाई बस यों ही। यहाँ पहली बार आया हूँ इसीलिए।''

''अरे कोई बात नहीं बच्चू! बताओ तुम्हें कलकत्ते में कहाँ जाना है। मैं तुम्हारी पहुँचाने में मदद करूँगा। इस शहर के हर गली मोहल्ले से परिचित हूँ। पिछले पन्द्रह साल से यहाँ आ रहा हूँ, डरो मत।''

हिचकिचाते स्वर में - ''नहीं... नहीं... भाई ऐसी कोई बात नहीं है पूछ-पूछ कर पहुँच ही जाऊँगा। कल ही तो पहुँचना है। आज रात को किसी धर्मशाला में विश्राम कर लूँगा।''

अरे किसी धर्मशला में विश्राम क्यों? जब तुम हमारे साथ हो तो तुम्हें किसी बात की चिन्ता क्यों है? जहाँ मैं रहूँगा वहीं ठहरना और प्रातः होते ही चले जाना।''

मोहित उनके साथ रूकने को बिल्कुल तैयार नहीं था क्योंकि पिछली रात की घटना भूलने योग्य नहीं थी। उस घटना को सोचकर सिहर गया। वास्तव में इन्सान वही होता है जो गिरकर फिर खड़ा हो जाये। या यो कहें सुबह का भूला यदि शाम को वापस आ जाये तो उसे भूला नहीं कहते और फिर अनजाने में कोई गलती हो भी जाये तो उसे गलती नहीं कहते। कीचड़ में मोहित का पैर भले ही सना हो वह उसकी

मजबूरी थी लेकिन जान-बूझकर मक्खी नहीं निगलना चाहता था। इसीलिए हाथ जोड़कर विनम्र अनुरोध करते हुए ड्राइवर से बोला -

''हमें कलकत्ता तक पहुँचाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आज का यह साथ इस जीवन में तो कभी नहीं भूल सकता।''

''मोहित की बात में व्यंग्योक्ति भी थी और सच की स्वीकरोक्ति भी।

शाम को लगभग चार बजे आख़िर कलकत्ता में प्रवेश कर लिया नियत स्थान (ट्रांसपोर्ट) पर जाकर ट्रक रुक गया। अब मोहित एक मिनट की भी देरी नहीं करना चाहता था। अतः उन दोनों से विदा लेकर या यो कहें उनसे पीछा छुड़ाकर ऐसे भागा जैसे पिंजड़े से पक्षी भागता है। जब उसका पिंजड़ा खुला रह जाता है तो वहाँ से उन्मुक्त गगन में फुर्र हो जाता है।

मोहित आज ही वह जगह देखकर निश्चिंत होना चाहता था जहाँ उसे सुबह ज्वॉइन करना था ताकि कल उसे ड्यूटी पर पहुँचने में देरी न हो।

ऑटो रिक्शा में बैठकर कुछ दूर पैदल चलकर आख़िर सायं सात बजे अपने ऑफिस को देख लिया। अब सोचने लगा कि पास में ही धर्मशाला आदि देख ली जाये। पास में स्थित दुकान पर जाकर पूछा, 'यहाँ ठहरने के लिए कोई धर्मशाला मिल सकती है।''

दुकानदार ने उसकी सहायता करते हुए उसे उचित जगह का पता दे दिया। धर्मशाला में पहुँचकर अपना सामान रख दिया। अब सोचने लगा कि घर वालों को और अपनी दिव्या को यहाँ पहुँचने की खबर दिये देता हूँ। खबर देने के लिए बाहर स्थिति एस.टी.डी. बूथ पर गया वहाँ से अपने पड़ोस में रहने वाले ताऊ के मोबाइल से माता पिता से बात की और सकुशल पहुँचने की सूचना भी दी। साथ ही दिव्या के मोबाइल पर भी बात करने का सुयश नहीं भूला। दिव्या ने पूछा, ''अरे मोहित कैसी रही यात्रा कोई दिक्कत तो नहीं।''

''नहीं-नहीं कोई दिक्कत नहीं हुई।'' कल की घटना उसके दिमाग में बार-बार कौंध रही थी। इसीलिए अपने आप को सँभालते हुए, ''रास्ते में थोड़ी बहुत दिक्कत तो होती ही है फिर मंजिल पर पहुँचने वालो के लिए ये छोटी-मोटी दिक्कतें कभी कदम नहीं रोक सकती और मेरी मंजिल तो तुम हो दिव्या।''

''अरे भावना में मत मत बहो मेरे मजनूँ। मन लगाकर ड्यूटी करना। छः महीने बहुत ज्यादा नहीं होते यूँ ही कट जायेंगे और हाँ अरे ये तो छः महीने हैं मैं तुम्हारा छः साल क्या छः जिन्दगी तक इन्तजार करूँगी।''

तुम्हारी यही बातें तो मुझे सम्बल देती हैं। इसी भरोसे तो मैं यहाँ तक आया हूँ कि कल का खुला आकाश जिसमें हमारे पंखों से उड़ानें होगी। तुम चिंता मत करो। दिव्या ये मोहित तुम्हें कभी नहीं भूल सकता चाहे सात समन्दर पार क्यों न चला जाये,

''चलो ठीक है शायर महोदय, ना जाने किस कल्पना लोक में खो जाते हो? अब फोन रखो ज्यादा बिल मत बढ़ाओ।''

''अच्छा ठीक है तुम कहती हो तो रखता हूँ पर मन करता है तुमसे हमेशा बात करता रहूँ।''

अच्छा बाय अपना ध्यान रखना इतना कहकर फोन रख दिया।

धर्मशाला वापिस चलने लगा, तभी रास्ते में लगी ठेली से कुछ खा पी लिया। धर्मशाला में अपने कमरे में सोने की कोशिश कर रहा था लेकिन नींद कोसों दूर थी। एक तरफ निर्मल काया की धनी दिव्या थी जो उसकी जिंदगी थी उसके साथ कभी वादा खिलाफी या गद्दारी नहीं कर सकता था तो दूसरी तरफ वह एक रात आयी मुसीबत जिसने उसका धर्म नष्ट कर दिया था, लेकिन बार-बार यही सोचने लगा वह एक जलजला था जो कभी आया और विनाश कर चला गया। अब सामने उम्मीद का पूरा आकाश होगा, नई नौकरी होगी, नया विश्वास होगा, नयी ऊर्जा होगी, नया विकास होगा। इन्हीं विचारों में कब आँख लग गयी उसे पता हीं नही चला। सुबह को धर्मशाला में स्थिति मंदिर की घण्टी बजी तो अचानक जग गया। घड़ी में देखा तो पाँच बज चुके थे। उठकर दैनिक क्रिया कलाप से निवृत्त होकर स्नान ध्यान किया और तैयार होकर अपने कार्यालय के लिए चल दिया। समय से पहुँच गया और वहाँ जाकर अपनी नौकरी को ज्वॉइन करने की सारी औपचारिकताएँ पूरी की। नये-नये मित्रों से परिचय हुआ जिन्होंने उसके लिए कमरा ढूँढ़ने में मदद की।

एक सप्ताह में पूरी तरह से व्यवस्थित हो चुका था। उसकी दिनचर्या सुबह ऑफिस जाना, सायं वापस आना और रात को अपनी प्राण-प्रिया से बातें करना और रंगीन सपनों में सो जाना जीवन का हिस्सा बन गया था। इसी दिनचर्या के मध्य कब तीन महीने बीत गये पता ही नहीं चला।

❑

तीन महीने बीत चुके थे अपनी-अपनी नौकरी में व्यस्त रहते हुए। लेकिन इतना समय मोहित एवं दिव्या के लिए काफी हो चुका था एक-दूसरे से अलग रहते हुए। दो दिल और एक जान थे वे दोनों। यों तो मोबाइल पर रोजना बातें होती रहती थीं लेकिन एक-दूसरे को देखे बिना रहना मुश्किल हो गया था परन्तु कर भी क्या सकते थे? नौकरी के बंधन थे और ये ऐसे बंधन जो किसी और ने नहीं बल्कि उनके स्वयं के कैरियर ने डाले थे। कम्पनी की नौकरी में पैकेज अच्छा था। लेकिन सुबह से शाम तक, काम की थकान तोड़कर रख देती थी और रात को दोनों की तन्हाइयां बेचैन करने के लिए काफी थी। यद्यपि दिव्या तो अपने परिवार में रहती थी मन भी लग जाता

था फिर भी रह-रहकर मोहित से मिलने की हूक उसके दिल में सताती रहती थी; विरहणी मिलने को आतुर थी।

जब जिज्ञासा बढ़ जाती है, प्यास चरम पर पहुँच जाती है जब सुखदायी भविष्य भी बहुत निकट आने लगता है। मंजिल पर पहुँचने के लिए संघर्ष तो करना ही पड़ता है। चाहे मानसिक हो या शारीरिक यहाँ तो मामला दिल का था। पीड़ा अपने यौवन पर थी। एक ऐसा दर्द जो बताया नहीं जा सकता था केवल एहसास ही किया जा सकता था। परन्तु कर भी क्या सकती थी।

यही सब उथल-पुथल मन में चल रही थी कि आख़िर कितना और इन्तजार करना पड़ेगा मोहित से मिलने के लिए। आज वही स्थिति थी जैसे पपीहा स्वाति नक्षत्र के लिए वर्ष पर्यन्त प्रतीक्षा करता है। यहाँ छः महीनों की प्रतीक्षा थी। इन्तजार भी बड़ी चीज है जो हर कोई नहीं कर पाता अधीर हो जाता है और जो कर पाता है वही स्वाति नक्षत्र की बूँद प्राप्त कर पाता है। ऐसा सोचते-सोचते ऑफिस पहुँच गयी दिव्या। मन में प्रसन्नता इस बात की थी कि मम्मी पापा ने इस रिश्ते के लिए हाँ कर दी थी और मोहित के पापा ने भी हाँ कह दिया था। एक तरफ खुशियाँ थी तो दूसरी तरफ छः महीने अलग रहने का दर्द।

ऑफिस में अपनी केबिन में पहुँच ही पायी थी कि अचानक डायरेक्टर की काल आयी- ''दिव्या मेरे केबिन में आओ'' दिव्या ने दरवाजा खोलते हुए कहा, ''मे आई कम इन सर!''

''यस कम इन, यस कम इन' कहते हुए डायरेक्टर ने अपने सामने पड़ी कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''आइये बैठिये''

दिव्या के मन में घबराहट हो रही थी कि आज अचानक क्यों केबिन में बुलाया। वैसे तो नोट लिखकर पहुँचा दिया करते थे। आज अचानक क्या बात हो गयी तभी डायरेक्टर ने कहा - ''कहाँ खो गयी दिव्या जी, क्या बात है इतनी नर्वस क्यों हो रही हो?''

''नहीं-नहीं'' रुमाल से अपना चेहरा पौंछते हुए दिव्या बोली।

''रिलैक्स, दिव्या जी''

''इट्स ओके सर, हाँ सर क्यों बुलाया आपने?''

डायरेक्टर ने दिव्या की तरफ एक लिफाफा बढ़ाते हुए कहा, ''आप तो जानती ही हैं दिव्या जी हमारी कम्पनी की एक यूनिट कोलकाता में भी है। वहाँ आपके डिपार्टमेण्ट से सम्बंधित एक जरूरी सेमीनार है, जहाँ देश एवं विदेश में हमारी कम्पनी के आपके डिपार्टमेण्ट से संबंधित कर्मचारीगण प्रतिभाग करेंगे। यह तीन दिवसीय

सेमीनार ट्रेनिंग का पार्ट है।' इस लिफाफे में समीनार में भाग लेने का लेटर एवं एअर इण्डिया फ्लाइट के आने जाने की टिकटें हैं।''

दिव्या का चेहरा देखते हुए डायरेक्टर बोला ''हाँ इस शहर में आप अजनबी जरूर होगीं लेकिन वहाँ कम्पनी के वर्कर होंगे। रहने खाने की पूरी सुविधा है। किसी प्रकार के डरने की कोई बात नहीं है। फिर भी यदि कोई समस्या हो तो यहाँ फोन कर लीजिए।''

''नहीं-नहीं सर ऐसी कोई बात नहीं। यह तो मेले लिए सौभाग्य की बात है कि वहाँ जाकर हमें कुछ सीखने को मिलेगा, हमारा ही विकास होगा।''

''अच्छा अब आप जा सकती है। आज मिड-डे के बाद आप जा सकती है अपनी तैयारी के लिए। कल सुबह आपको फ्लाइट पकड़ने के लिए गाड़ी छोड़ देगी। यदि कोई समस्या हो तो बेझिझक बताओ।''

''नहीं-नहीं सर ऐसी कोई बात नहीं।'' कहते हुए केबिन से बाहर आयी दिव्या खुशी के कारण मनमें लड्डू फूट रहे थे। ऊपर वाले ने शायद सुन लिया था तभी मन की मुराद पूरी होने जा रही थी। छः महीनों का वनवास खत्म अब तीन महीनों में ही मिलन सम्भव हो गया था मोहित से।

मिड-डे के बाद घर आकर अपने मम्मी पापा को सब विस्तार से बताया। वहाँ रहने रूकने की सभी व्यवस्था है। घबराने की कोई बात नहीं फिर मोहित भी वहाँ है कोई दिक्कत नहीं होगी।

मम्मी पापा ने सहमति प्रकट कर दी। रात को फोन पर मोहित को अपने आने की सूचना दे दी। सुबह जल्दी से तैयार होकर एअरपोर्ट पहुँची। फ्लाइट ने निश्चित समय पर उड़ान भरी।

दिव्या के मन में अचानक एक ऐसा प्रश्न आया जिसका जवाब किसी के पास नहीं था केवल मोहित के पास था। प्रश्न ही ऐसा था, जिसे बताया नहीं जा सकता था, पूछा नहीं जा सकता था। मौखिक या लिखित सिद्ध नहीं किया जा सकता था, मन का भ्रम भी नहीं था। पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टि से सौ टका खरा था, जिसका उसके जीवन से सीधा सम्बन्ध था। एक दो दिन का नहीं बल्कि पूरी जिन्दगी के लिए जुड़ा था। जिन्दगी के रिश्ते केवल भावनात्मक रूप से नहीं चलते कुछ तथ्यपरक उत्तर भी चाहिए होते है जीने के लिए।

यद्यपि मोहित से वह मन एवं दिल से पूरी तरह उसकी हो चुकी थी। दिव्या के माँ बाप की भी स्वीकृति भी मिल चुकी थी। लेकिन सारे काम मन मिलने या दिल लग जाने से नहीं चला करते। भूख लगने पर केवल रोटी देख लेने भर का काम नहीं चलता है। प्यास लगने पर केवल गिलास में रखा पानी प्यास नहीं मिटा सकता। केवल बादलों से फसल का भला नहीं होता पानी की बरसात तो होनी ही चाहिए। प्रश्न का

जवाब नैतिक नहीं था लेकिन भविष्य को नैतिकता के आधार पर अंधेरे में नहीं धकेला जा सकता। वास्तविकता जानने के लिए कभी ऊँच-नीच भी चलना पड़ता है।

ये सारे प्रश्न गौड़ हो चले थे दिव्या के लिए मुख्य था तो ये कि मोहित उसे जीवन में शारीरिक सुख दे भी पायेगा या नहीं। यह एक ऐसा प्रश्न था जिसके उत्तर के लिए हद से गुजरना ही पड़ेगा।

मर्यादा भी लाँघनी पड़ेगी। लेकिन दिव्या ने अपने मन को पक्का कर लिया था। इस प्रश्न के उत्तर को प्राप्त करने के लिए फिर इन दोनों के बीच की सहमति को भला तीसरा कौन जानेगा। यदि प्रश्न का उत्तर सही मिला तो जीवन की सम्भावनाओं को पंख लग ही जायेंगे और शारीरिक, मानसिक, भौतिक तीनों प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी।

भौतिक साधन में दोनों कमेरे ही हैं, मानसिक सुख पहले से ही है और यदि शारीरिक सुख भी मिल जाये तो सोने पे सुहागा। इन्हीं विचार पुंजों में कोलकाता एअरपोर्ट आ गया। बाहर स्वागत के लिए मोहित खड़ा हुआ था। जिसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। मिलते ही दोनों ने गले मिलकर एक दूसरे का स्वागत किया। स्वागत तो अधरों से भी करना था लेकिन वहाँ कम्पनी के अन्य कर्मचारी भी मौजूद थे इसलिए लोक लज्जा ने उन्हें रोक लिया।

खुशियों के तूफान हिलोरें ले रहे थे। मन भी मचल रहे थे एक-दूसरे से मन की बात करने के लिए लेकिन अभी समय नहीं था, सीधे कम्पनी को रिपोर्ट करना था। गाड़ी में बैठकर दोनों कम्पनी पहुँचे। सेमिनार की नियमावली दिव्या को दे दी गयी। सभी के लिए होटल में ठहरने की व्यवस्था थी। सेमीनार का सायं को उद्घाटन था फिर रात्रि विश्राम एवं भोजन होटल में ही था अगले तीन दिनों के लिए। पूरा कार्यक्रम व्यस्त था। केवल रात्रि विश्राम के समय ही रात्रि दस बजे तक किसी भी परिचित से मिल जुल सकते थे ऐसा नियम था होटल का।

पहले दो दिनों तक दो तीन घण्टे तक बातचीत करते रहे। मन की बातें कहते रहे। जब तीसरा और आख़िरी दिन आया तो दिव्या के मन में वही प्रश्न कुलबुला उठा कि किस प्रकार मोहित की परीक्षा ली जाये।

सायं को सेमीनार समाप्त कर जल्दी होटल में आ गयी और मोहित को भी फोन कर दिया कि जल्दी होटल पहुँचो ढ़ेर सारी बातें करनी है क्योंकि कल दिल्ली के लिए निकलना है। आज जी भरकर तुमसे बातें करनी हैं।

मोहित भी बेचैन था अपनी प्राण-प्रिया से जी भरकर बातें करने के लिए। अपने कमरे से होता हुआ सीधा होटल पहुँचा और दिव्या के कमरे को नॉक किया।

दिव्या ने कमरा खोला मोहित अन्दर आया कमरा पुनः लॉक किया। दिव्या अप्सरा सी लग रही थी एक दम सजी-धजी।

आजकल के नवयुवक-नवयुवती हालचाल पूछने से पहले एक दूसरे का स्वागत ही अपने अधरों से करते हैं, दोनों ने कसकर एक दूसरे को बाँहों में कस लिया। अधरों का मिलन हुआ, दिलों के शोले भड़कने लगे।

मोहित कहने लगा ''जानेमन अब दूरी किस बात की, अब जब हम तीन महीने बाद परिणय सूत्र में बँधने वाले ही है तो क्यों न दूरियों को मिटाने का अभ्यास कर लिया जाये।''

''ऐसी भी जल्दी क्या है मेरे मीत अब तीन महीने भी नहीं रुका जाता।'' दिखावटी संकोच दिखाते हुए दिव्या बोली।''

''अब संकोच कैसा मेरी जान।''

''यह तन मन सब कुछ तुम्हारा है, लेकिन कुछ समय प्रतीक्षा करो। सब्र का फल मीठा होता है, यही कायदा भी कहता है।'' दिव्या ने कहा -

''हम कायदे में ही हैं मेरी जान'' जब हम दोनों ने एक दूसरे को पति-पत्नी मान लिया केवल रस्में ही बाकी है तो फिर दूरी किस बात की। अब तुमसे दूर एक मिनट भी नहीं रहा जाता।

दिव्या कोई विरोध नहीं कर रही थी, केवल बनावटी बातें कर रही थी। उसे तो मोहित के पुरूषत्व की परीक्षा लेनी थी, वह उसे जीवन में सुख दे भी पायेगा या नहीं?

इतना कहते-कहते वे एक दूसरे के शरीर पर हाथ फेरने लगे। धीरे-धीरे बिस्तर तक पहुँच गये। एक बार फिर दिव्या ने कहा- ''ये क्या कर रहे हो, लगता है सभी सीमाएं तोड़ दोगे?''

हाँ सीमाएं तो टूटनी ही है। जब तक सीमाएं रहेगी तब तक दो दिलों की दूरियाँ कैसे कम होगी। इतना कहते हुए उसने दिव्या के वक्षस्थल पर हाथ फेरना शुरू कर दिया। मन के तार झंकृत होने लगे। वस्त्र एक-एक कर अलग होते गये। ना-नुकुर भी चलती रही लेकिन प्रश्न के उत्तर को पाने की उत्कंठा भी बढ़ती गयी। अंततः एक समय वो आया, जब सारे तटबंध दूर गये और वे दोनों एक दूसरे में समा गये।

कुछ समय बाद आगोश ढ़ीला पड़ा दोनों तृप्त भाव से बेड पर काफी देर तक लेटे रहे। मन विह्वल हो गये। खुशी का पारावार हो गया।

दिव्या को उसके प्रश्न का उत्तर मिल चुका था। अगले दिन फ्लाइट पकड़कर दिल्ली वापस आ गयी।

❑

अक्सर सुना जाता है कि समय पंख लगाकर उड़ता है। लेकिन ये कहावत उनसे पूछो जो इन्तजार करते हैं अपने प्रिय से मिलने का। तब उनको एक मिनट एक घण्टा; एक घण्टा एक दिन और एक दिन महीनों के समान लगते है। समय की कीमत एक प्यासे से पूछो जो रेगिस्तान में हैं। पानी की उम्मीदें घण्टों दूर हैं। गला सूख जाता है, बेचैन हो जाता है प्राण हलक में आ जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु की धरती को इन्तजार सावन का होता है, उसे एक दिन एक वर्ष के बराबर लगता है।

ठीक यही स्थिति मोहित और दिव्या की थी। छः महीनों की ट्रेनिंग में तीन महीने इन्तजार में कट गये। लेकिन तीन महीनों में मध्यावकाश भी हो गया था। जहाँ सावन की घटायें भी बरस चुकी थी।

फिर भी उम्मीदों के तीन महीने। लेकिन यही सोचकर दिन कटने लगे कि मधुमास अब दूर नहीं है। जीवन के बगीचे में शीघ्र ही बसन्त आने वाला है। दोनों अपनी-अपनी नौकरी से खुश थे। भगवान ने पढ़ाई के तुरन्त बाद उन्हें अच्छी नौकरी दे दी थी। अब बस इन्तजार था तो केवल सामाजिक बंधन में बँधने का।

एक कहावत ये भी है कि सुख के दिन शीघ्र कट जाते है और विरह के दिन काटे नहीं कटते हैं। मोहित खुश था इसलिए कि अब केवल एक ही महीना शेष बचा है। वापिस लौटने का रिजर्वेशन भी करा चुका था। अब पहले जैसी स्थिति नहीं थी, जिसके कारण ट्रक से वापिस जाना पड़े।

आज मोहित सुबह नहा धोकर आफिस जा ही रहा था। उसे कुछ कमजोरी महसूस हुई। सोचा घर जाने की खुशी में आजकल खाना पीना ढ़ंग से नहीं चल रहा है, हो सकता है उसी से कमजोरी हो रही हो। ऑफिस पहुँचते पहुँचते थककर चूर हो गया, एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया। बुरी तरह हाँफ रहा था। धड़कने कुछ तेज चल रहीं थी। पसीना भी आ रहा था। शरीर कुछ गरम हो रहा था। उसके ऑफिस में काम करने वाले साथी पवन ने देखा, मोहित कुछ उदास है। पूछा - ''यार मोहित क्या हुआ, परेशान कैसा लग रहा है?''

''कुछ नहीं यार कुछ थकावट ज्यादा हो गयी है।''

''जल्दी-जल्दी कहीं दौड़कर तो नहीं आया?'' पवन ने सहानुभूति पूर्वक पूछा।

''नहीं यार।'' आवाज में कुछ भारीपन था।

पवन ने पास जाकर उसके सिर पर हाथ रखकर देखा तो उसका सिर गरम हो रहा था। पसीना भी आ रहा था।

पवन ने पूछा- ''यार तुझे तो बुखार है, चल किसी डॉक्टर को दिखाते हैं।''

नहीं-नहीं थोड़ी देर में ठीक हो जाऊँगा।

''यार शरमाता क्यों है मोहित? मैं तेरा दोस्त हूँ, चल मेरे साथ''

मोहित कुछ नहीं बोला, इस इतना की कहा, ''जैसा तू चाहे वैसा कर।''

पवन ने अपने सीनियर को सूचित किया और रिक्शा लेकर चल दिया डॉक्टर के पास मोहित को लेकर।

डॉक्टर ने चैकअप किया पहली बार बुखार था यही सोचकर दर्द, बुखार, कमजोरी की दवा दे दी और आराम करने के लिए कहा।

''सुन कोई दिक्कत हो तो फोन कर देना हम हमेशा तैयार है तेरे लिए। संकोच मत करना कल फिर दिखाना है दवा समय से ले लेना।'' पवन ने कहा।

''ओ के बाबा, पवन तेरा धन्यवाद कैसे प्रकट करूँ'' मोहित बोला।

''अपनों में धन्यवाद का कोई कॉलम नहीं होता है; ये तो हमारा फर्ज़ है था। अच्छा ठीक है, अब आराम कर मैं चलता हूँ।''

''ओ के बॉय'' मोहित बोला।

रात भर करवटें बदलते हुए बीता मोहित का बार-बार घर की और दिव्या की याद आ रही थी मन हुआ फोन करें। लेकिन रुक गया वे पूछेंगे कैसे हो? क्या बतायेंगे। यदि बता भी दिया तो वहाँ से वे कर क्या लेंगे? बिना मतलब परेशान ही होंगे। यही सोचकर फोन नहीं किया। यही सोचते-सोचते रात में कब आँख लग गयी पता ही नहीं चला। सुबह देर तक सोता रहा लगभग ६ बजे आँख खुली। शरीर में अकड़न एवं कमजोरी थी चला भी नहीं जा रहा था।

तभी पवन आ गया और गेट खोलते हुए।

''गुड मॉर्निंग मोहित! अब कैसे हो?''

''यार बुखार तो उतर गया है लेकिन कमजोरी है।''

''चल डॉक्टर के पास अभी जल्दी दिखाकर तुझे यहीं छोड़ जाऊँगा फिर मैं ऑफिस चला जाऊँगा।''

आज बिना किसी हिचकिचाहट के उसके साथ चला गया। डॉक्टर ने दवा दे दी और कहा जितना हो सकता है आराम करो। ये मौसमी बुखार है जल्दी ही स्वस्थ हो जाओगे।

मोहित सोचने लगा अब एक दो दिन में ठीक हो ही जाऊँगा। अब क्योंकि घर जाने का समय आ गया है। जल्दी से ठीक हो जाऊँ नहीं तो घर वाले देखकर परेशान होंगे। खैर इसी बीच घर पर माताजी पिताजी से बात कर ली थी फोन पर, दिव्या से भी हैलो-हाय हो गयी थी लेकिन अपनी अस्वस्थता के सम्बन्ध में बताया किसी को नहीं। एक दो दिन ऑफिस भी गया लेकिन मन नहीं लगता था काम में, कमजोरी ज्यादा बढ़ती जा रही थी।

साथी गण मन को हल्का करने के लिए कह रहे थे ''अब घर जाने वाला है इसलिए मन नहीं लग रहा है।''

''नहीं ऐसी कोई बात नहीं। बस थोड़ी कमजोरी है।'' मोहित बोला

बुखार तो कभी आ जाता तो कभी चला जाता था जब केवल पाँच दिन शेष रह गये तो उसे चिंता हुई कि आज दस दिन हो गये बुखार भी पीछा नहीं छोड़ रहा है और कमजोरी भी ठीक नहीं हो रही है उल्टा बढ़ती ही जा रही है। आज ऑफिस का अवकाश था सोचा डॉक्टर से ठीक प्रकार परामर्श कर लिया जाये।

डॉक्टर ने देखा कि दवा असर नहीं कर रही है तो उसने ब्लड के टेस्ट लिख दिये और कहा, ''शाम तक रिपोर्ट आ जायेगी। शाम को एक बार मिल लेना तभी दवा भी लिख दूँगा।''

सायं रिपोर्ट दिखाई जिसमें मलेरिया, टाइफाइड, डेगूँ जैसा कुछ नहीं निकला तो चिंता हई कि वायरल भी 10 दिनों में चला जाना चाहिए था। आज फिर कुछ टेस्ट लिख दिये। जिसकी सम्भावना नहीं थी फिर भी डायबिटीज, एच.आई.वी. आदि और पर्चा सीधा कम्पाउंडर को दे दिया और बोला इन्हें लैब में ले जाओ ये टेस्ट कराओ और रिपोर्ट सीधी मुझे दिखाओ।

''और हाँ मोहित तुम ब्लड देकर घर जाकर आराम करो दो दिन बाद आना और दवा लेते रहना समय पर।''

मोहित ने पर्चा नहीं देखा ब्लड देकर सीधा कमरे पर चला आया और आराम किया।

डॉक्टर के पास अगले दिन रिपोर्ट आयी डॉक्टर रिपोर्ट देखकर चकित रह गया। रिपोर्ट में मोहित एच.आई.वी. पोजीटिव था। लेकिन उसे बताया किस प्रकार जाये यह समस्या थी। उसने तुरन्त कम्पाउन्डर को बुलाया और मोहित का रिकार्ड माँगा, जिसमें फोन नं. लिखा था। कम्पाउन्डर से कहा 'इस पेशेन्ट को सुबह बुलाओ और कहा कि अपने दोस्त को साथ लेकर आये।''

अगले दिन मोहित अपने मित्र पवन को लेकर हॉस्पीटल पहुँचा। डॉक्टर सीधा अपने कमरे में था। सुबह पेशेन्ट कम थे जल्दी ही मोहित को बुला लिया, मोहित के साथ पवन था।

आज डॉक्टर ने मोहित के घर परिवार, रिश्तेदार आदि के बारे में जानकारी ली। माता-पिता की इकलौती संतान है ये भी जान गया। नौकरी के उद्देश्य से यह यहाँ रह रहा है और ये भी बताया अगले सोमवार को ट्रेन से रिजर्वेशन है यहाँ से जाना है। जाने के बाद अपनी शादी के बारे में भी बताया। दिव्या छः महीनों से उसका इन्तजार कर रही है डॉक्टर साहब ऐसी दवा दो कि मैं चंगा हो जाऊँ और किसी घरवाले को ये पता न लगे कि मैं बीमार था।''

डॉक्टर बड़े ही फ्रेण्डली बात कर रहा था। ''हाँ तुम बिल्कुल ठीक हो चिंता मत करो अब तुम घर जाने की तैयारी करो और ये दवायें समय से लेते रहना।''

''जी डॉक्टर'' मोहित ने सिर हिलाते हुए कहा।

''अच्छा तुम बाहर अगले बगल वाले वार्ड में पहुँचो कुछ बोतल बगैरह लगेंगीं बस तुम ठीक हो जाओगे।''

कम्पाउण्डर उसे ले गया ''डॉक्टर ने पवन को ये कहते हुए रोक लिया ''आप इन दवाओं के बारे में जान लो''

''जी डॉक्टर साहब हमें ऑफिस जाना है बताइये''

''आप एक मिनट रूको मैं विस्तार से बताता हूँ।''

''ऐसी क्या बात है डॉक्टर साहब'' पवन बोला

''तुम मोहित के पक्के मित्र हो?''

''हाँ इसमें कोई शक'?'

''आप इनके लिए एक कष्ट उठा सकते हो?''

''हाँ क्यों नहीं, पर क्या?''

''जैसा कि तुम जानते हो मोहित पिछले १२ दिनों से बुखार से पीड़ित है, कमजोरी भी है, चलने फिरने में दिक्कत हो रही है, परसों इसे अपने घर नोएडा भी जाना है।''

''हाँ वो तो है डॉक्टर साहब'' पवन बोला।

''इसकी ऐसी स्थिति नहीं है कि ये अकेला घर पहुँच पाये हो सके तो इसे नोएडा इसके घर पहुँचने में इसका सहयोग करो तो ठीक रहेगा।''

''ऐसी क्या बात है डॉक्टर साहब''

''नहीं ऐसी कोई बात नहीं है हाँ हमने कुछ टेस्ट कराये हैं, रिपोर्ट कुछ ठीक नहीं है। इसे बता नहीं सकते नहीं तो परेशान हो जायेगा।''

''आप खुलकर बताये डॉक्टर साहब'', पवन बोला।

''मोहित एच.आई.वी. पोजीटिव है।'' इतना कहकर डॉक्टर साहब चुप हो गये।

पवन भी सन्न रह गया ऐसा कैसे हो सकता है, अभी तो इसकी उम्र ही क्या है, फिर होनी को कौन टाल सकता है। हिम्मत करके पवन बोला, ''ये मोहित को पता चलेगा तो उस पर क्या बीतेगी।''

''इसीलिए तो नहीं बता रहा हूँ मोहित को और अब तुम ऐसा करो इसको इसके घर पहुँचाने में मदद करो, वहीं पहुँचने पर जाकर बता देना। ताकि ये अपना

इलाज ढ़ंग से करा सके। भगवान ने चाहा तो ठीक भी हो सकता है, लेकिन यदि ये हिम्मत हार गया तो कुछ नहीं कहा जा सकता।''

''बहुत अच्छा किया डॉक्टर साहब आपने मुझे बता दिया। मैं उसे घर पहुँचाने की व्यवस्था करता हूँ, चिन्ता मत करो'' पवन बोला और नमस्कार कर बाहर निकल आया उसका पर्चा रिपोर्ट लेकर।

लगभग दो घण्टे बाद में बोतल चढ़ने के बाद मोहित को साथ लाया उसके कमरे तक और अपने ऑफिस चला गया।

मोहित केवल सपने देख रहा था कि अब तो केवल दो ही दिन बाकी है जाने में। अपनी माता जी के हाथ का पका खाना खाऊँगा और अपनी प्रिया दिव्या से मिलूँगा और शीघ्र ही शादी कर संसार बसा लूँगा।

इधर पवन ने अपने ऑफिस वालों को बता दिया। ऑफिस में अपने जाने की सूचना भी दी। उसका रिलीविंग लेटर भी बनवा लिया वेतन वगैरह सब उसके एकाउण्ट में पहुँचा दी गयी। सीनियर ने पवन का दो दिन का अवकाश स्वीकृत कर दिया और उसके जाने के लिए फ्लाइट से टिकट बुक करा दिया।

पवन ने मोहित का ट्रेन का रिजर्वेशन कैन्सिल करा दिया और सूचित किया मोहित को उसके रिलीविंग के बारे में और फ्लाइट की टिकट बुकिंग के बारे में बताते हुए कहा, ''कल हम दोनों ऑफिस साथ चलेंगे वही से आर्डर लेना है। परसों फ्लाइट पकड़नी है सुबह।''

मोहित बहुत खुश हो रहा था। अगले दिन ऑफिस जाकर सब बड़े प्रेम से मिल रहे थे। हर कोई गिफ्ट दे रह था, शुभकामनायें दे रहा था। मोहित मन ही मन सोच रहा था, बड़ा सौभाग्यशाली है, ऐसा स्टाफ पाकर। वह अभी भी हकीकत से दूर था। ऐसा सत्कार पाकर बड़ा खुश था दिन भर ऑफिस में रहने के कारण थकान बढ़ चुकी थी। पवन ने शाम को उसके कमरे पर छोड़ दिया और कहा अभी जल्दी सो जाना। सुबह को गाड़ी लेकर आऊँगा शीघ्र एअरपोर्ट चलेंगे।''

''हाँ ठीक है मेरे यार'', तुम मेरी बहुत मदद कर रहे हो मैं तेरा एहसान जिन्दगी भर नहीं भूलूँगा।''

पवन जानता था कि जिन्दगी किसे कहते हैं। मोहित अनभिज्ञ था कि उसकी जिन्दगी में ऐसा कीड़ा लग गया है जो लाइलाज है। लेकिन फिर भी बोला ''नहीं यार यह कोई एहसान नहीं मैं तेरा मित्र हूँ, बस वही मित्रता निभा रहा हूँ।'' अपने चेहरे को घुमाया और आँख से निकलती हुई आँसू की बूँद को रुमाल से पौंछ लिया फिर बोला ''अच्छा शुभरात्रि'' कल मिलेंगे, कहकर चलता बना।

❑

छः महीनों के बाद इन्तजार के बाद घर जाने की खुशी थी, या प्राणप्रिया से बिछड़ा हुआ था तो उससे मिलने की खुशी थी। पहली बार जिन्दगी में इतने दिनों तक घर वालों से अलग था तो उनसे मिलने की व्यग्रता थी जो कुछ भी था लेकिन मन खुश था, दिल बाग-बाग था। शारीरिक पीड़ा भी इस खुशी को नहीं रोक पा रही थी। यद्यपि चलने में दिक्कत थी, शरीर में दर्द था, दवाओं के असर की बेचैनी थी फिर भी सुबह इसी खुशी में जल्दी जग कर तैयार होने लगा। हाथ-पैर नहीं चल रहे थे फिर भी कोशिश जारी थी।

अचानक दरवाजे से किसी ने घण्टी बजायी। मुश्किल से दरवाजा खोला बाहर मित्र पवन आया था-

"हाय मोहित कैसा है?"

"बस ठीक हूँ..." कहते-कहते रुक गया मोहित।

पवन तो जानता था, उसकी स्थिति को समझ रहा था कि कितना ठीक है लेकिन फिर भी मुस्कुराते हुए बोला- "घर जाने की खुशी है।"

"यार खुशी तो है, हाँ और अधिक खुशी होती यदि मेरा स्वास्थ्य अच्छा होता।"

"घर पहुँचकर सब कुछ ठीक हो जायेगा चिन्ता मत कर।"

"नहीं-नहीं। चिन्ता करने से क्या होगा?" धीरे श्वॉस लेते हुए मोहित ने कहा।

"सब ठीक हो जायेगा।" धैर्य बँधाते हुए पवन ने कहा।

"हाँ पर्चे दवा सब रख लिया है।" मोहित ने कहा

पवन ने उसका बैग उठाया और अपने साथ लाया टैक्सी में रख दिया और मोहित को सँभालकर बैठा दिया। एअरपोर्ट समय पर पहुँच गये। फ्लाइट छूटने में अभी समय था तो सोचा मोहित ने घर पर क्यों न बात कर ली जाये।

पापा को फोन लगाया और बोला "हाँ पापा हम आपको कल शाम को ये बताना भूल गये थे कि रिजर्वेशन रद्द करा दिया था और अब हम फ्लाइट से आ रहे हैं। मेरे साथ मेरा मित्र पवन भी है। फ्लाइट यहाँ से लगभग १ घण्टे बाद १० बजे रवाना होगी हम समय पर लगभग १२ बजे दिल्ली एअरपोर्ट पर पहुँचेंगे। आप लोग वहीं आ जाना और हाँ यदि हो सके तो दिव्या को भी फोन कर देना।

"हाँ-हाँ चिन्ता मत कर मैं तेरी मम्मी दोनों वहाँ पहुँच जायेंगे। दिव्या का फोन अभी आने ही वाला है। उसके घर वाले भी पहुँच जायेंगे।"

मोहित के पापा का दिल फूला नहीं समा रहा था। क्योंकि उसका बेटा हवाई जहाज से आ रहा था। अपनी पत्नी से बोला, ''अरे भगवान चलो मोहित हवाई जहाज से आ रहा है। चलो लेने चलना है।'' इसी बीच दिव्या का फोन आ गया।

''हाँ पापा मोहित का कोई फोन आया या समाचार मिला कब आ रहा है उसका कई दिन से फोन नहीं मिल पा रहा है।''

''अरे दिव्या बेटा अभी-अभी बात हुई है, लगभग बारह बजे दिल्ली एअरपोर्ट पर पहुँचने वाला है, वहाँ से फ्लाइट छूटने वाली है।''

मोहित के पापा और मम्मी ऑटो से एअरपोर्ट पहुँचे। दिव्या अपने पापा की कार लेकर पहुँच गयी। उसके पापा किसी अर्जेन्ट कार्य में बिजी थे।

दिव्या के दिल में अजीब सी हलचल पैदा हो गयी कि उसके सपनों का राजकुमार होने वाला पति अपनी नौकरी से वापिस आ रहा है।

छः महीनों के इन्तजार की घड़ियाँ बिल्कुल समापन की ओर थी। कलियाँ पुष्प बनने के लिए आतुर थी। बगीचों में सुमन सुवासित होने वाले थे। उसकी खुशबू से सारा जहाँ महकने वाला था, ऐसे रंगीन सपनों में खोयी दिव्या एकटक एअरपोर्ट के निकासी गेट की तरफ देख रही थी और कान सीधे उस स्पीकर की तरफ लगे थे, जहाँ से उदघोषणा की आवाज आ रही थी।

तभी उसके कंधे पर हाथ रखा मोहित के पापा ने और कहा, ''बेटा तुम कितनी देर की आ गयी? परेशान मत हो मोहित आने ही वाला है।''

पीछे मुड़ते हुए और पैरों पर झुकते हुए ''जी'' इतना सा ही कह पायी और शरमा गयी।

अपनी तड़फ कैसे बयां करती, अपना दर्द जो सीने में छिपा था, मिलन का उसकी व्याख्या किस प्रकार करती लेकिन फिर भी सन्तोष था कि अब तो मोहित आने ही वाला है।

जब कोई वस्तु जितनी दूर होती है और अप्राप्य हो तो ज्यादा चिन्ता करना भी छोड़ दिया जाता है लेकिन वही वस्तु जब पहुँच के अन्दर हो तो उसे पाने को हाथ स्वयं ही बढ़ जाता है, जिज्ञासा बढ़ जाती है और उसे पाने की इच्छा प्रबल हो जाती है। ठीक यही स्थिति भी दिव्या की थी, जिसे प्रकट करना काफी मुश्किल था।

बस इतना ही बोल सकी, ''अभी आयी हूँ पापा'' तभी अचानक उद्घोषणा की तरफ ध्यान टिक गया जो बता रहा था कि कोलकाता से आने वाली फ्लाइट पाँच मिनट में ही पहुँचने वाली है।

फ्लाइट की उदघोषणा सुनकर बाहर इन्तजार कर रहे लोग अपनी-अपनी तख्ती लेकर खड़े हो गये। दिव्या और मोहित के माता-पिता को किसी तख्ती की आवश्यकता नहीं थी। मोहित तो उनका खून था प्राणों से प्यारा था, कुल का दीपक था।

कुछ ही क्षणों में फ्लाइट पहुँच गयी। यात्री गण बाहर आने लगे। लोग बड़ी खुशी-खुशी अपने परिजनों, परिचितों, रिश्तेदारों, मित्रों से गले मिल रहे थे।

दिव्या का दिल धड़क रहा था कि कब मोहित बाहर आये और उसे गले लगाकर अपने धड़कते दिल को शान्त करे। धीरे-धीरे लगभग सभी यात्री निकल गये बस इक्का-दुक्का ही रह गया। मोहित अभी तक बाहर नहीं आया था। चिन्ता बढ़ने लगी, बेचैनी बढ़ने लगी कि अभी तक मोहित बाहर क्यों नहीं निकला? आपस में तीनों प्रश्न करने लगे तभी दूर नजर पड़ी कि मोहित को कोई सहारा देकर ला रहा है। दिल बैठा जा रहा था कि मोहित को क्या हो गया? मोहित धीरे-धीरे सहारा लिये हुए चला आ रहा था।

मोहित और पास आया बेहद कमजोर, सूखा हुआ चेहरा फीका पड़ा हुआ, जैसे-तैसे माता-पिता के पैरों को स्पर्श किया।

''ये क्या हुआ मोहित इतना कमजोर कैसे हो गया, सब ठीक तो है, तूने फोन कर एक दिन भी क्यों नहीं बताया?'' जैसे अनेकों प्रश्न उसके मम्मी-पापा ने किये।

''बस बुखार आ गया था'', बेहद कमजोर आवाज में, ''इसलिए कमजोरी है, दवा ले रहा हूँ बस ठीक हो जाऊँगा।'' मम्मी पापा को प्रसन्न करने के लिये यह जोड़ा- ''मम्मी के हाथ का चार दिन खाना खाऊँगा तो हिरन हो जाऊँगा।'' इतना कहते हुए ढ़ाँढ़स बँधाया और परिचय कराया अपने मित्र का मम्मी पापा एवं दिव्या से।

दिव्या अपने प्यार को गले लगाना चाहती थी लेकिन उसकी हालत देखकर तरस आ गया एवं माता पिता के सामने लज्जा भी। मोहित की तरफ इशारा करते हुए चलो बैठो गाड़ी में इतना कहकर पवन के हाथों से बैग ले लिया और रखने लगी। पवन ने रोककर कहा, ''अब आप लोग जाइये, मोहित का इलाज चल रहा है उसकी दवा एवं पर्चे रिपोर्ट आदि सब उसके बैग में हैं। थोड़ी तबियत अच्छी नहीं है, हो सके तो किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा लेना। जल्दी स्वस्थ हो जायेगा और हाँ मुझे इज़ाजत दीजिये, मुझे वापिसी के लिए अभी तुरन्त फ्लाइट पकड़नी है, अभी तुरन्त वापिस लौटना है।''

मोहित के मम्मी-पापा ने कहा, ''ऐसा नहीं होता है बेटा हमारे यहाँ एक-दो दिन रुककर जाइयेगा।''

''नहीं-नहीं अंकल मुझे तुरन्त वापिस जाना है। अब आप लोग आ गये हो तो मेरी जिम्मेदारी पूर्ण हुई, अब मुझे चलना है, कम्पनी पहुँचना है।''

दिव्या ने भी पवन से कहा, ''आपको थोड़ा समय लेकर आना चाहिए था।''

''नहीं-नहीं दिव्या जी, अब आप अपने मोहित को ले जाओ और इसे थोड़ा आराम करने दीजिये। मुझे मोहित ने आपके बारे में सब कुछ बताया दिया था। मुझे मालूम है आप इसका ध्यान रखोगी यह जल्दी ठीक हो जायेगा।''

ठीक हो जायेगा या नहीं इस प्रश्न का जवाब तो भविष्य के गर्भ में छिपा था लेकिन अपनी बात को व्यक्त कर दिया था इशारों में पवन ने। समझदार को इशारा ही काफी होता है।

पवन चलने ही वाला था मोहित ने हाथ पकड़ लिया और बोला, ''तेरा मैं धन्यवाद कैसे बोलूँ? धन्यवाद बोलकर तेरे उपकार को कम नहीं करना चाहता।'' इतना कहते हुए पीछे नजर डाली तो दिव्या गाड़ी में ड्राइविंग सीट पर बैठक चुकी थी और उसके माता-पिता पीछे वाली सीट पर।

''नहीं-नहीं धन्यवाद की आवश्यकता नहीं है, मैंने तो अपना फर्ज निभाया है।'' पवन बड़े संयमित स्वर में बोला।

''नहीं पवन तूने जो मेरे लिये किया है, उसे मैं बाकी बची जिन्दगी में नहीं भूल सकता हूँ।

''कैसी बात करता है मोहित? बाकी बची जिन्दगी का क्या मतलब?''

''अभी तो तेरे सामने पूरा संसार पड़ा है, अभी तो दिव्या से शादी करनी है। माता-पिता के अरमान पूरे करने हैं...''

पवन को बीच में टोकते हुए - ''रहने भी दो यार। क्यों झूठी तसल्ली देते हो अपने दोस्त को? मुझे सब मालूम पड़ गया है कि मैं ज्यादा दिन जीवित रहने वाला नहीं हूँ। तुमने मेरे साथ बहुत उपकार किया है एक दोस्त का फर्ज़ निभाया है मैं तेरा एहसानमंद हूँ। हाँ मुझे सब मालूम पड़ गया है कि मैं एच.आई.वी. पोजीटिव हूँ।'' इतना कहते-कहते आँखों में आँसू टपक पड़े।

मोहित के आँसू पौंछते हुए पवन बोला ''रिपोर्ट में स्पष्ट नहीं था केवल मेडिकल की भाषा में था फिर तुझे कैसे मालूम हुआ?''

''जब तुम वॉशरूम गये थे तब मेरे पास सीट पर बैठा यात्री डॉक्टर था और उसे मैंने यह कहकर रिपोर्ट दिखायी कि यह मेरे मित्र की रिपोर्ट है, इसे क्या बीमारी है। तब उसी ने मुझे बताया था कि इस रिपोर्ट के अनुसार तुम्हारा मित्र एच.आई.वी. पोजीटिव है। इतना सुनकर मेरा दिल धक से बैठ गया था लेकिन जैसे ही तुम आये मैंने अपने-आपको सँभाल लिया था।''

पवन चुप था उसकी आँखों से आँसू छलकने लगे थे, जिन्हें आज तक रोके रखा था, मित्र की खातिर। गला भी रुँध गया इतना ही बोल सका- ''हिम्मत रखना मेरे

यार, अच्छा इलाज कराना। भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा।'' इतना कहते हुए गले से लगा लिया और बाय-बाय कहकर पवन धीरे-धीरे एअरपोर्ट की तरफ वापस जाने लगा। मोहित बस हाथ हिलाता रहा और पानी गाड़ी में जाकर बैठने लगा।'' गाड़ी धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ने लगी अपने गंतव्य की ओर।

❑

जिन्दगी एक पानी का बुलबुला है जो बनता एवं बिगड़ जाता है, मनुष्य रंगमंच का अभिनेता है जो अभिनय करने के लिए आता है और अभिनय समाप्त करने के बाद वापस चला जाता है। पिता दीनानाथ को क्या पता था कि उसका बेटा मोहित भी उसी बुलबुले के समान है अथवा रंगमंच का अभिनेता है। उसने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला था। जीवन भर कठिनाइयाँ झेली थी, मेहनत मजदूरी से पेट पाला था। खुद भूखा सोता था लेकिन अपने बेटे को कभी कमी महसूस नहीं होने दी थी। उसकी शिक्षा को पूरा कराया था। आज जब नौकरी से वापस आया तो मन में खुशी थी लेकिन अपने बेटे को चेहरे की उदासी ने खुशियों के उमड़ते हुए आकाश को धुंधला कर दिया था। सोचा था घर में खुशियों की सौगात आयी है अखण्ड पाठ होगा मोहल्ले भर को जिमायेंगे लेकिन बीमार पुत्र के कारण अभिलाषा पुष्ट नहीं हो सकती थी।

माँ रामवती ने अपने पति दीनानाथ का ध्यान भंग करते हुए कहा, ''पता नहीं किन सपनों में खोये बैठे हो? कल से मोहित आया है उसकी तबियत ठीक नहीं है, जो कुछ दवा लाया था खा चुका है फिर भी बुखार नहीं उतरा है, किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाते क्यों नहीं? बेचारा वो तो इतना सीधा है अपने आप तो कहेगा नहीं, और आप...।''

बीच में टोकते हुए दीनानाथ बोले, ''मैंने कई बार उससे पूछा था, बेटा क्या बात है, बस इतना ही कहता है कि बुखार है उतर जायेगा। दवा ले रहा हूँ। हाँ अब मुझे भी लगता है तू सही कह रही है रम्मो'' अपनी पत्नी का प्रेम से रामवती नहीं रम्मो ही कहा करता था। ''अजी वो तो कहेगा ही। आप तो समझदार हैं ले जाओ इसे दिखाने।'' रामवती बोली।

दोनों उठकर खड़े हो गये और मोहित के कमरे में जाकर बोले- ''चल बेटा कपड़े पहन ले और चल किसी बड़े डॉक्टर के पास, जल्दी ही ठीक हो जाओगे। यों कब तक रगड़ते रहोगे। फिर तुझे भी अपनी नौकरी पर भी तो जाना है।''

मोहित कुछ नहीं बोला यों ही लेटा रहा। आख़िर बोलता भी क्या? उसे तो अपनी मृत्यु निश्चित दिखाई दे रही थी और उसे अपने माँ बाप की बरबादी एवं

भविष्य अन्धकारमय दिखाई दे रहा था। इसी सोच में कुछ कह नहीं पाया सिवाय इसके ''आप परेशान क्यों होते हो बाबूजी? मैं जल्दी ठीक हो जाऊँगा।''

कितना ठीक होगा यह तो मोहित जानता था भली भाँति। केवल ढ़ाँढ़स बँधा रहा था अपने पिता को। उसके मन का अन्तर्द्वन्द यही कह रहा था कि भला उस दीपक की बाती कितनी देर जल सकती है जिसका तेल खत्म हो गया हो; भला वर्षा उस फसल का क्या भला कर सकती है, जिसकी जड़े गर्मी से पहले ही सूख गयीं हों।

मोहित के माता-पिता ने नहीं सुना और उसे तैयार करने लगे डॉक्टर के पास ले जाने के लिए।

मोहित भी कुछ नहीं कह पा रहा था, बात ही कुछ ऐसी थी जिसे कहा भी नहीं जा सकता था कि उसने अपने माँ-बाप को किस कदर ठेस पहुँचाई है भले ही उससे गलती से या मजबूरी में कोई कदम उठा हो। अपने आप को कोस रहा था, ''काश उस रात हिम्मत दिखाई होती तो बच सकता था।'' लेकिन कभी-कभी दुविधा भी ऐसे कष्ट को जन्म दे देती है, जिसकी परिणित बहुत बुरी होती है।

एक बार फिर संकेतों में माँ को समझाते हुए कहा- ''माँ आप बेकार परेशान होती हो जो भगवान की इच्छा होगी वही होगा; दवा तो ले ही रहा हूँ।''

माँ आशय नहीं समझ पायी इसलिए कुछ सुनने को भी तैयार नहीं थी। उसने गाँव में चलने वाले ऑटो को बुलवा लिया था, नोएडा चलने के लिए।

मोहित कुछ कह भी नहीं पा रहा था और कुछ कर भी नहीं पा रहा था। अपने अनमने मन से उठा लड़खड़ाते हुए। बाप ने सहारा देकर बाहर खड़े ऑटो में बठाया और स्वयं दोनों भी बैठ लिए। चलते समय भी पड़ोसियों ने साथ चलने को कहा तो दीनानाथ ने मना कर दिया। फिर भी उन्होंने सुहानुभूति प्रकट करते हुए कहा- ''किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाना।''

दीनानाथ ने कहा- ''हाँ भैया, अच्छे डॉक्टर के पास ही ले जाऊँगा। आप सब तो जानते ही है मेरा इसके सिवा और है ही कौन इस दुनिया में। आप सब की दुआओं से जल्दी ही स्वस्थ हो जायेगा और हाँ चिन्ता मत करो, जैसा भी होगा। आप लोगों को जरूर सूचित कर दूँगा। आप सब ही तो है हमारे सुख-दुख के साथी।'' इतना कहकर चल दिये।

वैसे तो मोहित का गाँव नोयडा से काफी दूर नहीं था। देखा जाये तो उसी जनपद का एक हिस्सा था। लेकिन फिर भी एक गाँव ही कहलाता था। ज्यादा देर का रास्ता नहीं था। नोएडा के फोर्टिस, कैलाश आदि बड़े अस्पतालों के नाम जानता था और किसी न किसी के साथ जाना भी हुआ था। अतः उनमें से उन्हें कैलाश हॉस्पिटल अच्छा लगा, वहीं लेकर पहुँच गये मोहित को।

जैसा कि व्यवस्था होती है नम्बर लगा दिया और बाहर बैठकर अपने नम्बर की प्रतीक्षा करने लगे तीनों।

मोहित मन ही मन दिव्या के बारे में सोच रहा था। उसके साथ बिताया गया एक-एक पल उसकी आँखों के सामने फिल्म की रील की तरह घूम गया।

दिव्या का दो बार फोन भी आ चुका था, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया था। वह सबसे झूठ बोल सकता था लेकिन दिव्या से नहीं। दूसरा उसने अपने आप को दिव्या का अपराधी मान लिया था, क्योंकि दिव्या के साथ एक बार शारीरिक सम्बन्ध स्थापित हो गया था। उसने प्रयास किया था या दिव्या ने बात एक ही थी। अब मन में एक प्रश्न जो सबसे ज्यादा परेशान कर रहा था वहीं उसके ठीक न होने का कारण था। कहीं दिव्या को भी यह रोग न हो जाये लेकिन एकाएक अपने आपको कोसता भी है कि यह कुविचार उसके मन में आया कैसे ऐसा सोचना भी किसी पाप से कम नहीं है।

तभी मोहित का नाम पुकारा गया और मोहित की विचार शृंखला टूट गयी, बस यही प्रार्थना करते हुए अन्दर गया कि मेरे प्राण भले ही चले जाये लेकिन मेरी दिव्या को कुछ नहीं होना चाहिए। यही सोचते-सोचते डॉक्टर के पास पहुँच गया।

''बैठो मोहित और बताओ क्या बात है?'' डॉक्टर साहब ने पूछा।

''डॉक्टर साहब क्या बात बताऊँ?'' कहते-कहते अपने साथ लायी सारी रिपोर्ट्स उनकी टेबिल पर रख दीं।

डॉक्टर देखकर दंग रह गया यह तो एच.आई.वी. पोजीटिव है।

कुछ देर डॉक्टर चुप रहा और अब तक दी गयी सभी दवायें जो पर्चे में लिखी थी, उसका अवलोकन कर लिया मोहित को अन्दर टेबिल पर लिटाया और सारा चैकअप करने के बाद मोहित से पूछा ये सब कैसे हुआ?

मोहित ने विस्तार से अपनी कहानी सुना दी और यह भी बताया दिया कि वह अपने माँ बाप का इकलौता बेटा है। माँ-बाप उसकी बीमारी के बारे में सुनते ही टूट जायेंगे।

''डॉक्टर साहब प्लीज उन्हें मत बताइये यही बेहतर है।''

''नहीं मोहित, तुम समझदार हो। तुम्हारे साथ जो हुआ वह तुम्हारी मजबूरी थी लेकिन तुम्हारी बीमारी हकीकत है इससे तुम्हारे माँ-बाप का परिचित होना जरूरी है तभी तुम्हारा बेहतर इलाज हो सकता है।'' थोड़ा रुककर फिर बोले डॉक्टर साहब - ''पिछली रिपोर्ट के आधार पर तुम्हारी जीवनी शक्ति काफी कमजोर हो चुकी है। इस बीमारी पर हिम्मत और धैर्य से विजय प्राप्त की जा सकती है।''

अभी तुम्हें हमारे अटैण्डेण्ट पैथोलॉजी में ले जायेंगे और कुछ नई जाँचें करायेंगे। रिपोर्ट एक घण्टे में आ जायेंगी तब तक बाहर इन्तजार कीजिए।

ब्लड सैम्पल दिये आधा घण्टा बीत चुका था। अब मोहित का दिल धक-धक कर रहा था कि अब क्या होगा? भगवान से प्रार्थना भी कर रहा था कि मुझे उठाले मैं अपने माँ-बाप को कैसे मुँह दिखाऊँगा इस गम्भीर चिन्तन से परेशान होने लगा।

मम्मी पापा ने पूछा - ''बेटा बताओ डॉक्टर ने क्या कहा?''

''कुछ नहीं'' अभी आधे घण्टे में रिपोर्ट मिल जायेगी तब पता चलेगा।'' इतना कहकर रूक गया मोहित।

बेड पर लेटते ही उसे कमजोरी के कारण नींद आ गयी। मोहित के पिताजी पैथोलॉजी गये और रिपोर्ट लेकर डॉक्टर साहब के चैम्बर पहुँच गये।

डॉक्टर साहब ने रिपोर्ट खोलते हुए उन्हें बैठने का इशारा किया। ''बाबूजी जीवन में कुछ चीजें ऐसी होती है उसकी हकीकत को स्वीकार कर लेनी चाहिए, इसी में समझदारी हैं।''

''डॉक्टर साहब मैंने तो अपने बेटे की रिपोर्ट दिखायी है, आप किस दर्शन की बात कर रहे हो? आप हमें बतायें कि हमारे बेटे को क्या हुआ है?'' मोहित के पिता ने अधीर होकर कहा।

''जी बाबूजी वही बताने का प्रयास कर रहा हूँ।''

''आप काफी समझदार है हमें मालूम होना चाहिए कि बीमारी को दिल से नहीं दिमाग से सुनना चाहिए और उसे ठीक करने में भी दिमाग ही काम करता है, भावनाएँ नहीं।

''मैं समझा नहीं डॉक्टर साहब सीधे-सीधे बताओ।

''बात ही कुछ ऐसी है बाबूजी, जिसे सीधे सुनने से पहले सुनने के लिए तैयार होना पड़ता है।''

मोहित के पापा कुछ रोष में आते हुए- ''आप सीधे-सीधे बताइये, रोग है तो उसका इलाज भी होता है।''

''हाँ इलाज जरूर होता, परन्तु कुछ समय के लिए।''

''मतलब''

''मतलब यह है बाबूजी आपके बेटे को 'एड्स' नाम की बीमारी है।'' इतना कहकर डॉक्टर चुप हो गया।

''मैं समझा नहीं डॉक्टर साहब यह 'एड्स' कौन सी बीमारी होती है? मुझे साफ-साफ बताओ।''

डॉक्टर ने बताया, ''यह एक गम्भीर बीमारी है, इसका इलाज काफी खर्चीला है, लेकिन सफलता का प्रतिशत कम होता है।''

बाबूजी ने दिमाग से काफी सुनने की कोशिश की थी परन्तु बात अपने बेटे के जीवन और मृत्यु की थी, इसलिए उसे दिल से सुना था।

अचानक सिर चकराने लगा तभी डॉक्टर ने उन्हें सँभालते हुए कहा कि ''आप परेशान मत हो मेरी आपको एक सलाह है कि दिल्ली किसी सरकारी हॉस्पीटल में ले जाये, वहीं एडमिट करायें। आप कहो तो मैं रेफर किये देता हूँ। मेरा परिचय है, मोहित वहीं एडमिट हो जायेगा नहीं तो महीनों चक्कर लगाने पड़ते हैं।

''क्या डॉक्टर साहब आपके पास इलाज नहीं है क्या?''

''नहीं ऐसी बात नहीं वहाँ आपको अधिक सुविधायें मिल जायेगी और आप आसानी से इलाज भी करा सकते हैं। यहाँ इतना महँगा है कि यहाँ कराना समझदारी नहीं है।''

डॉक्टर हकीकत समझ चुका था इसलिए उसने रेफर करना ही उचित समझा। पुनः बाबूजी से कहा - ''जितनी जल्दी हो सके वहाँ ले जाइये घर ले जाने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि बीमारी ज्यादा बढ़ने से पहले उसका उपचार मिल जायेगा।

कन्धे पर हाथ रखते डॉक्टर ने धीरे-धीरे बीमारी का कारण भी बता दिया।

''जैसी आज्ञा डॉक्टर साहब'' रुँधे गले से इतना ही कह सका। हॉस्पीटल से बाहर आये ऑटो वाले को बुलाया और मोहित को बैठाल कर चल दिये, दिल्ली की ओर....।

❑

जिस प्रकार मछली पानी के बिना जिन्दा नहीं रह सकती। ठीक उसी प्रकार दिव्या मोहित के बिना जिन्दा नहीं रह सकती थी। ये तो वही बात थी जैसे थाली सम्मुख हो परन्तु रोटी मुख से बहुत दूर हो। अब जबकि मोहित को आये दस दिन हो गये थे लेकिन अभी तक उनका मिलन नहीं हो पा रहा था। केवल एक बार फोन से वार्ता हुई थी मन परेशान था दिमाग में तरह-तरह की उछल-कूद हो रही थी क्योंकि सभी जानते थे स्त्री का मन बड़ा चंचल होता है, धैर्य की कमी होती है चाहे भले ही दुखों का पहाड़ झेलने की क्षमता रखती हो।

सावन की घटायें चारों तरफ घिर रहीं हों परन्तु बरसात काफी दूर हो केवल बिजली चमक कर रह जाती हों, पपीहा मुँह ऊपर किये ताक रहा है कब स्वाति की बूँद उसके अधरों पर आये, उसे तृप्त करे। थककर चूर हो जाना नियति हो जाती है लेकिन फिर भी आस कि वह सुबह कभी तो आयेगी।

यही स्थिति दिव्या की है १५ दिन में केवल एक बार वार्ता उसके बाद स्विच ऑफ। उसे मालूम था कि स्वास्थ्य अच्छा नहीं है इसलिए बार-बार हाल चाल लेने की

कोशिश कर रही थी, बीमारी के बारे में ज्यादा गम्भीर नहीं थी क्योंकि जानती थी यह सामान्य बुखार है, जैसा कि मोहित ने कहा था।

मोहित का कहा गया यह वाक्य सॉन्त्वना भी दे रहा था किन्तु जिज्ञासा और कुतूहल बढ़ जाता है जब उसके फोन पर मिलाने वाली काल पर जवाब मिलता है कि फोन स्विच ऑफ है। सन्देह प्रगाढ़ हो रहा है कि अपनी प्राण प्रिया को जिससे कसमें खायी थी साथ-साथ जीने मरने की, उसे सूचित करना अपना धर्म नहीं समझा तन से मन से आत्मा से मोहित की हो चुकी थी बाकी था तो केवल रस्म अदायगी सात फेरों की उसी की तैयारियों में उसके माँ-बाप जुटे भी थे। जैसा कि पहले से तय था कि कोलकाता से लौट आने के बाद रिश्ता तय होगा और शादी होगी।

तरह-तरह के सपने मन में संजोये चिंतित थी। एकाएक मन में विचार आया कि नोएडा के निकट उसका गाँव है ज्यादा दूरी तो है नहीं क्यों न चलकर देख लिया जाये। अपने पापा से आज्ञा लेकर निकल पड़ी उसके गाँव। हाँ कहने को गाँव था रिहायश के हिसाब से परन्तु नोयडा का ही हिस्सा था।

चलते वक्त पापा नवीन चन्द्र ने कहा, ''बेटा अब तुम दोनों शादी के बंधन में बँधने वाले हो अब ज्यादा एक दूसरे के घर आना जाना ठीक नहीं है। मैं जानता उसका फोन नहीं लग रहा है, इसलिए तुम्हारा परेशान होना लाजिमी है। आज तो चली जाओ लेकिन आगे से याद रखना। दिव्या को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास भली-भाँति था। यद्यपि उसकी सोच दिल्ली की थी। आधुनिक होने के साथ-साथ अपने पिता की मर्यादा का भी ध्यान था। मध्यम परिवार के संस्कार कभी-कभी आड़े आ जाते हैं। पिता की आर्थिक स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ थी। पिताजी अगले महीने सेवानिवृत्त होने वाले थे, एम.सी.डी. के एक लिपिक पद से। जिन्दगी भर ईमानदारी से गुजारी थी। अपनी इकलौती बेटी को बड़े लाड प्यार से पाला था। बेटी की नौकरी लगने के बाद कुछ हद तक उनका वजन हल्का भी हुआ था। लेकिन हाथ पीले करने की जिम्मेदारी का एहसास था। दिव्या जानती थी इन सब बातों को अच्छी तरह से। दिव्या के पिता जानते हैं कि वह मोहित को बेहद प्यार करती है, उसके पसन्द के लड़के से शादी करने के फैसले का स्वागत भी किया था।

ये सब बातें दिव्या के मन में पता नहीं क्यों आ रही थी। ऑटो में बैठी-बैठी सोचती जा रही थी। उसे अपने होने वाले प्रियतम की बाँहों का इन्तजार था, उससे आलिंगन बद्ध होने को उत्सुक थी शुष्क अधरों को तृप्त करने वाले चुम्बन का इन्तजार था जो मरुस्थल रूपी प्यास को बुझा सके। साथ ही साथ मोबाइल पर अंगुलियाँ लगातार चल रही थी।

बार-बार फोन मिलाने की कोशिश शायद अबकी बार लग जाये, लेकिन वही बार-बार कम्प्यूटराइज्ड आवाज 'डायल किया हुआ नम्बर स्विच ऑफ है।'

ऑटो वाले को टोकते हुए - ''अरे भाई जरा जल्दी चलो कैसे धीरे-धीरे चला रहे हो।''

''मैडम चला तो ठीक रहा हूँ - ''आज थोड़ा जाम लग रहा है लेंकिन मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ आप चिन्ता न करें।''

अपनी प्रिय वस्तु से जब व्यक्ति मिलने को आतुर हो तो एक-एक क्षण घण्टों के बराबर लगता है आइन्सटीन ने ठीक ही कहा है। ''गैस स्टोव के पास एक मिनट एक घण्टे के बराबर लगता है लेकिन अपनी प्रेमिका के पास एक घण्टा भी एक मिनट के बराबर लगता है।''

वही स्थिति ठीक दिव्या की हो रही थी। वह मिलने को इतनी आतुर थी कि एक-एक मिनट एक-एक घण्टे के बराबर लग रहा था।

मन भी अजीब है कितना चंचल बनाया है एक स्थान पर टिकना मुश्किल होता है पता नहीं किस क्षण क्या आ जाये, इस पर किसी का वश नहीं चलता।

ऑटो में सवार दिव्या केवल मोहित के बारे में ही सोच रही थी लेकिन एकाएक उसके परिवार के बारे में सोचा तो माथा ठनक गया कहीं उसके माता-पिता उसकी शादी कहीं और तो नहीं करना चाहते। शायद उस पर दबाव बनाया हो इसीलिए मोहित बात नहीं करना चाहता हो।

भारतीय समाज में ऐसा अक्सर होता रहता है फिर भी दिव्या ने अपने मन को समझाया 'अरे यह क्या पाप मन में आ रहा है ऐसा सोचना मेरे लिए ठीक नहीं है मोहित तो तन मन से उसका हो चुका है। वह उसके अलावा किसी अन्य के बारे में ऐसा नहीं सोच सकती और नहीं मोहित ऐसा सोचेगा ऐसा मन दृढ़ था। ध्यान भंग हुआ ऑटो वाले ने जब आवाज लगायी, ''अरे मैडम कहाँ खो गयी जो गाँव आपने बताया था वो आ गया है अब बताओ किधर चलना है।''

दिव्या बोली ''अरे भाई माफ करना जरा ध्यान कहीं और चला गया था। हाँ इधर से दायीं ओर मुड़कर सीधे चलो लास्ट में नीम के पेड़ के पास चलकर रोक लेना।''

''ठीक है मैडम''

थोड़ी देर में दिव्या उसके मकान के सामने पहुँच गयी उसे मकान पहचानने में देर नहीं लगी क्योंकि कुछ समय पहले ही दिव्या उसे छोड़ने आयी थी जब मोहित कोलकाता से लौटा था।

ऑटो वाले से ''अरे भैया जरा रुको मैं अभी आती हूँ।'' ऑटो से उतरकर सीधे उसके मकान के मुख्य द्वार पर पहुँची तो दरवाजे पर ताला लटकता हुआ देखकर माथा ठनक गया कि रास्ते में जो पाप वाला प्रश्न मन में आया था कहीं सच तो नहीं।''

''नहीं-नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता'' विचलित मन को यही उत्तर मिला उसके अंतस् से।

तभी पड़ोस में रहने वाले विश्वनाथ ने पूछा - ''बेटा किसे देख रही हो''

''मोहित और उसके परिवार के लोग कहाँ चले गये अंकल''

''बेटा अगर मैं सही हूँ तो, तुम वही हो जो उस दिन मोहित को लेकर आयी थी।''

''हाँ अंकल लेकिन ये लोग कहाँ है?''

''अरे बेटा मोहित की तबियत कुछ ज्यादा ही खराब हो गयी थी, इसलिए नोएडा में किसी अच्छे अस्पताल दिखाने ले गये थे।''

''अंकल क्या ज्यादा तबियत खराब थी।''

''हाँ बेटा, तबियत तो ज्यादा ही खराब लग रही थी चल पाने में मुश्किल हो रही थी।''

''अंकल कब गये, कहाँ गये, कौन से अस्पताल में कोई जानकारी है किसी को उन्हें क्या कोई समाचार आया?''

''गये हुए लगभग दस दिन हो गये हैं। अभी तक कोई समाचार नहीं आया है। हाँ, किसी को समाचार मिलता तो मुझे अवश्य मिलता, हाँ मैं गाँव के लोगों के साथ कैलाश हॉस्पीटल गया था, गाँव के दो-तीन लोगों के साथ लेकिन वहाँ जाकर मालूम पड़ा कि वहाँ दिखाया तो था लेकिन वहाँ से दिल्ली किसी हॉस्पीटल में ले गये हैं।''

''अंकल और कुछ मालूम है उसके बारे में''

''नहीं बेटा और कुछ नहीं मालूम''

''अच्छा ठीक है अंकल मैं चलती हूँ।''

नहीं बेटा ऐसा कैसे हो सकता है दीनानाथ नहीं है तो मैं उनका पड़ोसी तो हूँ आओ घर चलो चाय नाश्ता करके ही जाना।''

''नहीं अंकल मुझे अभी चलना है मैं पता करती हूँ कि ये कहाँ गये हैं?''

''ठीक है बेटा'' विश्वनाथ बोला।

''अच्छा नमस्ते अंकल मैं चलती हूँ।'' कहती हुई ऑटो में जाकर बैठ गयी।

''चलो भैया''

ऑटो वाले ने ऑटो स्टार्ट किया और पूछा ''किधर मैडम'' चलो वापस घर की ओर जहाँ से आये थे।''?

''मैडम बुरा न माने तो एक बात पूछूँ।''

''हाँ पूछो''

"जब आप आयी थी तब बड़ी खुश थी लेकिन अब..." कहते-कहते रूक गया ऑटो वाला।

"नहीं भैया जीवन में कुछ प्रसंग ऐसे होते है, जो न जीने देते हैं और न मरने देते हैं" कहते-कहते उदास हो गयी कुछ नहीं बोल पायी।

ऑटो वाले ने भी ज्यादा कुरेदना अच्छा नहीं समझा और चलता रहा।

❑

सबसे ज्यादा मनुष्य तब दुखी होता है जब कोई अपना सबसे प्रिय साथी कोई बात छुपाता है। दिव्या को यह बात गले नहीं उतर रही थी कि मोहित ने अपनी बीमारी के सम्बन्ध में उसे फोन तक नहीं किया। जब हॉस्पीटल गया तो फोन भी कर सकता था क्या हम उसके कुछ नहीं लगते। लगता उसने मुझे पराया समझ लिया। जब तन-मन से हम दोनों एक दूसरे के हो चुके हैं तो फिर छुपाव कैसा पति-पत्नी होने के केवल फेरों की हो तो कमी रह गयी है, शारीरिक मिलन तो हो ही चुका है फिर गोपनीयता कैसी।

लेकिन फिर भी समझ से परे घोर दुःख भी था और असमंजस भी आख़िर वह हमसे कुछ छिपा रहा है।

जो भी हो खैर मुझे इन बातों पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए और खोज करनी चाहिए।

घर वाले भी चिंतित थे। माता पिता दोनों अपनी इकलौती सन्तान को दुःखी नहीं देख सकते। अपनी बेटी की उदासी को देखकर उन्होंने पूछा - "तेरे मन में क्या चल रहा है, तेरा दुख हम समझ रहे हैं लेकिन मोहित की भी कुछ जिम्मेदारी बनती है, कम से कम एक फोन तो किया होता।

"पापा हो सकता है उसकी कोई मजबूरी हो, ज्यादा तबियत खराब हो, किसी को फोन करने का अवसर न मिला हो।" दिव्या ने अपने पापा को झूठी दिलासा देते हुए कहा।

माँ-बाप बच्चों से कुछ ज्यादा अनुभवी होते हैं इस जमाने की बातें अच्छी तरह समझती है लेकिन फिर भी पूछ लिया-

"तो तुम चाहती क्या हो?"

"पापा मैं एक बार मोहित को देखना चाहती हूँ, एक बार मिलकर पूछना चाहती हूँ।"

''लेकिन बेटी कहाँ जाओगी तुम्हें अपनी ड्यूटी भी तो जाना है, कल भी नहीं गयी। ऐसे रोज-रोज तो नहीं चलता। आख़िर नौकरी का तुम्हारा पहला ही वर्ष है जॉब को थोड़ा सीरियस लो।''

''पापा आज और छुट्टी कर लेती हूँ मैं अपने बॉस को फोन करके बता देती हूँ।''

''ऐसे कहाँ ढूँढ़ोगी तुम उसे?''

पापा उसके पड़ोसी ने कैलाश हॉस्पीटल का पता बताया था। वहाँ जाकर देखती हूँ हो सकता है वहाँ कुछ पता चल जाये।''

''ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी पिता ने इतना ही कहा।

नोएडा सिटी स्थित कैलाश हॉस्पिटल पहुँचते ही रिशेप्सन पर जाकर पूछा - ''मोहित नाम का पेशेन्ट लगभग दस दिन पहले यहाँ आया था। कृपया आप बता सकते हैं उसके बारे में। रिशेप्सनिस्ट ने कहा- ''एक मिनट मैडम मैं अभी सर्च करके बताता हूँ।''

''हाँ मैडम ग्यारह दिन पहले एक पेसेन्ट आया था टम्टापुर गाँव से जाँच आदि के बाद वे लोग उसे दिल्ली किसी बड़े हॉस्पिटल में ले गये हैं जैसा कि यहां डॉक्टरों ने उसे सलाह दी थी। शायद वो एम्स की बात कर रहे थे।''

''ऐसा क्या हुआ था मोहित को जो यहाँ इलाज नहीं हो पा रहा था।''

''नहीं ऐसी कोई बात नहीं मैडम अपनी कोई मजबूरी भी रही होगी। हाँ रोग के लक्षण कुछ ठीक नहीं थे, उन्हें परमानेन्ट इलाज चाहिए था, इसीलिए किसी सरकारी हॉस्पीटल में ले गये होंगे।

''अच्छा थैन्क यू।'' ही निकला घबरायी हुई दिव्या के मुख से। लेकिन मन में प्रश्न था अब कहाँ ढूँढ़ा जाये मोहित को? लेकिन दिव्या ने मन में गाँठ बाँध ली थी कि उसे खोजकर ही रहेगी। आज काफी थक चुकी थी इसलिए आज की खोज यहीं स्थगित कर अगले दिन से खोजने का मन बना लिया।

घर लौटते हुए मन में तरह-तरह के प्रश्न उछल कूद कर रहे थे। ''क्या मैं कुछ नहीं लगती उसकी, मुझे तो ऐसा भुला दिया जैसे मैं कोई अन्जान हूँ। आख़िर मेरा भी हक है उस पर। यदि पैसा इत्यादि की जरूरत थी तो उसे बताना चाहिए था। मेरी-तेरी की कोई जगह नहीं थी उन दोनों के बीच में क्योंकि उन दोनों की आत्मा का मिलन हो चुका था, जीने मरने की कसमें खाई थी। मोहित पर खूब गुस्सा भी आ रहा था लेकिन कर भी क्या सकती थी? आज घर लौटने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं था परन्तु उसे ढूँढ़ने के लिए मन में दृढ़ संकल्प ले लिया था चाहे कुछ भी करना पड़े। मिलकर पूछना ही होगा क्योंकि उसकी अर्धांगिनी बनने जा रही थी, फिर उससे छिपाव कैसा।

सुबह ड्यूटी पर जाना सायं ४ बजे वापस आना फिर रोजाना किसी न किसी हॉस्पीटल जाना किन्तु सायं को निराश लौटना। एम्स जाकर भी देख लिया वहाँ भी कोई सुराग नहीं लगा। नयी सुबह नयी उमंग लेकिन सब व्यर्थ रात को थकी हारी लौटना। सुबह ड्यूटी पर जाना सायं को खोजना यही क्रम कई दिनों चला कुछ खाना न पीना, दिन भर की भाग दौड़, थककर चूर, लेकिन मन में जीवटता उसे ढूँढ़ने की, लेकिन व्यर्थ। माता ने सायं को समझाया, ''बेटा इस प्रकार क्यों अपना जीवन, कैरियर बरबाद कर रही हो। किसी भी कार्य में तेरा मन नहीं लग रहा, खाना-पीना भी तेरा ठीक से नहीं हो पा रहा है, ऐसे कब तक चलेगा?''

''मम्मी जब मैंने संकल्प कर लिया है तो उसे खोजकर दम लूँगी। चाहे मेरे शरीर का कुछ भी हो। मैं उसके बिना नहीं जी सकती। उसने मुझे नहीं बताया इसका मुझे भी मलाल है। लेकिन सब एक जैसे तो नहीं होते माँ।''

''बेटा ठीक है तेरा कहना, तुझे कल से बुखार भी आ गया है अब तू कुछ दिन आराम करले कुछ छुट्टी ले लो, अपने भी स्वास्थ्य का ध्यान रख।

''माँ मुझे कुछ नहीं होगा। हल्का बुखार ही तो है कल तक ठीक हो जायेगा।''

माँ ने कहा, चल तुझे कहीं दिखा लाते हैं?

नहीं माँ सुबह तक ठीक हो जाऊँगी, चार पाँच दिन की थकावट से मुझे हरारत आ गयी होगी।

''अच्छा तो ठीक है अब तू आराम कर सुबह देखेंगे।'' लेकिन सुबह तक बुखार नहीं उतरा तो माता पिता को चिंता हुई पता नहीं क्यों यह अपनी जान देने पर उतारु है, चलो कहीं इसे आज ले चलते हैं।''

दिव्या जब सुबह उठी तो मम्मी पापा ने कहा बेटा तैयार हो जा डॉक्टर के पास चलना है।'' दिव्या ने ना-नुकुर भी किया, लेकिन माता-पिता ने नहीं माना।

अच्छा ठीक है मम्मी मैं पास वाले डॉक्टर से दवा ले लूँगी आप चिन्ता न करें।

''ठीक है'' माँ ने कहा।

दवा लिये आज चार दिन हो चुके थे फिर भी कोई सुधार न हुआ तो माता-पिता को अधिक चिंता हुई।

''बेटा अपने बुखार की जाँच करा लो पता नहीं, आजकल तरह-तरह के बुखार चल रहे हैं, पिता नवीनचन्द्र ने कहा।

''हाँ पापा आप सही कह रहे हो। आज ही जाँच करा लेंगे।

मम्मी के साथ दिव्या हॉस्पीटल पहुँची डॉक्टर ने देख भालकर के कुछ टेस्ट लिख दिये जिसमें सी.वी.सी. भी था। जाँच की रिपोर्ट आने के बाद देखकर दंग रहा गया कि दिव्या को एच.आई.वी. पोजीटिव के लक्षण हैं। डॉक्टर कुछ देर शान्त रहा।

''क्या हुआ डॉक्टर साहब कुछ बतायेंगे भी मुझे क्या हुआ है?''

''नहीं-नहीं आपको कुछ नहीं हुआ है, आप ठीक हो जायेंगी, घबराने की कोई बात नहीं है'' डॉक्टर उदास मन से बोला।

''नहीं-नहीं डॉक्टर साहब आप कुछ छिपा रहे हो।''

''नहीं-नहीं छिपाने की क्या बात, रोग कभी छिपाने से ठीक तो नहीं होता।''

''तो फिर बताइये मुझे कहीं डेंगू तो नहीं हुआ है''

''नहीं आपको डेगूँ नहीं हुआ है।''

''फिर''

''हो सकता है थकान की वजह से कुछ सेल्स कम हो रही हैं मैं चाहता हूँ कि आप एक बार राम मनोहर लोहिया जाकर एक जाँच और करा लो तो कुछ नतीजे पर पहुँचा जा सकता है और हो सके तो आज ही करा लो, बीमारी को ज्यादा पालना ठीक नहीं होता है।'' डॉक्टर ने अपने मन का असमंजस छिपाते हुए कहा।

''क्या आपको इस जाँच पर भरोसा नहीं है'' दिव्या बोली

''नहीं ऐसी बात नहीं है कभी-कभी रिपोर्ट बिना मतलब का सन्देह पैदा कर देती है मैं चाहता हूँ कि सेल्स जिस प्रकार से कम हो रही है, उसकी सही जाँच केवल राम मनोहर लोहिया में ही हो सकती है, होने को तो एम्स में भी हो जायेगी, लेकिन वहाँ समय अधिक लगेगा, यह आपके पास में भी है, बाजार में जाँच कुछ महँगी हैं, इससे तो अच्छा यही है कि आप वहीं करा लें और वहाँ अच्छे एक्सपर्ट भी हैं, अच्छा इलाज भी हो जायेगा।''

''डॉक्टर साहब मुझे घबराहट हो रही है मैं ठीक तो हो जाऊँगी'' दिव्या ने घबराते हुए कहा।

''अरे कैसी बात करती हो मैडम, हिम्मत रखो सब ठीक हो जायेगा केवल बुखार ही तो है।''

इतनी बात कह तो दी डॉक्टर ने दिव्या को समझाने के लिए लेकिन हकीकत कैसे बताये, उसे यह साधारण बुखार नहीं है वह एच.आई.वी. पोजीटिव है।

''अच्छा डॉक्टर साहब मैं चलती हूँ आज ही दिखा लेती हूँ।''

''हाँ अच्छा होगा आज ही दिखा लें।''

रोगी की जब हिम्मत टूट जाती है, तो अधमरा तो वैसे ही हो जाता है। तभी सब लोग कहते है तुम्हें कुछ नहीं हुआ जल्दी ही ठीक हो जाओगे।

ये सॉन्त्वना के शब्द रोगी को न केवल हिम्मत देते हैं बल्कि जीने का सहारा भी देते हैं। लेकिन प्रमुख बात यह कि रोगी में भी जीने की इच्छा होनी चाहिए। इस मामले में दिव्या कोई जवाब नहीं था। बड़ी हिम्मती थी सोच लिया था कि डॉक्टर ने उसे यदि बड़े हॉस्पीटल जाने की सलाह दी है तो मामला निश्चित ही गम्भीर होगा फिर भी वह निश्चिन्त थी वह जानती थी ऐसी समस्यायें तो जीवन में लगी ही रहती है, हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

हॉस्पीटल से बाहर खड़े ऑटो रिक्शा में बैठते हुए कहा ''राम मनोहर लोहिया।''

माँ उसे समझा रही थी ''बेटा तुझे बुखार है तू आराम से चल परेशान मत हो मैं हूँ न तेरे साथ। हाँ मैं तेरे पापा को फोन किये देती हूँ, वो भी हॉस्पीटल पहुँच जायेंगे।''

''नहीं माँ, पापा को क्यों परेशान करोगी, इसमें कौन सी बड़ी बात है?, हम चलकर दिखा लेंगे, अब मैं कोई बच्ची तो नहीं हूँ।''

''हाँ तू अब बड़ी हो गयी है, ये तो मैं भूल ही गयी थी, मैं ही बेवकूफ हूँ।'' नन्दिनी ने कहा अपनी बेटी को उलाहना भरे स्वर में।

''अरे माँ कैसी बात करती हो मेरा मतलब यह नहीं था कि मैं तुम्हारी बच्ची नहीं हूँ बल्कि मैं समझदार हूँ। इन छोटे-मोटे कामों को खुद कर सकती हूँ। इस छोटे से कार्य के लिए पापा को क्यों परेशान किया जाये। फिर आपने भी तो मुझे यही सिखाया है।''

''जैसी तेरी मर्जी'' थककर माँ ने कहा बात को विराम लगाने के लिए।

इन्हीं बातों के सिलसिले में कब आधा घण्टा बीत गया। ऑटो राम मनोहर लोहिया हॉस्पीटल के गेट पर खड़ा था।

''मैडम लो आ गया हॉस्पीटल'' ऑटो वाला बोला।

''थैंक यू'' ऑटो वाले को पैसे देकर अन्दर दाखिल हुए।

काउण्टर पर रिपोर्ट देखकर उसने दो-तीन बार दिव्या की ओर देखकर पूछा था ''मैडम यह आपकी रिपोर्ट है।''

''जी नहीं यह पड़ोसियों की जब मैं अपने आपको दिखाने आयी हूँ तो रिपोर्ट किसकी होगी'' दिव्या ने झुँझलाते हुए कहा था।

अक्सर देखा जाता है जब व्यक्ति पीड़ित होता है तो उसकी झुँझलाहट बढ़ जाती है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, शायद इसी कारण वह झुँझला उठी थी।

''अरे मैडम आप गुस्सा क्यों होती हैं?''

''नहीं-नहीं सॉरी, थोड़ा परेशान थी इसीलिए...।'' दिव्या बोली।

''ओ.के. कोई बात नहीं आप कमरा नं. 315 में चले जाइये''

लिफ्ट द्वारा तीसरी मंजिल पर पहुँचकर कमरा नं. 315 पर पहुँचकर अपना नम्बर लगाया।

थोड़ी देर इन्तजार करने के बाद दिव्या का नम्बर आया अन्दर पहुँचकर डॉक्टर को अभिवादन किया।

डॉक्टर ने बैठने का इशारा किया और पूछा, ''क्या हुआ मैडम'', दिव्या ने अपनी जाँच रिपोर्ट डॉक्टर के सामने टेबिल पर रख दी और कहा-

''सर चार पाँच दिनों से बुखार आ रहा है जाने का नाम ही नहीं ले रहा है कमजोरी काफी हो गयी है।''

डॉक्टर ने दिव्या की रिपोर्ट देखी और दिव्या से पूछा ''आपके साथ कोई पुरुष जैसे पापा, भाई नहीं आये हैं क्या?''

''नहीं डॉक्टर ऐसी क्या बात हैं'' दिव्या ने सकपकाते हुए कहा।

''नहीं-नहीं ऐसी कोई खास बात नहीं है, मुझे लगता है आपको एक-दो दिन भर्ती हो जाना चाहिए। आपको जल्दी आराम मिल जायेगा। डॉक्टर संयमित स्वर में बोला।

''डॉक्टर साहब आप खुलकर बताइये क्या बात है मैं आम लड़की नहीं हूँ मुझमें सुनने की हिम्मत है और जीने की ताकत भी आप निःसंकोच कहें।''

''आप हिम्मती है यह अच्छी बात है, हिम्मती के अन्दर बीमारी से लड़ने की ताकत होती है और ठीक भी जल्दी हो जाते हैं।'' इतना कहकर रुक गया डॉक्टर।

''अरे डॉक्टर साहब बताइये मैं सुनना चाहती हूँ।'' दिव्या ने जोर देकर कहा।

''आप धैर्य रखिये आप इस रिपोर्ट के आधार पर एच.आई.वी. पोजीटिव है।'' डॉक्टर कहते कहते चुप हो गया कमरे में एकदम सन्नाटा। दिव्या के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी सिर चकराने लगा लगभग गिरने ही वाली थी डॉक्टर ने उसे संभाल लिया।

बड़ी हिम्मत के साथ डॉक्टर से बोली जैसा कि मैंने सुन रखा है कि यह लाइजाज बीमारी है, क्यों इससे बचने का कोई उपाय है।''

''इससे बचने का उपाय हिम्मत और जीने की इच्छा है और उचित इलाज'' डॉक्टर ने संक्षिप्त जवाब दिया।

एक बार पुनः हिम्मत बटोरकर दिव्या ने पूछा - ''तो डॉक्टर साहब मुझे अब क्या करना होगा?''

''आपको दो तीन दिन यहाँ भर्ती रहना पड़ेगा, कुछ आवश्यक जाँचें भी की जायेगी बीमारी की सही स्थिति भी निकलकर आ जायेगी और बुखार भी नॉरमल हो जायेगा।''

''ठीक है डॉक्टर साहब जैसी आप सलाह दे रहे हैं वैसा ही करूँगी।'' मैं अपनी ऑफिस छुट्टी के लिए फोन किये देती हूँ। डॉक्टर ने पर्चा दिया और कम्पाउण्डर को बुलाकर उन्हें भर्ती कराने को कहा।

भाग्य चार कदम हमेशा आगे चलता है, भविष्य के रंगीन सपनों को सजाना एवं ताना बाना बुनना हमारा काम है, लेकिन उसे पूरा कराना ऊपर वाले के हाथ में है। दिव्या भी इसी प्रकार रंगीन, हसीन सपनों में खोयी अपने प्राण प्रिय से मिलने को आतुर थी, विवाह के बंधन में बँधने को आतुर थी। नयी उम्मीद को पंख लगने वाले थे। आसमान में उड़ने की इच्दा थी उसे सजना था संवरना था लेकिन यह क्या अजीब संयोग। मुँह से केवल इतना ही निकलकर रह गया, जो खुदा को मंजूर।

इतना सोचते हुए कमरे से बाहर निकल आई। माँ को अपनी बाँहों में कस लिया। माँ तू परेशान मत हो मैं जल्दी ठीक हो जाऊँगी।

माँ को कुछ समझ नहीं आ रहा था, आख़िर उसे हुआ क्या है?

''अरे बेटी बता तो आख़िर तुझे हुआ क्या है? डॉक्टर ने क्या बताया मुझे भी तो बता... अनेकों प्रश्न उछाल दिये एक ही श्वॉस में।'' दिव्या की माँ ने।

दिव्या ने मन ही मन सोचा अगर मैं टूट गयी तो माँ पहले ही टूट जायेगी। अगर माँ को कुछ मालूम पड़ा तो इन्हें संभालना मुश्किल हो जायेगा।

छिपकर अपने आँसू पौंछते हुए माँ को संभालते हुए कहा, ''माँ बुखार ठीक नहीं हो रहा है इसलिए यहाँ भर्ती होने का फैसला ले लिया है, आप फोन करके पापा को बता दो अभी दो तीन दिन यहीं रहूँगी तो जल्दी ठीक हो जाऊँगी।''

''अच्छा चलो माँ भर्ती की प्रक्रिया पूरी कराते हैं।''

माँ बड़ी असमंजस में थी ऐसा बुखार तो उसे कई बार आया था लेकिन उसे कभी भर्ती नहीं होना पड़ा यह कुछ छिपा रही है। ज्यादा जोर नहीं देना चाहती थी। सोच रही थी कि कहीं डेंगू बगैरह होगा, बताना नहीं चाह रही। जब डॉक्टर ने सलाह दी है तो भर्ती कराना ही उचित है। जल्दी ठीक हो जायेगी। इतना सोचते हुए आगे बढ़ी। हॉस्पीटल में ऐसे रोगियों के लिए अलग ही वार्ड था। जिनके साथ बड़ा सहानुभूति पूर्वक व्यवहार किया जाता था एवं उचित देख-रेख भी की जाती थी। कुछ प्रारम्भिक लक्षण वाले रोगी आते तो कुछ गम्भीर किस्म के भी सही एक ही वार्ड में होते थे।

एच.आई.वी. वार्ड में प्रारंभ में ही एक बेड पर लेटने का इशारा करते हुए कम्पाउण्डर ने कहा, ''मैडम लेट जाइये मैं कुछ ड्रिप बगैरह लगा देता हूँ।

पैथालॉजी को सैम्पल भी जा चुका था।

वार्ड में घुसते ही ऊपर बोर्ड देखकर दिव्या की माँ भी समझ गयी थी, आख़िर उसकी बेटी को क्या हुआ है?

हृदय अन्दर ही अन्दर क्रंदन कर रहा था, चीत्कार कर रहा था, रूदन कर रहा था कि जिस बेटी की सगाई की बात चल रही थी, उसके भविष्य की नींव लिखी जानी थी। जिन्दगी के रंगीन बगीचे में प्रवेश करना था, एक नये युग का सूत्रपात होना था, दो आत्माओं का मिलन होना था। वहाँ ऐसा घोर संकट शायद ही कोई कठोर दिलवाला ही इस बात को पचा सकता था। कमजोर दिलवाला तो कम से कम नहीं।

दिव्या चुपचाप अपने बिस्तर पर एक ओर मुँह किये शान्त भाव से लेटी हकीकत की दुनिया सोचने पर मजबूर हो गयी थी। आख़िर उसे ऐसी बीमारी क्यों हुई। कुछ समझ नहीं आ रहा था, लेकिन एकाएक मन में तरंगे उठती है कि कहीं मोहित के साथ बनाये गये शारीरिक सम्बन्ध का तो प्रतिफल नहीं है। एकाएक अपने ही मन में नहीं ऐसा नहीं हो सकता वह तो मेरा प्राण प्यारा है। उसके साथ तो आजीवन सम्बन्ध बनाने थे। वह तो केवल प्री-टेस्ट था। लेकिन मन नहीं माना कहीं मोहित तो एच.आई. वी. पोजीटिव तो नहीं। मन मानने को तैयार नहीं था। उसने तो मेरे अलावा किसी भी लड़की की तरफ आँख उठाकर देखा भी नहीं था। वह उसे भली भाँति जानती थी। फिर मोहित का स्वभाव भी ऐसा नहीं था। खैर जो भी हो मोहित और अपने मध्य बनाये गये सम्बन्ध से तो कम से कम इस बीमारी के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकते। यह सब तो पति-पत्नी के मध्य होता ही है। पति-पत्नी आत्मा से बनते है। केवल रस्म अदायगी भर शेष थी।

ड्रिप लगातार चल रही थी। दिव्या को सोचते-सोचते कब नींद आ गयी, पता ही नहीं चला।

माँ बेड के पास बैठी उसके सिर पर हाथ फेर रही थी। उसके चिंतन में तरह-तरह के प्रश्न आकर टकरा रहे थे, दिखने में बिलकुल शान्त लेकिन किसी तुफान के आने से पहले की शान्ति बिल्कुल निस्तब्धता चेहरे पर उदासी, हृदय में गम्भीर हलचल किसी को बता भी नहीं सकती और अन्दर रख भी नहीं सकती थी, लेकिन जो भी हो हकीकत को स्वीकार करना नियति होती है। उसे मान लेना और उसके अनुरुप ढ़ाल लेना ही समझदारी का परिचायक होती है।

उसने केवल दिव्या के पापा को फोन द्वारा सूचना दी थी और किसी को बता भी नहीं सकती थी। यही लोक लज्जा उसे व्यथित कर रही थी। मन में हलचल थी, चित्त अशान्त था, मन बेचैन, दिमाग अस्थिर और ऊहा पोह में बेड पर सिर रखे, उसे भी नींद का आगोश समेट रहा था।

''अरे नन्दिनी यह क्या, तुम भी सो रही हो? दिव्या को ड्रिप लगी हुई है, इस अवस्था में तुम्हें नहीं सोना चाहिए।'' दिव्या के पापा आते हुए बोले।

नन्दिनी झटके से जाग गयी। अपने पति को देखकर उससे लिपटकर रोने लगती है।

''यह क्या किया भगवान ने मेरी बेटी को, क्या हो गया, अब हम क्या करेंगे, हम तो कहीं के नहीं रहे, क्या-क्या सपने देखे थे।''

''हे भगवान यहाँ तो शान्त रहो। यहाँ केवल इलाज पर ध्यान दो। ये वार्ड वाले लोग क्या कहेंगे? भगवान के लिए चुप हो जाओ। ये भी सोचो इस पर क्या गुजर रही होगी? इसे सॉन्त्वना देने का समय है। उसे समझाने का समय है न कि अपने आपको कमजोर बनाने का।''

यह सब दिव्या के पापा ने उसकी माँ को समझा तो दिया था लेकिन अपने आप को समझाना बहुत मुश्किल था। दूसरे को दुनिया समझा देती है, जब अपनी बारी आती है तो वह टूट जाता है।

नवीन चन्द्र का दिल क्रंदन कर रहा था, लेकिन रो भी नहीं सकता था, क्योंकि इसका मतलब था नन्दिनी को कमजोर बनाना, दिव्या को कमजोर करना। रोगी के सामने कभी कमजोर नहीं पड़ना चाहिए। जिस माली ने बगीचा बड़े प्रयास से लगाया हो, उसी के समक्ष उजड़ रहा हो तो देख नहीं सकता था सहन नहीं कर सकता था, जिसकी इकलौती बेटी के लिए सब कुछ किया हो। आज इस प्रकार की गम्भीर बीमारी से पीड़ित थी। दिव्या के लिए सब कुछ कर सकता था और करने को तैयार था। सोच लिया था जो भी उसने उसकी शादी के लिए जोड़ी हुई जमा पूँजी सब कुछ लगा देगा अपनी बेटी के इलाज के लिए यदि मकान भी बेचना पड़े तो भी बेच देगा। यह सब मन ही मन ठान लिया था।

बेटी की हर इच्छा को पूरा किया था, अपनी छोटी सी नौकरी होते हुए भी अपनी बेटी को पढ़ाया था। आज जब वह अपने पैरों खड़ी हो गयी थी, जब उसका संसार बसने वाला था तब ऐसी बीमारी।

तरह-तरह के प्रश्न मन को विचलित कर रहे थे तभी अचानक ध्यान भंग हुआ किसी ने कहा- ''राम-राम भाईसाहब'' बिना देखे ही राम-राम तो ले लिया लेकिन मुड़कर नहीं देखा दिव्या के पिता ने। ''क्या बात है भाईसाहब कैसे उदास दिख रहे हैं?'' पुनः वही स्वर सुनायी दिया।

इस बार कुछ झटका सा लगा नवीन चन्द्र ने सोचा यह आवाज तो कुछ जानी पहचानी लग रही है। मुड़कर जरा ध्यान से देखा तो स्तब्ध, अचम्भित, लड़खड़ाती हुई आवाज में ''अरे भाईसाहब नमस्कार'' मोहित के पिता दीनानाथ को सम्बोधित किया लड़खड़ाते हुए स्वर में नवीन चन्द्र ने और प्रश्नोत्तर शैली में-

''आप यहाँ कैसे?''

मन में यह शंका कि इन्हें मालूम कैसे पड़ा कि दिव्या यहाँ है शायद उसी को देखने यहाँ आये हैं।

दीनानाथ का हृदय भी प्रकम्पित हो रहा था कि इन्हें कैसे मालूम हुआ कि मोहित यहाँ भर्ती है और अवस्था ठीक नहीं है। मन ही मन सोच रहा था यहाँ होने का समाचार तो मैंने गाँव में भी नहीं दिया फिर इन्हें किसने बताया? दोनों एक-दूसरे को प्रश्न वाचक दृष्टि से देख रहे थे।

स्तब्धता टूटी जब दीनानाथ ने लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा - ''क्या बताऊँ भाई साहब भाग्य चार कदम हमेशा आगे चलता है, सब कुछ वह नहीं होता जो हम सोचते हैं। नवीन चन्द्र ने भी हाँ में हाँ मिलायी और कहा - ''दुर्भाग्य हमेशा गरीब को ही सताता है, लेकिन आप किस भाग्य की बात कर रहे हैं?''

दीनानाथ ने सोचा अब छिपाने से क्या लाभ बताने से कुछ भार हल्का हो जायेगा। जो अपनी बेटी का रिश्ता मोहित के साथ सोचकर बैठे हैं। कम से कम इन्हें अँधेरे में न रखा जाये। कहीं और लड़का देख लेंगे तो कलंक से तो बच जायेंगे।

लेकिन दीनानाथ को क्या मालूम था 'जैसे हम भी वैसे तुम भी' वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही है। दोनों की परेशानी एक ही थी लेकिन दोनों एक दूसरे से अनभिज्ञ थे।

नवीन चन्द्र भी मन में विचर कर रहे थे कि इन्हें सब कुछ बताया दिया जाये कि दिव्या इनके मोहित के योग्य नहीं है कहीं और रिश्ता देख ले और अपने बेटे का संसार बसा लें। दोनों के मन में प्रश्नों का सिलसिला चल रहा था।

लेकिन दीनानाथ ने बड़े साहस के साथ कहना शुरू किया ''भाई साहब हमें क्षमा करेंगे, हमने बड़े सपने पाले थे, बड़े दिल से बच्चों को पढ़ाया था, लेकिन ऊपर वाले को कुछ और ही मंजूर है'' कहते-कहते रुक गया।

नवीन चन्द्र समझ रहे थे कि यह दिव्या के बारे में बातें कर रहे हैं। उन्हें सॉन्त्वना बँधा रहे हैं। सोचने लगा जो बात बताना चाह रहे थे शायद इनकी समझ में आ चुकी है।

पुनः दीनानाथ ने भारी आवाज में कहना शुरू किया - ''आप तो जानते ही हैं भाईसाहब मोहित जबसे कोलकाता से आया है, तभी से बीमार है नोएडा कैलाश हास्पीटल में भी दिखाया था वहाँ से यहाँ रेफर कर दिया वह इसी वार्ड में है भर्ती है।'' अपनी साँसे पूरी कर...'' बात पूरी न कर सके आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगे।

नवीन चन्द्र के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी, अरे मोहित भी इसी बीमारी से पीड़ित है, इसका मतलब समझते देर नहीं लगी। दिव्या भी एच.आई.वी. और मोहित भी मतलब निश्चित ही यह बीमारी दिव्या को मोहित से ही आयी है।

लेकिन अफ़सोस ही बचता है करने के लिए, न कुछ कह सकता था न कुछ कर सकता था। बस इतना ही समझाया ''भाई साहब, मैं भी कहीं का नहीं रहा, मेरी भी हालत वही है जो आपकी है। नियति भी बड़ी अजीब खेल खेलती है, आज दिव्या भी इसी वार्ड में भर्ती है, उसी बीमारी से जिस कारण से मोहित...'' कहते-कहते रुक गया और कहने को बचा ही क्या था। 15 दिनों से इस वार्ड में भर्ती होने के कारण अन्य लोगों से चर्चा में इतना जान गया था यह बीमारी होती क्या है और किस-किस कारण से होती है, लेकिन ये कारण उसकी समझ से परे था। अब माथा ठनका कि उनकी दिव्या भी एच.आई.वी. पीड़ित। मतलब दोनों के बीच शारीरिक सम्बन्ध, अनर्थ, घोर पाप, सत्यानाश। यही शब्द उसके मन में आये। अपने आप को कोस रहा था। अपनी मेहनत, मजदूरी, उधारी से पढ़ाया अपना जीवन बरबाद कर दिया लेकिन आधुनिकता ले डूबी। बीच मँझधार में हमें छोड़ दिया तड़पने के लिए। फिर भी ढ़ाँढ़स बँधाते हुए नवीनचन्द्र से कहा -

''भाई साहब होनी को कौन टाल सकता है, चलो कहाँ किस बेड पर है बिटिया दिव्या।''

दोनों चल दिये अन्दर वार्ड में बेड के पास। दिव्या की माँ ने अपना पल्लू संभालते हुए अभिवादन किया दीनानाथ का और चुपचाप खड़ी हो गयी सिर नीचा करके।

''अब कैसी है बिटिया?'' दीनानाथ ने कुशलक्षेम पूछा।

दिव्या की माँ निरूत्तर कोई क्या उत्तर दे सकता था ऐसी परिस्थिति में। यह आवाज दिव्या के कानों में भी पड़ी हालचाल पूछने वाली। उसने अपने अलसायी आँखें खोलकर देखा तो मोहित के पापा को देखकर सकपका गयी, सहम गयी, आँख नीचे किये हुए प्रणाम की मुद्रा में हाथ जोड़ने की कोशिश की। क्योंकि हाथ में ड्रिप लगी थी, फिर भी पूरी हिम्मत बटोर कर पूछ ही लिया -

''मोहित कैसा है और कहाँ है?''

''मोहित'' रामदीन ने पूछा।

दिव्या के चेहरे पर चमक आ गयी। ''हाँ-हाँ पापा मोहित''

''वो भी इसी वार्ड में अन्तिम बेड पर है'' इतनी बात बड़ी मुश्किल से कह पाया और पीछे मुड़ गया और अपनी स्वॉफी से आँखों से निकलने वाले आँसू पौंछ लिए और अपने आपको संभाला।

दिव्या काफी दिनों से परेशान थी उससे नहीं मिली थी, बेचैन थी आज उस पर नहीं रहा गया, तुरन्त उसने अपनी ड्रिप बन्द की और बोतल पकड़े हुए चल पड़ी।

दिव्या और मोहित के पिता कुछ समझ पाते, तब तक वो लपककर पहुँच गयी मोहित के बेड पर।

''मोहित-मोहित'' आवाज लगाते हुए मोहित के बेड पर बैठ गयी उसे झकझोर कर रख दिया।

''बताया क्यों नहीं तूने, बड़ा बेरहम हो गया है, तूने क्या समझा था, मुझे नहीं बतायेगा, मैं आराम से रह लूँगी, पता नहीं कितने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।''

मोहित की मुश्किल से आँख खुली और लड़खड़ाते स्वर में, ''अरे दिव्या तुम'' कहते हुए मुँह फेर लिया।

'मुँह का फेरना; कोई एकाएक घटना नहीं बल्कि यह पश्चाताप के कारण था। उसे आत्मग्लानि हो रही थी कि दिव्या का जीवन भी कहीं बेकार न हो गया हो मेरे कारण।''

दिव्या ने पुनः झकझोरते हुए - ''मोहित उठो, मुझसे बात करो, तुम्हें जीना होगा मेरी खातिर।''

''क्या बात करूँ दिव्या जी'' आज पहली बार दिव्या को ''दिव्या जी'' कहकर सम्बोधित किया था।

''मेरे जीवन का अवसान निकट है मेरे जीने की इच्छा समाप्त हो चुकी है। मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ, हो सके तो मुझे मरने से पहले मुझे माफ कर देना।''

''किस माफी की बात कर रहे हो मोहित, मैं दिव्या जी नहीं तुम्हारी दिव्या हूँ। जिसने मरने-जीने की एक साथ कसमें खायी हैं, आज खुदा ने भी जो बीमारी तुम्हें दी है, वही मुझे भी दी है। देखो परमात्मा हमें एक-दूसरे से अलग नहीं करना चाहता। हम एक साथ जिन्दगी जीयेंगे। ''नहीं दिव्या जी मेरे अन्दर कुछ ही साँसें शेष है। मैं आख़िरी बार तुमसे एक भीख माँग रहा हूँ।'' मोहित ने कहा।

''क्या बकवास कर रहे हो?''

''बकवास नहीं प्रार्थना समझो तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है, मुझे माफ कर देना।''

''माफी आख़िर किस बात की'' दिव्या ने जोर देकर कहा।

''तुम्हारे साथ सम्बन्ध बनाने की, तुम्हारे जीवन को नरक बनाने के लिए अपने आपको गुनहगार मानता हूँ।'' कहते-कहते रुक गया मोहित। एक दो आँसू ढ़रककर गालों को गीला कर गये।

''नहीं-नहीं मोहित तुम जिम्मेदार नहीं हो मैं ही जिम्मेदार हूँ। अपनी बीमारी के लिए, मैंने ही तुम्हें मजबूर किया था।

दिव्या और मोहित के पापा दोनों खड़े हैं। बैड के पास। लेकिन आज शर्म शंका दोनों नदारद हैं क्योंकि आख़िरी समय में सब कुछ छूट जाता है या छोड़नी पड़ती

है। शायद यही कारण रहा होगा दिव्या और मोहित के वार्तालाप में। दोनों अपने अन्दर की बातें कहना चाह रहे थे।

दिव्या सारी शिकवे शिकायतें भूल चुकी थी, केवल यथार्थ की बात करना चाहती थी।

''मोहित माफ करने की कोई बात नहीं है। माफ तो वहाँ किया जाता है, जहाँ गलती हो यह गलती नहीं यह तो हमने जान बूझकर पूरे होशो हवास में किया था। यह तो हमारी आत्मा का पवित्र मिलन था।''

''नहीं दिव्या जी हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था अब मैं जिन्दा नहीं रह पाऊँगा। समाज में मुँह दिखाने के लायक नहीं है। फिर मेरी स्थिति भी अच्छी नहीं है। बस ऊपर वाला तुम्हें मिलाना चाहता था अन्तिम बार। सो मैंने देख लिया। अब मैं आराम से जा सकता हूँ।'' इतना कहकर मोहित शान्त हो गया।

दिव्या बोले जा रही थी

''मोहित तुझे कुछ नहीं होगा। दुनिया में बहुत से लोग इस बीमारी से पीड़ित है और साथ-साथ जी रहे हैं।''

''लेकिन मैं दुनिया से अलग हूँ, अलग...'' मोहित से बोलना कठिन हो रहा था।

कहते हैं प्रायश्चित कभी-कभी इतना भयंकर हो जाता है कि जीवन में जीने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है। केवल काश लग जाता है, जिसका कोई इलाज नहीं होता है।

''दिव्या ने यह जानने की इच्छा व्यक्त की तुम्हें यह बीमारी कैसे लगी।'' लड़खड़ाते हुए प्रकम्पित अधरों से उसने अपने ज्वाइनिंग के समय वक्त कोलकाता ट्रक से गया था और उसके साथ क्या हुआ, वाली घटना पूरी बता दी। इतना कहते-कहते थक चुका था, साँसे फूलने लगी थी, इस इतना ही कह सका हाथ जोड़कर।

''दिव्या जी मुझे माफ कर देना, माफ कर देना, माफ कर देना।''

कहते-कहते गर्दन एक तरफ झुकी रह गयी।

दिव्या अपने पापा से बोली देखो इसे क्या हुआ। दीनानाथ भी हक्का-बक्का, हल्की-हल्की साँस चल रही थी। तुरन्त आवाज लगने लगी, 'डॉक्टर-डॉक्टर देखो क्या हुआ।'

जब तक डॉक्टर आया, मोहित शिथिल पड़ चुका था, नब्ज टटोली, नाक के पास उंगली लगाकर देखा, हार्ट चेक किया, सब कुछ शान्त।

बस डॉक्टर के मुँह से इतना ही निकला

''फिनिश।''

डॉक्टर क्या हुआ मेरे मोहित को बस यही आवाजें शेष और सामने नश्वर शरीरी मोहित, कमरे में चीत्कारों की आवाज, क्रंदन, रुदन, सिर पटकना बस और कुछ नहीं।

❑

शेखर मेज पर सिर रखकर अपने आपको लाख समझाने की कोशिश करता कि जिन्दगी एक रंगमंच है, जहाँ हमें अभिनय करना होता है। जिन्दगी एक पानी का बुलबुला है। बुलबुला फूटकर पुनः पानी में विलीन हो जाता है। पानी कभी रंग में नहीं डूबता एवं बुलबुला बनने पर खुशी से नहीं झूमता।

जो इस क्रम को समझ जाये वास्तव में जीवन उसी का ठीक प्रकार से चल सकता है। ये सब बातें शेखर जानता तो है लेकिन उन पर चलना कठिन है। अपना प्रशिक्षण प्राप्त कर एस.डी.एम. पद पर तैनात होकर मेरठ जनपद में कार्यभार संभाल लिया था। कार्य भी पूरी ईमानदारी के साथ जिसकी प्रशंसा पूरे नगर में हो रही थी। लेकिन उसके सीने में बैठा एक छोटा सा दिल, उसको आज भी समझाने का प्रयास किया कि चलते रहना ही संसार का क्रम है, उसे यह भी याद आ रहा था, ''कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।''

शेखर के पिता द्वारा एक फाइल तैयार की गयी थी, जिसमें जितने भी शादी के रिश्ते आये थे उन सबके बॉयोडाटा थे। उस फाइल को उसकी ऑफिस में भिजवा दिया था। फाइल का अवलोकन करने के बाद मन बना लिया था। माँ-बाप की कुछ अभिलाषायें भी होती है, आख़िर उनकी सन्तति उन्हें पूरा नहीं करेंगे तो कौन करेगा।

फाइल में लगे बीस बॉयोडाटा पर एक-एक कर नजर डाली एक से बढ़कर एक, प्रशिक्षित, समान पद की, सुन्दर नाक नक्श, बड़े-बड़े परिवारों की लड़कियों के रिश्ते जिन्हें शायद ही कोई ठुकराता। एक बात उसे जो अजीब लग रही थी कि उन सारे फोटो में कृत्रिमता आधुनिक बनावट थी। मन को सन्तुष्ट करने वाली एक भी तश्वीर नहीं लगी। फाइल बन्द करने के बाद एकाएक सोचने लगा उसी नवयौवना सुन्दरी के बारे में, जो उसके साथ कुछ महीनों पहले उसके साथ उसी कम्पनी में काम करती थी। जहाँ वह सॉफ्टवेयर इन्जीनियर के रुप में कार्यरत था। उसे वही छवि याद आने लगी। वो हसीन दिवस जो उसके साथ काम किये थे, जिसमें संजोये थे खूबसूरत सपने जिन्दगी को जीने के लिए जिसकी प्रेरणा से ही वह इस पद तक पहुँच पाया था। वह वास्तव में अप्सरा थी, लावण्या थी, सुशीला थी, पथ प्रदर्शिका भी थी। जितने भी विशेषण उसे दिये जाये उससे कहीं अधिक थी लेकिन वह मंजिल नहीं बन सकी। यह

उसका दुर्भाग्य था। वह लड़की कोई और नहीं दिव्या ही थी। तुरन्त अपनी दराज में अन्दर रखी एक गोपनीय फाइल में से वही पत्र निकाला जिसमें लिखा था -

''मुझे माफ करना शेखर में आपकी जिन्दगी बरबाद नहीं कर सकती मैं एच. आई.वी. पोजीटिव हूँ।''

जो एच.आई.वी. पोजीटिव है वो हमेशा दूसरे की जिन्दगी निगेटिव बनाने की कोशिश करता है लेकिन दिव्या ने शेखर के लिए पोजीटिव ही कार्य किया था, क्योंकि न वह पी.सी.एस. पास करने की शर्त रखती न वह एस.डी.एम. पद पर नियुक्त होता। लेकिन अभी तक उसका धन्यवाद भी नहीं कह पाया था। क्योंकि उस अभिनन्दन समारोह के बाद जिसमें उसने लिफाफा सौंपा था, उसके बाद उससे अब तक मिल भी नहीं पाया था। कार्यक्रम इतना व्यस्त था प्रशिक्षण और तैनाती का और नयी तैनाती पर उसे अपना प्रभाव भी छोड़ना था।

उस पत्र को सीने से लगाकर दो-तीन लम्बी-लम्बी साँसे लीं।

''काश दिव्या तुम मेरे जीवन में होती तो जीवन की शाम नहीं बल्कि हमारे जीवन में दिव्य ज्योति जल रही होती।''

जो भी हो हकीकत को स्वीकार करने में वक्त लगता है लेकिन सीने के अन्दर बैठा छोटा सा दिल उसे मजबूर कर देता है, घुटने टिकवाने पर।

आज एक बार फिर घुटने टेक दिये शेखर ने अपनी स्मृतियों के समक्ष। उसका हाथ एकाएक फोन पर पहुँच गया। रिसीवर उठाकर नम्बर डायल भी हो गया। घण्टी जाने लगी।

फोन रिसीव हुआ किसी ऑपरेटर के द्वारा

''हेलो, सन राइजिंग कम्पनी दिल्ली।''

''हाँ मैं मेरठ से बोल रहा हूँ, क्या साफ्टवेयर इंजीनियर दिव्या से बात हो सकती है।''

''हाँ सर जरा एक मिनट होल्ड करें।''

ऑपरेटर के द्वारा दिव्या के केबिन के लिए कॉल फॉरवार्ड कर दी। दिव्या ने घनघनाते हुए फोन को उठाया।

''हैलो कौन?''

कई महीनों बाद दिव्या की आवाज कानों में पड़ी थी वही मधुरता; दिल को सुकून मिला। इतनी खुशी कि बोल ही नहीं पाया शेखर।

''हैलो कौन? बोलते क्यों नहीं आपको किससे बात करनी है?''

''बात तो आपसे ही करनी है दिव्या जी'' संयमित स्वर में शेखर बोला।

''तो बताइये क्या बात करनी है और आप कौन है और कहाँ से बाले रहे हैं श्रीमान जी?''

''नहीं दिव्या जी मैं श्रीमान नहीं शेखर बोल रहा हूँ।''

आपका शेखर... अरे नहीं-नहीं... आपके साथ काम करने वाला शेखर।''

''अरे हाँ कैसे हो? लगता है भूल से फोन मिला दिया इधर महीनों बाद।''

''नहीं-नहीं भूल से नहीं जान बूझकर बड़ी हिम्मत करके फोन मिलाया है, कहीं बुरा न मान जाये आप!''

''हाँ बुरा तो मैं मान गयी।'' दिव्या बोली व्यंग्यात्मक लहज़े में।

''क्षमा करना'' शेखर धीरे बोला।

''बिल्कुल नहीं''

''क्यों ऐसी क्या गुस्ताखी हो गयी?'' शेखर सिहर गया।

''मैंने कई बार आप से कहा है कि मैं दिव्या जी नहीं बल्कि आपकी मित्र दिव्या हूँ। आज फिर आपने दिव्या जी बोला इसका मतलब मुझे गैर समझने लगे हो।''

''नहीं-नहीं ऐसी कोई बात नहीं?''

''फिर कैसी बात है?'' दिव्या बोली।

''दरअसल आज मन ज्यादा ही बेचैन था आपकी ज्यादा याद सता रही थी, इसलिए रुका नहीं गया फोन मिला लिया। कहीं आपको बुरा नहीं लगे इसलिए फोन नहीं मिलाया था अब तक।''

''बुरा तो काफी लगा था कि आप नाराज हो गये है मुझसे, पी.सी.एस. अधिकारी बनने के बाद कौन याद रखता है, सॉफ्टवेयर इन्जीनियर को? ऐसे तो तमाम लोग मिलते है रोजाना।''

बिना किसी लाग लपेट के मन में जो गुबार था वही निकल गया दिव्या के मुख से।

''हाँ दिव्या यह बात सही है कि बहुत मिलते है सॉफ्टवेयर इन्जीनियर रोजना लेकिन आप जैसा एक भी नहीं मिला जो व्यक्ति की जीवन रेखा बदलने की हिम्मत रखता हो। किस्मत को पलटने की ख्वाहिश रखता हो, कायापलट की कामना रखता हो और मेरे जैसे व्यक्ति को तराशने का काम करता हो। ऐसी इन्जीनियरिंग दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति ने पढ़ी है वो तुम हो सिफ्र तुम। मैं कभी जीवन में तुम्हें भूल नहीं सकता और इस जीवन की बात छोड़िए अगले जीवन में भी बस तुम्हारा ही इन्तजार करुँगा।'' छः महीनों के बाद आज फिर अपने मन की बात कह गया शेखर, अपने मन का हल्का करने के लिए।

''अरे ओ पी.सी.एस. अधिकारी! कैसी बहकी-बहकी बातें करते हो। कहीं घर बसाया या नहीं। पार्टी-वार्टी देने का मन नहीं है क्या?'' बात को घुमाते हुए दिव्या ने कहा।

''घर बसाना इस जिन्दगी में, शायद मुमकिन नहीं।'' कहते कहते रुक गया। फिर अंत में बोला ''छोड़िए दिव्या इस टॉपिक को इस पर फिर बात करेंगे जब मिलेंगे और घर में कैसे हैं अंकल और आंटी।''

बात को बदल दिया क्योंकि दर्द जब हावी होने लगे तो टॉपिक बदलना ही अच्छा होता है।

''अरे शेखर एक बात तो बताना भूल गयी। अगले महीने ५ तारीख को मेरा बर्थ डे है, मैं अपने जीवन का एक बार आख़िरी बर्थ डे माना चाहती हूँ। मम्मी-पापा भी आपसे मिलने को आतुर हैं। आप अवश्य आइये। आप आयेंगे तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।'' दिव्या ने कहा।

''अच्छा ठीक है, मैं जरूर आऊँगा। अपना ख़्याल रखना'' इतना कहकर फोन रख दिया।

❑

बर्थ डे आमंत्रण, शादी का निमंत्रण या सालगिरह समारोह का जिक्र हो तो स्वतः सजावट, चकाचौंध, बैंड-बाजा, डी.जे. संगीत स्वादिष्ट भोजन आदि सब कुछ मन में आने लगता है। मन प्रफुल्लित हो जाता है, उमंगे हिलोरे लेने लगती है। नये-नये वस्त्रों में सजे लोग, एक-दूसरे को आकर्षित करने लगते हैं। चार नये लोगों से परिचय हास, परिहास होगा, मन प्रमुदित होगा।

यही सारे विचार शेखर के मन में चल रहे थे जब से दिव्या ने अपने बर्थ-डे का आमंत्रण दिया था। वास्तव में यह आमंत्रण उसके लिए ही खास नहीं उसकी जिन्दगी के लिए भी खास हो सकता है आज छः महीने के बाद उससे मिलने जा रहा है। यद्यपि वह जानता था जो उसके मन की इच्छा है; शायद पूरी न हो, यह जानते हुए कि वह एच.आई.वी. पोजीटिव है। फिर भी यह मामला अलग था, वह उससे प्यार करता था और प्यार शारीरिक सौन्दर्य से जरूर शुरु हुआ था लेकिन उसकी आत्मा आलौकिक सौन्दर्य की स्वामिनी थी। उसका व्यक्तित्व अद्‌भुत था। उसके विचारों से उसे प्रेम था। वह उसमें शारीरिक सुख नहीं बल्कि मानसिक सुख ढूँढ़ने का प्रयास किया था और उसे मिला भी था।

शेखर को दिव्या का वर्तमान पता मालूम था क्योंकि दिव्या ने फोन पर बताया जो था। दिव्या ने भी फोन पर इसलिए बताया था क्योंकि शेखर उसके घर पहले कभी

नहीं आया था वे दोनों ऑफिस तक ही सीमित थे। मुलाकात भले ही कई महीनों की थी लेकिन वह कभी भी उसके घर की जानकारी नहीं ली थी।

मेरठ से अपनी सरकारी गाड़ी से चलकर दिल्ली पहुँच चुका था। एक-दो जगह पूछकर पहुँच गया रात के ठीक ६ बजे जैसा कि समय दिव्या ने बताया था।

जैसे ही गाड़ी से उतरा दिव्या ने दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया। ''आइये एस.डी.एम. शेखर जी।''

दिव्या उसी के इन्तजार में अपने गेट पर खड़ी थी प्रतीक्षारत।

''अरे यह क्या दिव्या जी मैं तो आ ही गया हूँ।'' शेखर बोला।

''मैंने पहले भी आपसे कहा है कि आप दिव्या जी नहीं बल्कि केवल दिव्या बुलाया करो।''

''हाँ मुझे बिल्कुल याद है।''

''फिर आज दिव्या जी क्यों?''

''क्योंकि आपने भी मुझे शेखर नहीं बल्कि एस.डी.एम. शेखर जी कहकर सम्बोधित किया है।''

''अरे बाबा गलती हो गयी।'' कहते हुए घर की तरफ इशारा किया। ''आइये अन्दर बैठकर इत्मीनान से बातें करते हैं।''

घर का वातावरण बिल्कुल शान्त। जैसी कल्पना की थी वैसा कुछ भी नहीं उसे नहीं लगता था कि बर्थ डे जैसा आयोजन यहाँ है। मन ही मन सोच रहा था आख़िर दिव्या ने यहाँ क्यों बुलाया? असमंजस में पड़ा सोचता हुआ घर के अन्दर दाखिल हुआ, जहाँ दो सज्जन एक अधेड़ पुरुष और एक अधेड़ उम्र की महिला। अनुमान लगाया माता-पिता ही होंगे।

दिव्या ने परिचय कराते हुए कहा ''ये मेरे पिता नवीन चन्द्र और मेरी माता जी श्रीमती नन्दिनी।''

दोनों को हाथ जोड़कर अभिवादन किया शेखर ने। दिव्या के पिता ने एक कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए कहा ''बैठिये एस.डी.एम. साहब''

''नहीं-नहीं अंकल मैं यहाँ एस.डी.एम. नहीं बल्कि दिव्या का मित्र शेखर हूँ, आप मुझे शेखर ही कहियेगा, मुझे खुशी होगी।''

''अच्छा ठीक है बेटा'' नवीन चन्द्र ने कहा।

शेखर इधर-उधर देख रहा है कि कोई तैयारी नहीं है। माँ-बाप के अलावा घर में कोई रिश्तेदार नहीं, परिचित नहीं, पड़ोसी नहीं, यह कैसी बर्थ डे पार्टी।

अपनी जिज्ञासा को छिपा नहीं सका आख़िर पूछ ही बैठा ''दिव्या ने तो फोन पर शायद अपना बर्थडे बताया था....।''

दिव्या के पापा बोले ''सही सुना था बेटा।''

''फिर यहां तो सब कुछ सूना-सूना....।''

बीच में रोकते हुए ''बेटा जिसके जीवन में ही सूनापन हो वहाँ बसंत की कल्पना कैसे हो सकती है?''

''मैं कुछ समझा नहीं अंकल'' शेखर बोला।

''गीत, संगीत, पार्टी ये सब वहाँ शोभा देते हैं जहाँ जीवन में उमंग हो, तरंग हो, मन आनन्दित है, प्रमुदित हो और जहाँ माली के समक्ष ही बगीचा उजड़ने वाला हो वहाँ कैसा समारोह, कैसा उत्सव, कैसा आनंद, कैसा बर्थ डे...।'' कहते-कहते रुक गये, आँखों में आँसू छलछला उठे।

''नहीं अंकल, ऐसा मत कहिए व्यक्ति को जीवन में कभी उदास नहीं होना चाहिए।''

अपने आँसू पौंछते हुए नवीन चन्द्र बोले, ''बेटा तुम और दिव्या दोनों बैठो बातें करो।'' इतना कहकर दिव्या के माता-पिता दोनों अन्दर चले गये।

दिव्या ने चाय नाश्ता की ट्रे मेज पर रख दी और शेखर की ओर चाय बढ़ाते हुए ''लीजिए चाय पीजिए यही है मेरे बर्थ डे की पार्टी!''

''जन्मदिन मुबारक हो दिव्या।'' शेखर ने बधाई देते हुए लायी हुई गिफ्ट उसे सौंप दी।

''यदि आप मुझे जन्मदिन की बधाई दे रहे हैं तो मेरी तरफ से भी औपचारिकता स्वरूप धन्यवाद ग्रहण कीजिए।''

बात को आगे बढ़ाते हुए शेखर बोला - ''एक बात मेरी समझ में नहीं आयी दिव्या आपने यह क्यों कहा कि मेरे जीवन का आख़िरी बर्थ डे है, आना जरूर है।''

दिव्या एकदम दार्शनिक अंदाज में आती है, ''मेरे प्यारे मित्र शेखर शायद आपने वह पत्र ध्यान से नहीं पढ़ा जिसमें मैंने हकीकत स्वीकार की थी, जिसे मैंने आपको अभिनन्दन समारोह में दिया था।''

''खूब ध्यान से पढ़ा था, एक बार नहीं कई बार पढ़ा था। आज भी पढ़कर आया हूँ। वह पत्र मेरे जीवन में किसी लड़की ने पहली बार लिखा था। मैं उसी को प्रेम पत्र समझ सहेज कर रखे हुए हूँ और आख़िरी समय तक रखे रहूँगा। लेकिन मैं फिर भी जानना चाहता हूँ। यदि आप बुरा न माने तो विस्तार से आख़िरी शब्द का मतलब जरूर समझाइये।''

उसी दार्शनिक अंदाज में, ''जीवन और मृत्यु दो ऐसे शब्द है जो मनुष्य के जीवन से कभी अलग नहीं हो सकते। प्रातः काल को सूरज उगता है तो शाम को ढ़लता भी है और ढ़लने के बाद रात्रि की कालिमा अपने घोर अंधकार में सब कुछ

समेट लेती हैं। इसी ढ़लते हुए सूरज के समान मेरी जिन्दगी में कुछ दिन हैं। इसलिए आपसे मिलने की मेरी प्रबल इच्छा थी।'

''जब मैंने अपने माँ-बाप को अपनी मित्रता के बारे में बताया तो उन्होंने आपको बुलाने की सहर्ष अनुमति दे दी। शायद यह सोचकर ही दिव्या की यह आख़िरी इच्छा होगी।''

दिव्या के चेहरे पर उदासी का भाव नहीं बल्कि हकीकत की झलक थी। क्योंकि इसी बीमारी में उसका प्राण प्रिय मोहित काल का ग्रास बन चुका था।

यह सच है कि मोहित काल का ग्रास बन चुका था, उसमें उसकी बीमारी से ज्यादा प्रायश्चित का योगदान था, इच्छा शक्ति की भी कमी का परिणाम था। वह दिव्या को यह बीमारी दे चुका था। इसी के पश्चाताप में जीवन के संग्राम में लड़ने की हिम्मत खो चुका था।

लेकिन दिव्या ने हिम्मत दिखाते हुए अपने माता-पिता की सेवा करने की ठान ली थी। अपने आपको खुश रखने की सोच रखी थी। दवायें, योग, प्राणायाम इन सबसे अपने आपको भुलाने की कोशिश कर रही थी कि उसे बीमारी भी है। इतनी सब बातें दिव्या के दिमाग में घूम चुकी थी।

तभी शेखर पुनः बोला - ''आप शान्त कैसे हो गयी कुछ बताया नहीं।''

दिव्या ने जिस अध्याय को बन्द कर दिया था आज पुनः उसी अध्याय में जाने को मजबूर थी। क्योंकि जो भी मिलता था, केवल हँसी उड़ाता था, और ऐसा तिरस्कार पूर्ण उपहास जो उसकी जीने की उम्मीदों को धुँधला कर देता था। फिर भी हिम्मत बटोरकर कहना शुरू किया। मोहित और अपने अतीत के बारे में - ''कभी आँसुओं की धारा, कभी उसके मिलन की बात पर आँखों में चमक, कभी उसकी मौत का दृश्य, कभी अपनी ढ़लती सायं, कभी उदासी, कभी गम। इस सबके मध्य गालों पर अश्रुओं की धारा अविरल। लेकिन बिना रुके अपनी कहानी का वृतान्त पूरा सुना दिया शेखर को...।

कमरे में कुछ समय के लिए निःशब्दता जैसे तूफान के बाद की शान्ति। उसे सुनकर शेखर भी बोलने की हिम्मत खो चुका था। फिर भी दिव्या को ढ़ाँढ़स बँधाया ''दिव्या मैं पहले ही कह चुका हूँ, यह जिन्दगी का एक हिस्सा था, जो तुम्हारे जीवन से अलग हो चुका है। मुझे लगता है कि कुछ घाव ऐसे होते हैं, जिन्हें भरा नहीं जा सकता। लेकिन मरहम जरूर लगानी चाहिए। जिन्दगी के आख़िरी क्षण तक हिम्मत नहीं खोनी चाहिए। यही एक चीज ऐसी है, जिसके सहारे जीवन को जिया जा सकता है।''

''शायद आप ठीक कह रहे हैं शेखर।'' रूँधे हुए गले से कहा और आगे जोड़ते हुए ''यही सोचकर जीने का मन बनाया था, आपके साथ भी लगभग छः महीने

काम किया कभी एहसास नहीं होने दिया। माता-पिता की अंतिम साँस तक सेवा करना इसी को धर्म समझ लिया था और इसी धर्म को निभाना चाहती हूँ बस।''

''ऐसा कुछ नहीं दिव्या, जीवन में से उदासी के भाव निकालो। जीवन बहुत अनमोल है। इसे जी भरकर जियो। दुनिया में कोई बीमारी ऐसी नहीं जिस पर विजय प्राप्त न की जा सके।''

''आप बेकार में मुझे ढ़ाँढ़स बँधा रहे हैं। इतना सब कुछ जानने के बाद भी।''

''दिव्या मैं तुम्हें कैसे बताऊँ। तुम्हें ढ़ाँढ़स नहीं बँधा रहा बल्कि मैं तो अपना जीवन तुममें ढूँढ़ रहा हूँ। जब तुम ही ऐसी बातें करोगी तेा मेरा क्या होगा?''

''पागल मत बनो शेखर। तुम्हारा जीवन बहुत बड़ा है, तुम्हारे माँ-बाप के सपने हैं। उन्हें पूरा करो और रही बात मेरी जब तक साँस है तब तक हमारी मित्रता रहेगी, इसका वादा करती हूँ।'' दिव्या ने बड़े स्पष्ट शब्दों में समझाने की कोशिश की शेखर को।

''मैं भी अपना फैसला तुम्हें बता चुका हूँ और आज फिर दोहरा रहा हूँ। मेरे जीवन में कोई लड़की है तो पहली और आख़िरी तुम हो।'' तुम्हारे साथ शरीर का नहीं बल्कि आत्मा का रिश्ता रहेगा, यह तुम जानती हो या मैं जानता हूँ। तुमसे अलग मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। भले ही इस जीवन में न मिले लेकिन अगले जन्म तक प्रतीक्षा करूँगा।''

इतना कठोर प्रण सुनकर दिव्या हैरान थी। आख़िर क्या करे? दिव्या ने भी ठान रखा था कि शेखर की जिन्दगी बरबाद नहीं होने देगी। उसे समझायेगी और उसे हकीकत को समझना ही पड़ेगा। तभी तो उसने कहा था ''व्यक्ति को हमेशा समय के साथ चलना चाहिए, समाज के अनुसार भी। लेकिन एक बात याद रखना जो अपने माँ बाप के सपने पूरे नहीं करते वो अपने पितृ ऋण से कभी उऋण नहीं नहीं पो पाते हैं।

''कैसा ऋण और कैसा उऋण मैं नहीं जानता दिव्या, मेरी मंजिल कल भी तुम थी, आज भी हो और कल भी रहोगी। ऐसा मेरा दिल कहता है। तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी। ऐसा मेरा पक्का विश्वास है फिर एक नयी सुबह होगी।''

हारकर दिव्या ने कहा उसे समझाने एवं दिल रखने के लिए कहा - ''मैं मान लेती हूँ यदि ऐसा हुआ तो वह सुबह तुम्हारे नाम होगी।''

''अच्छा दिव्या मैं चलता हूँ, मुझे अभी घर पहुँचना है, मेरे मम्मी-पापा मेरा इन्तजार कर रहे होंगे। फोन करके कह दिया था देर रात तक पहुँचने के लिए।''

''अच्छा अपना ख़्याल रखना अपने लिए न सही मेरे लिए ही।''

''अच्छा बाबा ठीक है'' कहते हुए विदा किया शेखर को।

❑

''हम टुमको कैसा लगता है शेखर'' कैथरीन ने कहा।

''अरे कैथरीन हम तुम्हें कितनी बार बता चुके हैं, टुम ठीक लगता है।'' शेखर ने उसी की भाषा में जवाब दिया।

''टुम मेरी नकल उटारता है।''

''नो, नो। मैं तुम्हारी नकल नहीं उतारता है, जबकि तुम्हें समझा रहा हूँ।''

''तुम ब्यूटीफल लगती हो'' शेखर ने कैथरीन की नाराजगी को दूर करने के लिए कहा।

''एक बार फिर से कहो शेखर।''

''ब्यूटीफुल''

उछलती हुई शेखर के गले लग गयी, ''थैंक यू, थैंक यू'' कहते हुए दो तीन चुम्बन जड़ दिये।

शेखर अवाक रह गया! इस कैथरीन को क्या हो गया? उसने उसे हटाते हुए ''यह सब मुझे शोभा नहीं देता। दूर से ही थैंक यू बोल सकती हो।''

''यह सब तो नॉरमल है, हमारे यहाँ तो चलटा है। इसमें क्या बुरी बाट।''

''नहीं-नहीं आपके लिए कोई बुरी बाट नहीं लेकिन हमारी कल्चर में ये एलाऊ नहीं होता है।''

''किस कल्चर की बाट करते हो शेखर यह सब छोड़ो हम टो टुमसे लव करता है।'' कैथरीन ने बड़े ही सहज भाव से कह दिया।''

शेखर के लिए 'लव' का मतलब ही दूसरा था और कैथरीन के लिए दूसरा। कैथरीन भौतिकवादी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की और शेखर आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का। पश्चिम और पूरब की दोनों दिशाएं, विपरीत ध्रुव उनका कैसा प्यार, कैसा मिलन ये सब महज तन की आग को शान्त करने के तरीके। लेकिन प्यार तो वह होता है जो आत्मा से किया जाता है। तन की खूबसूरती से नहीं मन की खूबसूरती हो।

''अरे चुप कैसे हो गये शेखर, मैंने टुमसे कहा हम टुमसे लव करटा हैं?'' पुनः कैथरीन ने दोहराया।

शेखर का कोई जवाब न सुनकर पुनः बोली ''मैंने आज टुम्हारे देश की जैसी साड़ी पहनी, टीका लगाया, मेकअप किया शायद टुम खुश होगा। लेकिन टुम तो बोलटा ही नहीं। क्या मेरे से मिस्टेक हो गयी।''

''नहीं-नहीं कैथरीन मिस्टेक तुमसे नहीं हुई बल्कि मेरे से हो गयी, जो पिछले पाँच-छः दिनों से तुम पर ज्यादा ही ट्रस्ट कर लिया और हँसकर बोल दिया। तुम्हारी तारीफ भी कर दी, इसी को तुम लव समझ बैठी।

''फिर टुम मुझसे पिछले वीक से मीठी-मीठी बाटें क्यों कर रहे हो?, हम टो समझटा था टुम हमसे प्यार करटा है।'' नई-नई पहनी हुई साड़ी को किनारे की उंगुलियों में लपेटते हुए कहा कैथरीन ने।

''अरे कैथरीन यहाँ बैठो मैं तुम्हें समझाता हूँ'' तुम ब्यूटीफुल हो, यंग हो, तुम्हें यहीं अमेरिका में अपने जैसा यंग मैन सर्च करना चाहिए, वही तुम्हें खुश रख सकता है।''

मेरा क्या मैं इस जन्म में तो क्या अगले जन्म में भी शादी की नहीं सोच पाऊँगा।''

''आख़िर मुझमें कमी क्या है, टुम मुझसे शादी क्यों नहीं कर सकते'' कैथरीन बोली।

''देखो कैथरीन मैं इण्डियन तुम अमेरिकन दो अलग-अलग कल्चर मिलना मुश्किल है। हमारे विचारों का मिलन सम्भव नहीं। रही बात तुम्हारे प्यार की तो तुमने छः दिनों में तुमने मेरे अन्दर क्या देख लिया। तुम्हें यहाँ मेरी मेजवानी के लिए रखा गया है। तुम अच्छी सेक्रेटरी हो सकती हो, अच्छी गाइड हो सकती हो, जैसा कि पिछले दिनों से कर रही हो।''

कैथरीन ने बीच में टोकते हुए कहा - ''मेरी सर्विस में कोई कमी रह गयी क्या?''

''नहीं-नहीं ऐसा नहीं, यू आर वेरी नाइस परसन बट...!''

''बट क्या?'' कैथरीन बोली।

शेखर सोच में डूब गया आये थे हर भजन को ओंटन लगे कपास। ये कहाँ कबाब में हड्डी बनकर आ गयी। पिछले छः दिनों से 'अर्थव्यवस्था और बढ़ते साधन' विषय पर सेमीनार में भाग लेने भारत के प्रतिनिधि के रूप में अमेरिका आये थे और ये पीछे पड़ने लगी।

''टुम कुछ छिपा रहे हो शेखर, मन में कुछ सोच रहे हो।'' वह बोली।

पीछा छुड़ाने के लिए उसके मुख से निकल गया ''मैं एक भारतीय लड़की दिव्या से प्यार करता हूँ और मैं उसी के साथ शादी....'' इतना कहते-कहते रुक गया। सोचने लगा क्या कहने जा रहा है।

''इसका मटलब टुम दिव्या से शादी करेगा पहले क्यों नहीं बटाया? मैं तुम्हारे बारे में नहीं सोचटी। मैंने टो सोचा था कि टुम अनमैरिड हो और तुम्हारे से अच्छा

बॉय मुझे नहीं मिलेगा।'' ख़ैर और कुछ बटाओ दिव्या के बारे में। ये कौन है? और कब शादी करेगा। मुझे बुलायेगा या नहीं।''

''सर आपका ब्रेकफास्ट तैयार है, ले आऊँ क्या?'' अन्दर से आवाज दी कुक डेविड ने। डेविड एक अच्छा कुक था, जिसे इण्डियन डिश बनाना आता था, इसलिए शेखर की सेवा में रखा गया था।

शेखर ने कहा ''तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हें बोल दूँगा।

''अच्छा ठीक है।''

कैथरीन की तरफ मुख़ातिब होते हुए ''हाँ तो तुम बुलाने की बात कर रही थी। जहाँ तक मेरी शादी का सवाल है वो इस जन्म में तो नहीं शायद अगले जन्म हो जाये।''

शेखर छुटकारा पाने की कोशिश कर रहा था, उतना ही फँसता जा रहा था। कुछ और बोल पाता उससे पहले ही कैथरीन बोल पड़ी ''क्या वह तुमसे प्यार नहीं करती?''

''ऐसी बात नहीं है कैथरीन।''

''फिर क्या बात है? तुम्हारी बाटें बड़ी अजीब है, मुझे इन्ट्रेस्ट आ रहा है जरा और बटाओ यदि टुम मुझे अपना फ्रेंड मानटे हो टो बटाओ''

शेखर का चेहरा उदास था ''छोड़ो कैथरीन ये सब बातें। अब घूमने चलते हैं नाश्ते के बाद'' शेखर ने बात बदलने की कोशिश की।

''नहीं-नहीं शेखर अब टो टुम्हें बटाना ही होगा पूरी बाट। टुम उसे प्यार करटे हो और वो भी टुम्हें प्यार करटी है। फिर शादी क्यों नहीं? यदि उससे नहीं कर सकटे टो मुझसे कर सकटे हो।''

कैथरीन की बातों से थककर एवं पीछा छुड़ाने के लिए उसे दिव्या की पूरी कहानी बतायी कि वह एच.आई.वी. पोजीटिव है। इतना कहते हुए शेखर की आँखों से आँसू छलक आये।

''अरे रोटा क्यों है? तू उससे इतना प्यार करटा है। तेरा इलाज मेरे पास है।

आँसू पौंछते हुए आश्चर्य प्रकट करते हुए शेखर ने पूछा ''क्या?''

''अरे हमारे यहाँ टो यह कॉमन बात है ये तो सब चलटा रहता है, यहाँ जहाँ टुम चल रहे हो। इसी वाशिंगटन में एक हॉस्पीटल है जहाँ इसका इलाज होटा है। ''चलो आज तुम्हें दिखाने ले चलटा है।''

नाश्ते को भूल गया उठ खड़ा हुआ ''अच्छा चलो।''

''ब्रेकफास्ट तो कर लो मिस्टर'' कैथरीन बोली।''

''अब ब्रेकफास्ट कौन करेगा? तुमने तो हमारे बुझते जीवन में संजीवनी दिखा दी है। अब इस पर सौ ब्रेकफास्ट कुर्बान कर सकता हूँ। अपनी दिव्या के लिए चलो जल्दी चलो।''

कैथरीन उसे लेकर एक ऐसी जगह पहुँची, जहाँ बिल्कुल आधुनिक तरीके से बना हॉस्पीटल था, जिसके प्रवेश द्वार पर लिखा था ''होप फॉर होपलेस पर्सन।''

''इसका क्या मतलब होता है?'' उस बोर्ड की तरफ लिखे वाक्य की तरफ इशारा करते हुए शेखर ने पूछा।

कैथरीन ने बताया ''अमेरिका में पहली बार ऐसा रिसर्च इन्स्टीट्यूट खोला है, जिसमें एच.आई.वी. पोजीटिव लोगों का इलाज होता है, इसकी दो यूनिट है एक जेन्ट्स के लिए और यह लेडीज के लिए।''

अन्दर जाकर देखा और समझा तो एक नयी ऊर्जा का संचार हुआ शेखर के अन्दर जैसे किसी बुझते दीपक को सहारा मिल गया हो। सोचने लगा अब उसकी दिव्या ठीक हो सकती है। उसकी प्राण प्रिया दिव्या उसकी जीवन संगिनी बन सकती है। उसके जीवन के अधखिले कमल को पुनः सुवासित कर सकती है।

''ख़ैर छोड़ों इन प्रश्नों को'' अपने आप से बतियाने लगा शेखर। वह शादी करे या ना करे यह उसका मन होगा लेकिन यह हमारा प्रण होगा कि उसके जीवन में सुबह की एक नई किरण प्रदीप्त हो।

''अरे कहाँ खो गये मिस्टर शेखर'' कैथरीन बोली।

''अरे खोया नहीं कैथरीन हम तुम्हारा थैंक यू करता है। तुमने तो मुझे जीवन जीने की एक आशा प्रदान कर दी है। आई मीन होप''

''चलो मैं तुम्हारे काम टो आई, मेरे साथ नहीं तो किसी के साथ ये टुम्हारी मैरिज होगी।''

''हाँ-हाँ कहते कहते चुप हो गया।''

''हॉस्पिटल के डायरेक्टर से सारी जानकारी जुटाने के बाद इस नतीजे पर पहुँचा कि तीन से चार महीनों के अन्दर दिव्या यहाँ ठीक हो सकती है। भर्ती सम्बन्धी समस्त जानकारी लेने के बाद, कैथरीन से बोला- ''अब हमें चलना चाहिए।''

''यस-यस'' कहते हुए चल दिये दोनों।

गेस्ट हाउस पर आकर शेखर ने कैथरीन से कहा ''तुम्हें हमारा एक काम करना होगा, करोगी कैथ?''

क्या बटाओ टो सही ये टुम्हारी फ्रेंड कैथ हन्ड्रेड परसेंट हेल्प करेगी। ये प्रामिस करटी है।''

''हाँ हम जानते है फिर भी हमारी रिक्वेस्ट है कि मैं दिव्या को यहाँ भेजूँगा, तुम यहाँ इलाज करवा देना खर्चा भेजता रहूँगा। मैं तुम्हारा एहसान जिन्दगी भर नहीं भूलूँगा।''

''अरे शेखर अब हम जान गये टू हमसे तो मैरिज करेगा नहीं टो दिव्या से करवानी ही पड़ेगी। इतना टो इस इण्डियन फ्रेण्ड के लिए कर ही सकती हूँ।'' माहौल को हँसी में बदलते हुए कैथरीन बोली।

''अच्छा कैथरीन कल मॉर्निंग में मेरी फ्लाइट है अब तुम अपने घर जाओ मैं सुबह ड्राइवर को लेकर सुबह निकल जायेंगे।

कैथरीन ने पुनः ओ के कहने से पहले दो चुम्बन दाग दिये, शेखर के गालों पर अभिवादन स्वरूप अपनी कल्चर के अनुरुप। अब शेखर ने भी बुरा नहीं माना। ''ओ के गुड नाइट, सी.यू. कहते हुए चली गयी कैथरीन।

❑

जब जिन्दगी में चारों तरफ घुप्प अँधेरा हो, आशायें सभी धूमिल हों, सभी कार्य अनिष्ट की ओर संकेत करते हों तब व्यक्ति स्वतः निराश होकर जीवन को केवल काटता है, जीना तो दूर की कौड़ी।

लेकिन यदि कोई फकीर यह कह दे तेरी तो लॉटरी लगने वाली है, तेरे तो अच्छे दिन आने वाले हैं। तेरे जीवन में तो शहनाई बजने वाली है तो घोर निराशा में बैठे व्यक्ति के चेहरे पर तेज आने लगता है, ऐसे लगता है जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। यही स्थिति आज शेखर की थी। फ्लाइट से उतरकर जैसे ही कदम रखा भारत की मिट्टी पर अमेरिका की यात्रा करने के बाद।

मन ही मन शेखर उस कैथरीन को धन्यवाद प्रकट कर रहा था। उसने उन्हीं फकीरों जैसी दुआ दी थी कि तेरे जीवन में रौशनी की किरणें आने वाली हैं। चेहरे पर चमक थी, क्योंकि उसे दिव्या के दिव्य स्वरुप के दर्शन होंगे और उसी दिव्य आलौकिक छटा से उसके जीवन से निराशा के बादल छट जायेंगे। क्योंकि वह दिव्या को ''होप फोर होपलेस लेडी'' के बारे में बताने जा रहा था।

एअरपोर्ट पर उतरने के बाद उसने अपने माँ-बाप को फोन कर सूचित कर दिया था कि थोड़ा लेट हो जाऊँगा। एक मित्र साथ में है उसके घर तक जाना पड़ेगा। आप चिंता मत करना मैं आ जाऊँगा।

बाहर से टैक्सी पकड़ सीधा चल पड़ा दिव्या के घर। थोड़ी देर में वहाँ पहुँचकर टैक्सी से उतरकर सीधा दिव्या के मकान की तरफ, किन्तु देखकर हतप्रभ, मकान पर तो ताला लटक रहा है। ये सिर मुडाते ओले पड़ना वाली बात हो गयी। मन

में सोचने लगा अच्छा सरप्राइज देने आया था इसीलिए फोन पर भी नहीं बताया था। लेकिन यहाँ तो उसको ही जबरदस्त सरप्राइज मिल गया। मन उदास; यही सॉन्त्वना दे पाया काश! मैं पहले फोन कर लेता, तो मालूम तो होता आख़िर गये कहाँ है? कब तक आयेंगे? और भी अच्छा होता सुबह आता। लेकिन व्यथित, चिंतित मन कहाँ मानने को तैयार तुरन्त जेब में हाथ गया। मोबाइल बाहर और उंगुलियां चलने लगी। कान पर फोन पहुँचा तो वही आवाज आप जिससे बात करना चाह रहे हैं, उसका फोन स्विच ऑफ है।'' चिंता बढ़ना स्वाभाविक। तभी मन में आया चलो किसी पड़ोसी से पूछा जाये।

वहीं पड़ोस में सज्जन टहल रहे थे, उन्हीं से जानकारी लेने के लिए प्रश्न किया ''ये नवीन चन्द्र जी का कुछ पता है, ये कहाँ गये हैं?''

''कुछ पता हैं'' हँसते हुए, ''सब पता है, सबको पता है, बेचारे!'' कहकर फिर हँसने लगे।

शेखर को ये हँसी व्यंग्यात्मक लगी फिर भी शान्त रहा और पूछा ''बेचारे! मैं कुछ समझा नहीं, कुछ बताइये ना''

''बेचारे भाग गये मुँह छिपाकर'', उनमें से एक पड़ोसी दंत पंक्ति दिखाते हुए बोला।

''आप सही-सही बताइये न, यदि आपको मालूम है तो, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ आप को।'' शेखर ने विनम्र भाव से पूछा।

''सब हम भी नहीं समझ पाये काफी दिनों तक जब हमें पता चला उनकी वो लड़की विषकन्या है, विषकन्या? बेचारे भाग गये रातों-रात मुँह छिपाकर।

''ये कैसी बात कर रहे हैं आप लोग?'' प्रश्नवाचक मुद्रा में शेखर ने कहा।

''चलो जाने दो, इस अन्जान से बातें करने से क्या फायदा?''

''कुछ पता है, ये कहाँ गये है? मेरा उनसे मिलना बहुत जरूरी है, कुछ बताइये प्लीज!''

''ऐसे लोग कुछ बताकर नहीं जाते हैं, रातों-रात भाग जाते हैं। बेचारे कहीं के नहीं रहे नवीन चन्द। मुँह दिखाने के लायक नहीं छोड़ा उस बेशर्म लड़की ने। कालिख पोत दी अपने माँ-बाप के मुँह पर। कहीं का नहीं छोड़ा छीः-छीः नाक कटवा दी पूरे मोहल्ले की, मुँह सिकोड़ते हुए बोले मोहल्लेवासी।

''कैसी नाक? कैसी कालिख? यों पहेलियाँ बुझायेंगे आप लोग या कुछ बतायेंगे भी। थोड़ा और विनम्र होते हुए शायद कुछ पता लग जाये वैसे तो अन्दर ही अन्दर अधिकारी पना दो रसीद करने को कह रहा था।

अब कुछ और मुँह खोलते हुए, ''अरे वो तो अच्छा हुआ हम लोगों ने मोहल्ले के लड़कों को रोक लिया नहीं तो बेशर्म लड़की की यहीं हत्या हो गयी होती। चलो पाप होने से बच गया, मोहल्ले वालों से। रातों-रात भाग गये नहीं तो हम सब पर हत्या का कलंक लगता, पता नहीं कितनों की जिन्दगी खराब कर दी? नोएडा के एक गाँव के लड़के का क्या नाम? हाँ मोहित को खा गयी। पता नहीं कितनों का हवश का शिकार बनाकर मौत के मुँह में पहुँचा देती। दुश्चरित्र कहीं की, पूरे मोहल्ले को बदनाम कर दिया।'' इतना कह भी लिया और मुँह की लटका लिया पता नहीं, कितने घड़े इनके ऊपर शर्म का पानी पड़ा है।

दिव्या के बारे में काफी देर से सुन रहा था, शेखर आख़िर जब थक गया तो बोलना ही पड़ा। ''आप उस दिव्या के बारे में ऐसी उल्टी सीधी बातें कैसे कह सकते हो, कहने से पहले एक बार सोच लिया होता किसी की इज्जत उछालना ठीक नहीं होता है?''

''अरे ओ बाबू जाओ यहाँ से किस इज्जत की बात करते हो तुम? वह दिव्या नहीं वैश्या थी, एड्स पीड़ित थी कोई देवी नहीं थी। बरबाद कर देती पूरे मोहल्ले को। ये शरीफों का मोहल्ला है, वो अच्छा हुआ पड़ोस में रहने वाले दीपू का। उसे कहीं से पता चल गया उसके बारे में और उसने सावधान कर दिया हम सभी को। पता नहीं कितनी नौजवान पीढ़ी बरबाद जाती इस मोहल्ले की। अच्छा हुआ भाग गयी, यहाँ से।''

''अच्छा बाबू तुम भी यहाँ से चले जाओ। तुम भले घर के लगते हो। अभी दीपू आता ही होगा पता नहीं क्या बवाल खड़ा कर दे। तुम्हें तो ऐसे लोगों से पीछा छुड़ा लेना चाहिए था। चलो तुम्हें मालूम नहीं होगा और अब जब मालूम ही पड़ गया है तो पीछा छोड़ो ऐसे लोगों का।''

''अच्छा ठीक है'' कहकर मुड़ गया शेखर यही सोचकर ऐसी छोटी सोच वाले आज भी दिल्ली का हिस्सा है, ग्लानि होती है ऐसी सोच पर। ख़ैर हमें क्या करना इन लोगों से। धीरे-धीरे चल दिया अपने घर की ओर। मन में रह-रह कर दिव्या के प्रति प्यार के साथ-साथ सहानुभूति भी बढ़ती जा रही थी।

मन में एक ही प्रश्न कौंध रहा था। आख़िर समाज में कब तक इस प्रकार के अंध विश्वास बने रहेंगे 'विषकन्या'। लेकिन तार्किक मन में विज्ञान की कसौटी पर तौलने लगा कि पुराने जमाने में एड्स पीड़ितों को ही विषकन्या कहा जाता होगा। जो दूसरों से संसर्ग बनाकर उन्हें मौत के मुँह में धकेल देती होंगी। खैर जो भी हो पुराने जमाने में, उसे यहीं विराम देकर दिव्या को ढूँढ़ने के लिए उसका व्याकुल मन और अधिक उत्सुक हो गया। मन में एक विचित्र सा प्रश्न जन्म लेने लगा कि कितनी ज़लालत झेली होगी दिव्या ने, कहीं कुछ कर तो नहीं लिया। सही सोचकर सिहर गया ऊपर से नीचे तक।

दिव्या के बिना वह जी नहीं सकता था। होगी किसी के लिए वह विषकन्या वह तो आज भी उसके लिए दिव्य कन्या थी, अमृत कन्या थी। उसके लिए जीवनदान थी। उसका सहारा थी, उसका विश्वास थी, उसकी श्वाँस थी, उसकी धड़कन थी, तड़पन थी, उसकी जिन्दगी भी और उसके बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मन ही मन निश्चय कर लिया था उसके ढूँढ़ने के लिए। यही संकल्प लेकर चल दिया अपने घर की ओर।

❑

अमेरिका से लौटने के बाद शेखर को दो दिन रेस्ट करना था अर्थात अपने घर के लिए समय देना था। माता-पिता से ढ़ेर सारी बातें करनी थीं क्योंकि जब से पोस्टिंग हुई थी तब से इतना समय ही नहीं मिल पा रहा था। दो दिन के उपरान्त फिर मेरठ उसी राम धुन में लगना था अर्थात अपनी ड्यूटी। लेकिन रात को उसे नींद कहाँ आयी उसका संकल्प दृढ़ हो रहा था कि वह दिव्या को ढूँढ़कर ही रहेगा। किसी प्रकार रात्रि बीती सुबह जल्दी उठकर तैयार होने लगा, तभी उसकी माँ ने पुकारा।

''अरे बेटा शेखू चाय नाश्ता तैयार है।''

''आया माँ, चाय नाश्ता तो करूँगा ही कितने दिन से तेरे हाथ का बना खाना मिस कर रहा था। लेकिन मुझे जल्दी जाना है, किसी से मिलने के लिए।''

''कहाँ जायेगा'' इतना कहते हुए माँ ने टेबिल पर चाय नाश्ता की ट्रे रख दी और अपने बेटे के पास बैठते हुए ''ले बेटा खा''

''और नाश्ता करते हुए यह भी देख ले'' उसकी तरफ एक लिफाफा बढ़ाते हुए।

बेटा ने हाथ उठाया ही था तभी बात को आगे बढ़ाते हुए ''बेटा देख इसमें कुछ फोटोग्राफ हैं - ''अच्छे-अच्छे घरों से रिश्ते आये हैं, देख ले तेरी इच्छा होगी तभी हाँ करेंगे, वैसे तो सभी लोग बहुत पीछे पड़े हैं।'' इतना कहते हुए चुप हो गयी।

''अरे माँ कितनी बार मैंने तुमसे कहा है, प्लीज इस टॉपिक पर बात मत किया करो, ऐसे बहुत से लोग हैं जो बिना शादी के भी जीवन गुजार देते हैं।''

''बेटा तू मेरी इकलौती सन्तान है, तेरे पिता जी और मैं अब बूढ़े हो रहे हैं हम चाहते हैं कि अपने सामने अपने बेटा का घर बसा हुआ देख लूँ और जिम्मेदारियों से मुक्त होकर गंगा नहा लूँ।'-'

''अरे माँ गंगा की बात करती है तो चलो कल हरिद्वार कल ही नहलवा कर लाऊँ।'' बात को हल्का बनाने की कोशिश करते हुए शेखर ने कहा।

''अरे बेटा तू नहीं समझेगा कि माँ-बाप के ऊपर भी एक ऋण होता है, उसे उतारकर ही गंगा स्नान किया जाता है या यों समझ ले जिम्मेदारियों से मुक्त होना ही गंगा स्नान है और जब तक ये ऋण नहीं उतरेगा तब तक गंगा स्नान कैसा? और हाँ तेरे मन में क्या है मैं तो नहीं समझ पा रही हाँ कुछ हो तो बता।''

''नहीं माँ ऐसा कुछ नहीं'' दबी हुई आवाज में।

''ऐसा कुछ नहीं तो शादी से मना क्यों करता है। तुझे कोई लड़की पसन्द हो तो बता उसी से तेरी शादी की बात चलाती हूँ।''

''नहीं माँ ऐसा होगा वो जरूर बताऊँगा।''

''बेटा तेरी माँ हूँ, तेरे हर सुख-दुःख की साथी। तेरा दुःख अब देखा नहीं जाता है तू मुझसे कोई बात जरूर छिपा रहा है।''

''नहीं माँ ऐसी बात नहीं।''

''कुछ नहीं, कब तक तू अपनी माँ को बेवकूफ बनायेगा? एक महीना पहले जब तू मेरठ से आया था तब तूने कहा था एक मित्र के यहाँ जा रहा हूँ, जरा लेट हो जाऊँगा और आज जब तू अमेरिका से लौटकर आया है जब भी कह रहा है कि एक मित्र से मिलने जा रहा हूँ, थोड़ा लेट जाऊँगा। आख़िर कौन है वह तेरा मित्र जो माँ-बाप से ज्यादा प्यारा है?''

''अरे माँ आप लोगों से ज्यादा और कौन प्यारा हो सकता है इस संसार में। आप से क्या छिपाऊँगा।''

माँ का लहज़ा कुछ सख्त होता जा रहा था ''यदि तू कुछ छिपा नहीं रहा है तो बता भी नहीं रहा है कि किससे मिलने जा रहा है और उस दिन भी किनसे मिलने गया था। जब से तू लौटकर आया है तू उदास है, तेरे मन में कुछ चल रहा है। आज रात को भी तू सोया नहीं है तेरी आँखे बता रही हैं। अब तू क्यों नहीं बताना चाहता तेरी मर्जी।''

वह क्या बताये अपनी माँ को कि वह उसी दिव्या से प्यार करता है, उसी से मिलने जाता है, जो एच.आई.वी. पीड़ित है और लोगों के अनुसार विषकन्या।

''छोड़ो भी माँ अब ये सब बेकार की बातें लेकर बैठ जाती हो।'' दिखावटी मुस्कान बिखेरते हुए शेखर ने कहा।

''आज मैं जानकर रहूँगी कि तेरे मन में क्या चल रहा है?'' बेटा लाख छिपाने की कोशिश करे लेकिन माँ से नहीं छिप सकता और छिपा भी नहीं सकता, झूठ भी बहुत देकर तक नहीं बोल सकता।

आदमी बहुत देर तक अपनी माँ से झूठ नहीं बोल सकता चाहे वह दुनिया से बोल ले।

शेखर कुछ कह पाता उससे पहले ही उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे। ''माँ मैं ऐसी लड़की से प्यार करता हूँ, जिसकी जिन्दगी का उसे ही पता नहीं है कि कितने दिन की मेहमान है।'' हृदय का गुबार फूटकर कुछ मन हल्का तो हुआ साथ ही दूसरी बात मन में घुस गयी कि कहीं इसका विपरीत प्रभाव न पड़े।

''बेटा प्यार करना कोई अपराध नहीं है, तू जिस लड़की से प्यार करता है, वह तुझसे करती है या नहीं पहली बात। दूसरी वह लड़की ज्यादा दिन की मेहमान नहीं है।'' दूसरा विरोधाभास।

''माँ वह लड़की मुझसे प्यार करती है, लेकिन उसके साथ एक गम्भीर समस्या है।''

''ऐसी कौन सी गम्भीर समस्या है मैं भी तो सुनूँ।''

''वह बहुत बड़ी बीमारी से ग्रसित है''

ऐसी कौन सी बीमारी, फिर जब उसे बीमारी ही है तो उसके पीछे क्यों पड़ा है, तेरे सामने तो तेरी पूरी जिन्दगी पड़ी है। सैकड़ों अच्छी लड़कियाँ इस देश में हैं, फिर उस दिव्या में तूने ऐसा क्या देख लिया जो उसके पीछे पागल बना घूम रहा है।''

शेखर एकदम अचम्भित दिव्या का नाम सुनकर। ''माँ तुम जानती हो, उस दिव्या को।''

''बिल्कुल जानती हूँ उस दिव्या को उसके पिता नवीन चन्द्र को भी उनसे मिल भी चुकी हूँ।''

''आश्चर्य और भी बढ़ गया ''आपने तो हमें कभी बताया नहीं।''

''जब तूने नहीं बताया तो मैं तुझे क्यों बताती?''

इतना कहते-कहते स्वर बदलने लगा माँ का ''जिस लड़की के पीछे तू पागल बना घूम रहा है वह एच.आई.वी. पीड़ित है और तू ऐसी लड़की से शादी करने का मन बना रहा है। अपना जीवन तू बरबाद करने पर क्यों तुला है शेखू। अपने दादा पुरखों का नाम डुबायेगा। ऐसी कुलक्षिणी से शादी करेगा, अपनी जिन्दगी के साथ क्यों खिलवाड़ कर रहा है? तू एक पी.सी.एस. अधिकारी है। अपनी इज्जत का ख़याल कर।''

''माँ तुम इतना सब कुछ जानती हो, कैसे? धीरे से बोला और शर्म से चेहरा भी नीचे हो गया।''

''बेटा संसार में कोई ऐसा काम मत करो जिससे जिन्दगी में पछताना पड़े। सारी बातें दिल की ही नहीं सुननी चाहिए कभी-कभी अपना दिमाग भी इस्तेमाल करना चाहिए। भलाई इसी में है जो तुम्हारे सामने इतने फोटोग्राफ्स पड़े हैं और बॉयोडाटा हैं, इनमें से किसी को चुन लो और अपना घर बसाओ।''

''माँ ये सब तो ठीक है। आप जान ही गयी हो कि मैं दिव्या से प्यार करता हूँ। वह एच.आई.वी. पीड़ित है, ये जरूरी नहीं मैं भी उस बीमारी से पीड़ित हो जाऊँ। मैनें तो उसकी आत्मा से प्यार किया है, उसके तन से नहीं।''

''उसकी आत्मा से प्यार किया है यदि उसकी आत्मा इतनी ही पवित्र है, तो उसे यह बीमारी लगी कैसे। ऐसी कुलक्षिणी को इस घर की बहू बनायेगा। तुझे शर्म नहीं आती। अपने माँ-बाप का नाम डुबायेगा।''

''मैं शादी की बात कहाँ कह रहा हूँ, मैं तो प्यार की बात कर रहा हूँ।''

''अरे प्यार करने के लिए वही मिली इस जहान में और कोई सुन्दरी है ही नहीं उसके अलावा।''

''हकीकत और ज़ज़्बात में अन्तर होता है। हकीकत यह है कि दिव्या शादी योग्य नहीं है। जज्बात यह है कि दिव्या के बिना रह नहीं सकता। इसी अजीब कश्मकश में शेखर नहीं सोच पा रहा अब क्या करे? लेकिन मन में वही प्रश्न - ''माँ सच बताओ तुम्हें ये सब कैसे पता चला आ़ख़िर; और पापा भी इस बात को जानते हैं क्या?''

''हमें कैसे पता तो यह पकड़ दूसरा लिफाफा जिसे एक महीना पहले एक लड़की यहाँ आकर दे गयी थी और रही बात पापा की उन्हें पता है या नहीं। अब तक तो मैंने नहीं बताया लेकिन तू मेरी बात नहीं मानेगा तो आज जरूर बता दूँगी।''

''मम्मी प्लीज मुझे एक साल का समय और दे दो और यह बात पापा से मत कहना नहीं तो पापा का गुस्सा मैं नहीं झेल पाऊँगा और पापा यह सहन नहीं कर सकते क्योंकि वह भी हाई ब्लड प्रेशर के मरीज है। प्लीज मम्मी मुझे एक साल का समय दे उसके बाद आप जो कहोगे वो कर लूँगा।''

''एक साल तक क्या करेगा?''

''माँ मैं अभी अमेरिका से लौटा हूँ। वहाँ ऐसा अस्पताल है जो ऐसे रोगियों को ठीक करता है यदि वह ठीक हो गयी तो ठीक। वरना आप जहाँ बतायेगी मैं वहीं से शादी कर लूँगा।''

माँ ने कहा ''ठीक है एक साल और बिना बहू के रह लूँगी ओर समाज के ताने सह लूँगी आख़िर तू मेरा बेटा है। तेरी खुशी के लिए इतना तो कर ही सकती हूँ। माँ के गले लग गया। ''अरे माँ तुम कितनी अच्छी हो।''

ये तो माँ ही समझ रही थी कि कितनी अच्छी है या फिर बेटे की खुशी के लिए समझौता कर रही थी अपने आप से।

❑

दिनभर की खोजबीन से परेशान सायं काल थककर एक चाय की दुकान पर बैठा दोनों हाथों में अपना सिर रखकर सोचता हुआ शेखर अतीत में खो जाता है। चाय वाला सामने चाय रखते हुए।

''लीजिए साहब ये गरमा गरम चाय, मसाले वाली कड़क चाय, एक बार मुँह से लगाइये और अपनी थकान भूल जाइये।''

''ठीक है यहीं रख दो।'' इतना ही संक्षिप्त जवाब दे पाया शेखर क्योंकि उसकी थकान चाय से दूर नहीं हो सकती थी बल्कि दिव्या के मिलने से जरूर दूर हो जाती। यह बात वही समझ सकता था और कौन समझ सकता था।

चाय को मुँह से लगाया तो मुँह जल गया। उसे ध्यान ही नहीं रहा कि चाय गरम है। जैसे ही ध्यान भंग हुआ तो सामने देखा दो दोस्त आपस में बातें कर रहे हैं और हँसी मजाक भी। मुँह दूसरी दिशा में होने के कारण पहचान में नहीं आ रहे थे। उनकी बातों में कुछ जीवंतता भी, रोचकता थी, हास-परिहास था शायद इसी से ध्यान उस ओर चला गया। गौर से देखने के बाद माथा ठनका यह तो बिल्कुल उसके साथ कम्पनी में काम करने वाला एक साथी मयंक लग रहा है। ध्यान एकाग्रचित किया बिल्कुल यकीन हो गया कि यह मयंक ही है और दूसरा अपरिचित ही मालूम पड़ा, होगा उसका कोई साथी। वह अपनी सीट से उठकर उसकी सीट की तरफ बढ़ा। लेकिन उन दोनों ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। थोड़ी देर वह वहीं खड़ा रहा फिर धीरे से बोला ''एक्सक्यूज मी, क्या मैं आपकी कम्पनी कर सकता हूँ। यहाँ अकेला बैठा था, सोचा आपके साथ थोड़ा हँसी-मजाक कर लूँ तो हमारी भी थकान दूर हो जायेगी।''

''अरे ये कैसे हो सकता है, हमारी कम्पनी में डिस्टर्बेन्स क्यों कर रहे हो?'' इतना कहकर सिर ऊपर उठाया, देखकर दंग। यह तो वही शेखर है जो कुछ समय पहले उसी कम्पनी में सॉफ्टवेयर इन्जीनियर था। सीट से उछल पड़ा मानो एकाएक कोई खोयी चीज प्राप्त हो गयी हो।

''अरे शेखर, पी.सी.एस. टॉपर क्या हाल है? अहो भाग्य मेरे जो यहाँ आपके दर्शन हुए! कैसे हो आप? और सुनाओ;'' एक साथ खुशी में अनेकों प्रश्न उछाल दिये।

''बस ठीक हूँ मयंक'' कहकर चुप हो गया।

''क्या बात है शेखर? कुछ उदास दिख रहे हो। आओ बैठो और बताओ कहाँ पोस्टिंग है आजकल और यहाँ कैसे?'' मयंक ने उत्सुकता वश पूछा।

''क्या बताऊँ मयंक यार! पोस्टिंग तो एस.डी.एम. पद पर मेरठ में ही है। कल ही अमेरिका से दिल्ली आना हुआ। सुबह से कुछ खोज रहा हूँ, लेकिन।'' कहते-कहते रुक गया।

''अरे क्या खोज रहे हो? कहीं दिव्या को तो नहीं खोज रहे हो? हँसी-मजाक में बात आगे बढ़ाते हुए मयंक बोला। क्योंकि वह दिव्या को उसी समय से जानते थे जब वे दोनों एक साथ एक ही केबिन में उसी कम्पनी में काम किया करते थे।

कुछ झेंपते हुए शेखर बोला, ''अब तुमसे क्या छिपाना बात तो कुछ ऐसी ही है। तुम्हें कुछ मालूम हो तो बताओ। मेरी सहायता करो। मैं सुबह से ढूँढ़-ढूँढ़कर थककर चूर हो गया हूँ। यहाँ चाय पीने बैठा था। भगवान जो करता है वो अच्छा ही होता है, उसने तुमसे यहाँ मिला दिया।''

मयंक ने पहले तो कुछ मुँह सिकोड़ा फिर परिहास करते हुए ''क्या अभी भी प्यार करते हो उससे?''

''हाँ यार तुमसे क्या छिपाना?'' धीरे से बोला शेखर।

''उसकी हकीकत जानते हो?''

''हाँ, भली प्रकार से।''

''क्या जानते हो?''

''तुम जानना क्या चाहते हो फिर भी मेरे विचार से वह बहुत अच्छी लड़की है।''

''कितनी अच्छी है यह भी जानते हो?'' व्यंग्य पूर्ण लहजे में कहा मयंक ने। बात और आगे बढ़ाते हुए ''वह कुछ ज्यादा ही अच्छी है। इसी कारण उसे कम्पनी छोड़नी पड़ी। उसे घर छोड़ना पड़ा। समाज के लिए कलंक, नीच गिरी हुई लड़की, तुम उसे अच्छी बता रहे हो।''

''कैसी नीच, कैसी गिरी हुई? ऐसा तुम लोग तो मत बोलो, कभी-कभी परिस्थितियाँ व्यक्ति को नीचा दिखा देती हैं।'' शेखर बोला।

''अब वो जैसी भी हो। यदि तुम उसका कहीं पता जानते हो तो प्लीज मेरी हेल्प करो। बड़ी कृपा होगी मैं आपके सामने हाथ जोड़ता हूँ, किसी की जिन्दगी का सवाल है।''

''अरे शेखर तू एस.डी.एम. है, अच्छी पोस्ट पर है, एक एच.आई.वी. पीड़ित लड़की के पीछे क्यों पड़ा है?''

शेखर विनम्रता एवं व्यग्रता से बोला ''प्रश्न यह नहीं कि कौन-किसके पीछे पड़ा है। अभी प्रश्न ये है कि यदि तुम्हें उसका पता मालूम है तो प्लीज जल्दी बताओ मेरा उससे मिलना बहुत जरूरी है। मैं बाद में तुमसे अवश्य मिलूँगा और तुम्हारे उपकार को ब्याज सहित वापिस करने की कोशिश करूँगा।''

''जब तू इतना परेशान है तो अवश्य बताऊँगा। जबसे उसने कम्पनी छोड़ी है या यो कहें उसे छोड़नी पड़ी है, तब से कल लोकल बस में उससे मुलाकात हो गयी थी। वो आजकल त्रिमूर्ति कम्पनी नज़फगढ़ में कार्य करती है।''

कम्पनी का नाम शेखर ने सुन रखा था, किसी कार्य के सिलसिले में वहाँ उसका जाना भी हुआ था।

''बहुत-बहुत धन्यवाद मयंक तुमने मेरा बोझ हल्का कर दिया है, न जाने सुबह से कहाँ-कहाँ नहीं भटका। अच्छा अब इजाजत दो मैं चलता हूँ।'' घड़ी पर निगाह डाली चार बजने वाला था। ''चलता हूँ अभी उससे मिलना जरूरी है।''

''चलो ठीक है, मिलो अपनी महबूबा से'' चलते हुए व्यंग्य कस दिया मयंक ने।

शेखर ने आज बुरा नहीं माना मयंक का बल्कि धन्यवाद देकर दौड़ पड़ा सड़क पर।

स्टॉपेज से आकर बस पकड़ी सीधे नज़फगढ़ जाने वाली। लगभग पौने पाँच बजे कम्पनी के सामने ही स्टॉपेज पर उतर कर सीधा कम्पनी की ओर। मन में तरह-तरह के प्रश्न उछल कूद करने लगे आ़ख़िर कितनी परेशानियों के बाद दिव्या से मिल ही लेगा आज। इसकी खुशी चेहरे पर आयी ही थी, तभी दिव्या की मनोस्थिति सोचकर चेहरा उदास आ़ख़िर कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा होगा दिव्या को। यही सोचकर आगे बढ़ता गया कि जीवन की कुछ भूल व्यक्ति के जीवन को बरबाद कर देती हैं।

रिसेप्शन पर जाकर अपना परिचय देते हुए ''मुझे दिव्या से मिलना है।'' इण्टरकाम से दिव्या के केबिन में नम्बर लगाया रिशेप्सनिस्ट ने ''हाँ मैडम आपसे मिलने शेखर नाम के शख्स आये हैं।

''ठीक है अन्दर भेज दो।''

''केबिन नं. 107 में चले जाइये आप, पास देते हुए रिशेप्सनिस्ट ने कहा।

शेखर सीधा दाखिल हुआ केबिन नं. 107 में।

दिव्या ने कहा ''आइये एस.डी.एम. साहब''

यह सम्बोधन अच्छा नहीं लगा शेखर को। अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार व्यक्त की - ''दिव्या मैं तुम्हारे लिए कल भी शेखर था आज भी शेखर हूँ और भगवान ने चाहा तो कल... भी।''

अपने आपको सँभालते हुए शेखर बोला।

दिव्या ने शेखर से कहा, ''कल जो भी था वो आज नहीं है और आज जो भी है वो कल नहीं होगा। इन्सान के जीवन का किसको मालूम है?''

दिव्या को अपनी मृत्यु निश्चित दिखायी दे रही थी।

बीच में टोकते हुए शेखर बोला - ''इन्सान के जीवन का किसी को नहीं मालूम, यह तो सही है लेकिन आज तो उसे भरपूर जिया जाना चाहिए।''

''अरे ये सब छोड़ो ये बताओ दिव्या तुमने ये अपना हाल कैसा बना रखा है कितनी कमजोर हो गयी हो और वो मकान कब छोड़ दिया, कुछ तो बताया होता? मैं सुबह से ढूँढ़ता हुआ परेशान हो रहा हूँ। वो तो अच्छा हुआ मयंक मिल गया, जिसने मुझे यहाँ का पता दे दिया। वरना मेरा क्या हाल होता, भगवान ही मालिक था।''

''शेखर तुम क्यों परेशान हो रहे हो। अपने जीवन की खुशियों को क्यों बरबाद करने पर तुले हो? मेरे जीवन की तो सायं ढ़लने वाली है और तुम्हारा जीवन उगते हुए सूरज के समान है, इसे जियो।''

''कैसे जिया जा सकता है, बिना किरणों के। मेरे जीवन की किरण तो तुम हो जो मैं तुम्हें कितनी बार बता चुका हूँ।''

''शेखर तुम हर बार मुझे मजबूर करते हो मेरी हकीकत किसी से छिपी नहीं है। फिर मुझे कौन स्वीकार करेगा जानते हुए कौन मक्खी निगलेगा। खैर... मैंने वो मकान, वो कम्पनी क्यों छोड़ी वो तुम भी जानते हो। मेरे अन्दर जीने की जिजीविषा है। जब तक जिन्दगी है मैं अपने माँ बाप की सेवा करना चाहती हूँ। उनका कुछ ऋण उतारना चाहती हूँ। शायद इसी लिए अब तक जिन्दा हूँ। उस मोहल्ले वालों ने तो पत्थर मारकर मार ही दिया होता...'' कहकर रोने लगी।

शेखर ने किसी तरह ढ़ाँढ़स बँधाया, ''जीवन संघर्षों का नाम है। अभी तुम्हें जीना है, मेरी खातिर। मेरी जिन्दगी की पहली और अन्तिम किरन एवं दिव्य ज्योति तुम हो। तुम्हारे बिना यह जीवन अधूरा है। कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू भर आये। अब कौन किसको ढ़ाँढ़स बँधाये। अंत में शेखर यही बोला घर चलते है, ढ़ेर सारी बातें करनी हैं। आपके मम्मी पापा से भी मिलना है।'' इतना कहकर दोनों चल दिये घर की ओर।

❑

ड्राइंग रुम में दिव्या के माता पिता चुपचाप बैठे हुए शेखर और दिव्या की बातें सुन रहे थे, लेकिन इस मुद्दे पर उनका हस्तक्षेप करना ठीक नहीं समझा, अस्तु चिन्तन मुद्रा में किसका पक्ष लें किसका पक्ष न लें। एक तरफ पक्ष लेते है तो ना उम्मीद है, निराशा है, अन्धकार है और बेबसी भी थी, जो होगा उसको नियत समझ लेने की मजबूरी और यदि शेखर का पक्ष लेते हैं तो एक उम्मीद की किरण है, लेकिन शेखर का भविष्य दाँव पर उसकी उम्मीदें भी दाँव पर हैं, उसके परिवार की आशायें दाँव पर हैं

और सामाजिकता का बुने ताने बाने की उलझन अलग से। इसलिए चुप रहना ही बेहतर विकल्प समझा।

''आप कुछ बोलते क्यों नहीं अंकल आंटी, दिव्या तो मेरी बात सुनने को तैयार ही नहीं है। अब आप ही कुछ कीजिए।'' शेखर ने दिव्या के माता-पिता से आग्रह किया।

''शेखर सही तो कह रहा है बेटी दिव्या'' भले ही अनमने मन से कहा हो शेखर का मन रखने के लिए दिव्या के पापा ने समझाते हुए कहा ''आगे भविष्य किसने देखा है? यदि सच्चे मित्र के रूप में ही सही सलाह दे रहा है, तो मानने में क्या हर्ज़ है।''

आख़िर दिव्या को बोलना ही पड़ा ''पापा आप हम सब भली प्रकार जानते हैं यह रोग लाइलाज है। मोहित का परिणाम हमारे सम्मुख है। दुनिया जानती है कि कुछ नहीं हो सकता लेकिन जब तक ज़िन्दा हूँ आपकी सेवा करना चाहती हूँ, उससे वंचित मत करो।'' कहते-कहते गला रुँध गया।

दार्शनिक मुद्रा में शेखर बोला ''हम अच्छी तरह वाकिफ है शायद। लाभ, हानि जीवन-मरण हैं, सब विधि के हाथ। लेकिन प्रयास हमारा धर्म होना चाहिए। और प्रयास कभी-कभी सफल भी होते हैं। यदि उसमें पूर्ण निष्ठा एवं उम्मीद हो।''

''देखो शेखर यह दर्शन तो सुन भी चुके हैं और पढ़ भी चुके हैं लेकिन बेवजह तुम मिट्टी की मूरत में प्राण फूँकने का प्रयास कर रहे हो।'' दिव्या ने कहा।

''दिव्या अन्तिम बार कह रहा हूँ। मानना न मानना तुम्हारे हाथ में है। किसके जीवन में क्या लिखा है। यह किसी ने देखा नहीं है। हम निन्यानवे फीसदी की बात नहीं करते एक फीसदी के लिए भी तो चांस लिया जा सकता है। जब तक स्वाँस है तब तक आस है। फिर भी तुम ना उम्मीद हो लेकिन में नाउम्मीद नहीं हूँ। अगर तुम्हें अपने माता-पिता की चिन्ता है तो तुम निश्चिंत हो सकती हो। आख़िर मेरी भी तो कुछ जिम्मेदारियाँ हैं, किसी रिश्ते में न सही, इन्सानियत के रुप में ही सही। रही बात तुम्हारी नौकरी की। चलो कल वहाँ एप्लीकेशन लगाये देते हैं, बिना वेतन के स्वीकृत तो हो ही जायेगी। आगे तुम्हारी इच्छा है। यदि मान जाओगी तो मुझे सुकून मिलेगा आख़िर मैं कुछ कर सका तुम्हारे लिए। अन्यथा मैं अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊँगा। अफ़सोस रहेगा कि उम्मीद की किरण मिलने के बाद भी कुछ नहीं कर पाया। बाकी अब तुम्हारे ऊपर निर्भर है।'' इतना कहकर रुक गया, बेवश सा निर्जीव सा। वातावरण शान्त, निःशब्द। शेखर उसके जवाब की प्रतीक्षा में।

कुछ सेकेण्ड, मिनट बीत गये कमरा शान्त, केवल पंखे की चलने की आवाज जो अब तक सुनाई नहीं दे रही थी। स्पष्ट और तेज मालूम होती थी, कोई हलचल नहीं, माता-पिता भी शान्त। काफी देर तक जब कोई जवाब नहीं मिला तो शेखर धीरे

से अपने स्थान पर खड़ा हुआ और माता-पिता की ओर अभिवादन की मुद्रा में, ''अच्छा अब मेरा चलना ही उचित है।''

ज्यों ही शेखर के कदम आगे बढ़ें दिव्या ने धीरे से कहा ''रुको शेखर। लगता है तुम्हें बहुत बुरा लग रहा है। बहुत ज्यादा ही अपने दिल पर ले रहे हो। अब तुम कहते हो तो मान लेती हूँ। लेकिन मुझे अपने जीवन पर भरोसा नहीं है। हो सकता है तुम्हारी दुआएं काम कर जायें। मैं ये नहीं चाहती हूँ कि एक मित्र मोहित जो भौतिक एवं शारीरिक प्रेम के वशीभूत संसार से चला गया और कहीं दूसरा मित्र जो आत्मिक प्रेम के वशीभूत मोह माया, ममता से मुँह मोड़ ले तो मैं इसे सहन नहीं कर पाऊँगी। प्रेमी, मित्र दुनिया में बहुत मिलेंगे पर तुम्हारे जैसा सच्चा इन्सान मेरे ख़याल से किसी को नहीं मिलेगा। हाँ अब मैं तैयार हूँ, तुम्हारी बात टालूँगी नहीं, एक अनन्य मित्र जिसे मैं खोना नहीं चाहती। जैसा तुम कहोगे वैसा ही होगा। कहो मुझे करना क्या है?'' कहकर अपनी निराशा को छिपाते हुए बनावटी हँसी से ही सही शेखर का हाथ पकड़ कर, ''बैठो भी, चल दिये मुँह फुलाकर। आगे की योजना तो बताओ करना क्या है?''

''अहो भाग्य मेरे जो तुम तैयार हो गयी। यदि तुम तैयार न होती तो मेरा क्या होता, उसका तो भगवान ही मालिक है।''

आगे की चर्चा में व्यस्त हो गये शेखर और दिव्या। माता-पिता को आन्तरिक खुशी शायद भगवान मेहरबान हो जाये। कमरे का वातावरण खुशनुमा।

❑

सुबह-सुबह फोन की घण्टी घनघनाती देखकर कैथरीन अलसाई हुई आँखों में अरे इतने सुबह कौन परेशान कर रहा है मुझे। मोबाइल उठाकर देखा, ''अरे यह तो दूसरे देश की आई.एस.डी. कॉल है।

फोन रिसीव करते हुए -

''हैलो?''

''हैलो, मैं शेखर इण्डिया से। हाउ आर यू कैथ?''

''हैलो शेखर! आई एम वेरी फाइन एण्ड यू?''

''आलसो फाइन। शेखर बोला।''

''बोलो माई डीयर मैं टुमारे लिए क्या कर सकता है?''

''मुझे तुम्हारी हेल्प चाहिए।'' शेखर बोला।

''टुमारे लिए तो अपनी जान भी हाजिर है माई डीयर, आर्डर करो।''

''आर्डर नहीं एक रिक्वेस्ट है, जिसे तुम्हें पूरा करना है, आज की फ्लाइट से मेरी फ्रेण्ड दिव्या, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था आज अमेरिका आ रही है, उसके ट्रीटमेण्ट में तुम्हारी हेल्प जरुरी है।''

''यश शेखर, डॉन्ट वरी, इट इज माई जॉब। टुम परेशान क्यों होटा है? हम हैं ना तुम्हारी फ्रेण्ड कैथरीन। जब टुमसे फ्रेण्डशिप किया है। फिर रिक्वेस्ट की क्या बाट है, यह तो मेरा काम है। मैं पूरी हेल्प करूँगी। आख़िर मेरे फ्रेण्ड शेखर की लाइफ का सवाल है, मैं अपनी जान लड़ा दूँगी, उसकी जान बचाने के लिए।''

शेखर बोला, ''मैं तुम्हारा जिन्दगी भर आभारी रहूँगा। अच्छा कैथ टेक केयर।''

''मैं फोन रखता हूँ और हाँ एअरपोर्ट पर दिव्या से मिलने के बाद कॉल करके जरूर बता देना।''

''ओ.के. बाबा, डान्ट वरी।''

मन में उमंग तो थी नहीं फिर भी सज धजकर जो चली थी दिव्या।

शेखर ने गाड़ी का गेट खोलते हुए कहा - ''आज भी तुम वैसे ही सुन्दर लग रही हो जैसी पहली मुलाकात में लगी थी। जब तुम मिठाई का डिब्बा लिए हुए कमरे में दाखिल हुई थी।''

दिव्या एकदम झेंप गयी और बोली - ''तुम्हारी मजाक करने की आदत कब जायेगी शेखर?''

''काश! आदत कभी न जाये। तुम इसी तरह खूबसूरत दिखती रहो। मैं आजन्म तुम्हारी प्रशंसा करता रहूँ।''

''शेखर तुम तो जानते हो हकीकत फिर भी तुम्हारी ज़िद की ख़ातिर जा रही हूँ। मेरा कल का क्या भरोसा। लेकिन एक बात तुमसे मैं जरुर कहना चाहती हूँ।''

बीच में टोकते हुए शेखर बोला ''मैं एक क्या दस बात सुनने को तैयार हूँ बोलो तो।''

''तुम दस नहीं एक ही सुन लो और उस पर अमल भी कर लो।'' अन्दर गाड़ी में बैठती हुई दिव्या बोली।

ड्राईविंग सीट को सँभालते हुए शेखर ने फरमाया ''तो कौन सी बात है दिव्या जिस पर मुझसे अमल चाहती हो।''

गाड़ी एअरपोर्ट की तरफ बढ़ने लगी। गाड़ी के खुले हुए शीशों से प्रकृति की हवा आ रही थी। ''इन हवाओं को साक्षी मानकर तुम एक बात पर अमल करलो कि.. . चलो छोड़ो फिर....।''

कहते-कहते रुक गयी एक गहरी श्वाँस ली। अचानक बात खत्म करने पर आश्चर्य हुआ शेखर को आ़ख़िर ये कहते-कहते क्यों रुक गयी? शेखर ये तो जानता था स्त्रियों का यह चारित्रिक गुण होता है, जब किसी बात पर जोर देना होता है, अक्सर यही ढ़ंग होता है बात करने का। फिर भी पूछ लिया जिज्ञासा वश ''ये तो कोई बात नहीं हुई दिव्या। जिव्हा पर आयी बात को रोकते नहीं हैं।''

''बात जिव्हा पर आयी तो रोकूँगी नहीं कहती हूँ। तुम हमारे लिए इतना कुछ करते हो। मैं तुम्हारे एहसान को तो नहीं चुका पाऊँगी। साथ ही एक एहसान और कर देना।''

''कैसा एहसान दिव्या?''

''तुम अपने मम्मी पापा की बात मानकर कहीं अच्छी लड़की से शादी जरूर कर लेना।'' कहते-कहते गला रुँध गया। जैसे कोई बात ऐसी कह दी हो जो न कहना चाहती हो।

गाड़ी एअरपोर्ट पर पहुँच चुकी थी शेखर ने ब्रेक लगाया और बिना गाड़ी से उतरे हुए दिव्या को जवाब दिया ''दिव्या में कोई एहसान नहीं कर रहा हूँ। मैं तो अपना फर्ज़ निभा रहा हूँ। जहाँ तक दूसरे एहसान की बात है तो ये तो बिल्कुल नहीं करुँगा। तुम्हारा ही इन्तजार करुँगा। तुम्हारा ही इन्तजार किया है, कर रहा हूँ और करता रहूँगा। अच्छा होगा इस बारे में अभी कोई बात मत करो। सिर्फ, अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दो। जब तुम अच्छा होकर लौटोगी तो तुम्हारा शेखर अपनी बाँहें खोलकर अपने आकाश को समेटने के लिए यहीं एअरपोर्ट पर तैयार मिलेगा।''

मन की उमंगों को शब्दों में व्यक्त कर दिया। लेकिन दिव्या ने किस रूप में उसे लिया यह तो वही जानती थी बस इतना ही कहा, ''पहले तीन महीने तो बीतने दो।''

''तीन महीने तो क्या तीन जिन्दगी भी तुम्हारा इन्तजार करना पड़ा तो करूँगा दिव्या। यही इन्तजार मेरे जीवन का सम्बल भी होगा।''

दिव्या आ़ख़िर चुप होकर गाड़ी से नीचे उतर गयी।

नीचे उतरते हुए शेखर बोला ''इन बातों के लिए अभी उम्र पड़ी है, अभी तुम्हारी फ्लाइट का एनाउंसमेंट हो रहा है, चलो।''

विषय परिवर्तित करते हुए और खुशनुमा विदाई देते हुए ''अरे वहाँ जाकर भूल मत जाना। फोन भी कर लिया करना। दिव्या को पता नहीं क्या हुआ। शेखर से लिपट गयी। धड़कने तेज थी। शेखर भी समझ नहीं पाया आज पहली बार दिव्या उसके गले लगी थी, उसने भी अपनी बाँहों में कस लिया, थोड़ी देर बाद अलग होते हुए एक-दूसरे के हाथ पकड़कर दिव्या ने कहा ''शेखर इस जिन्दगी का तो पता नहीं इस

जन्म का भी पता नहीं। आज तुम्हारे गले लगी हूँ और अपने आप को धन्य मान लिया है कि इस युग में भी इन्सान के रुप में देवता निवास करते हैं।''

''अरे मैं कोई देवता नहीं। देवता बना अपने को मुझसे अलग करने की कोशिश मत करो। मैं तुम्हारा शेखर हूँ और यही रहना चाहता हूँ और हाँ जल्दी करो तुम्हारी फ्लाइट तैयार है।''

अपना पासपोर्ट, वीजा टिकट सँभालते हुए ''अच्छा ठीक है बाबा चलती हूँ, अपना ख़याल रखना।'' अपना ख़याल तो तब रख पाता जब उसके ख़यालों से बाहर निकल पाता। ख़ैर फिर भी अपनी भावनाओं को रोकते हुए।

''हाँ मैं तो अपना ख़याल रखूँगा ही तुम भी अपनी पूरी जीवटता के साथ इलाज करवाना और यही ध्यान रखना कि कोई तुम्हारा इन्तजार कर रहा है। अपने लिए न सही मेरे लिए ही ठीक होकर लौटना ओ.के. टाटा-बॉय।''

सिर्फ हाथ हिलाते हुए दिव्या बढ़ गयी अपनी फ्लाइट की ओर। पुनः कैथ को फोन मिलाया।, शेखर का फोन देखकर कैथ बोली ''हाँ शेखर दिव्या निकल ली इण्डिया से।''

''यस कैथ''

''डॉन्ट वरी, आई एम वेटिंग फोर योर लाइफ। माय रीयल हीरो।'' कैथ को जब भी मौका मिलता शेखर से मजाक किये बिना नहीं रहती।

एक का यात्रा में समय बीता और दूसरे का इन्तजार में और इन दोनों के सकुशल मिलने के इन्तजार में शेखर अपना समय बिता रहा था।

आख़िर वह समय भी दिव्या के लिए आ ही गया जब उसने अमेरिका की धरती पर कदम रखा। अजनबी जगह, अजनबी लोग, अजनबी सी भाषा। भले ही इंग्लिश वह जानती थी लेकिन फिर भी अपनी मातृभाषा का टच तो रहता ही है। एअरपोर्ट से बाहर निकलने लगे यात्री गण बाहर अपने-अपने आगन्तुकों के लिए पट्टियाँ हाथ में लिए हुए। उन्हीं पट्टियों के बीच एक पट्टी पर लिखा था। ''दिव्या लाइफ ऑफ शेखर फ्रॉम इण्डिया।''

दिव्या को अनुमान हो गया यही कैथ है, जो हमारे ओर शेखर के बीच रिश्ते को भली-भाँति जानती है। ख़ैर अब जो भी हो, उसी के साथ जाना है। पास जाकर ''आई एम दिव्या फ्रॉम इण्डिया।''

''यस ओ के फ्रेण्ड लाइफ ऑफ शेखर'' कैथ ने परिचय लिया।

''यस-यस'' दिव्या ने संक्षिप्त जवाब दिया।

''आई एम वेटिंग फॉर यू'' कैथ बोली।

''इट इज माय प्लेजर'' दिव्या ने कहा।

''आओ दिव्या चलो पहले घर चलटें हैं हॉस्पीटल कल चलेंगे।'' कैथरीन ने फोन कर शेखर को बता दिया दिव्या आ चुकी है।

❑

कार से उतरते हुए एक विशाल इमारत की तरफ संकेत करते हुए कैथ बोली ''दिव्या सामने देखो क्या लिखा है?''

दिव्या ने नजर दौड़ाई तो ऊपर साइन बोर्ड पर लिखा हुआ पढ़ा ''होप फॉर होपलेस पर्सन''

''क्या यही वह जगह है जहाँ मेरा इलाज होना है?''

''यस-यस'' कैथ बोली।

''चलो चलटे हैं'' दिव्या का हाथ पकड़कर ले जाती हुई।

''आज से यही ठिकाना है आपका, जहाँ से शेखर को नई लाइफ मिलेगी।'' हँसी ठिठोली करती हुई कैथ बोली।

कैथ के घर पर तो एक दिन ही रूकना हुआ था फिर भी दिव्या भी कुछ फ्रेण्डली हो गयी थी क्योंकि कैथ का नेचर भी पोजीटिव था। लेकिन नई जगह, नये लोग, नयी भाषा, नया खानपान, नई वेशभूषा में अपने आपको समायोजित करना कोई हँसी खेल नहीं होता है। यही सब दिव्या के मन में चल रहा था। दिव्या के चेहरे की तरफ देखते हुए कैथ ने भाँप लिया था। कुछ नर्बस हो रही है तभी उसने उसकी भाव भंगिमायें पढ़कर पूछ लिया -

''व्हाई आर यू सो नर्वस दिव्या, आर यू क्वाइट वेल''

''आई. एम. क्वाइट वेल बट...'' कहते कहते रुक गयी।

कैथ ने कहा ''डान्ट सो नर्वस, टेल मी, आई एम विद् यू।''

''इट्स ओ के कैथ।''

''बट व्हाट इज गोइन्ग ऑन इन योर माइन्ड''

''नथिंग'' टालने की मुद्रा में दिव्या ने कहा।

जब टुमने मुझे फ्रेण्ड मान ही लिया है तो क्या छिपा रही हो टेल मी।''

''कुछ नहीं कैथ, बस ऐसे ही।''

वातावरण को हल्का करते हुए ''ओ के मिसिंग यू शेखर।''

''अरे नो यार, अच्छा तो बताओ यहां मैं ठीक तो हो जाऊंगी''

''हण्ड्रेड परसेण्ट दिव्या, थिंक ओनली पोजीटिव एण्ड थिंक समवन इज वेटिंग फोर यू, डोन्ट फोरगेट दिस। तुम्हें अभी जीना है अपने लिए भी और शेखर के लिए भी।''

''कोशिश करूँगी'' यही संक्षिप्त जवाब कैथ को दिया।।

इतनी बातों-बातों में रिसेप्सन पर पहुँच गये। दिव्या के रजिस्ट्रेशन कराने की प्रक्रिया को पूरा करके आगे बढ़ते हुए अगले गेट पर सर्च से गुजरना पड़ा। अगले काउण्टर पर सारी डिटेल लिखवाने के बाद उसे रुम एलोट कर दिया गया और हॉस्पीटल के नियमों सम्बन्धी एक बुकलेट थमा दी गयी। इस सारी प्रक्रिया को कैथ बड़ी आसानी से किये जा रही थी, जैसे इस हॉस्पीटल का उसे काफी अनुभव है।

दिव्या सोच रही थी यह अजनबी हमारे लिए कितना कुछ कर रही है, आख़िर दोस्ती भी कोई चीज होती है। शेखर तो कुछ दिन ही यहाँ रुका था। कैथ कितनी वफादार है, कितनी हेल्पफुल है, अच्छा नेचर है। दुनिया में अच्छे इन्सानों की आज भी कमी नहीं है, कमी है वो बस ढूँढ़ने की। अच्छे इसलिए भी नहीं मिलते क्योंकि हम स्वार्थ का दीपक लेकर चलते हैं। मन ही मन दिव्या प्रार्थना करती है, 'हे प्रभो मेरे साथ जिसने भी उपकार किया है उसे जिन्दगी में कभी न भूलूँ। इसी विचारणीय मुद्रा में कमरे के गेट तक पहुँच गये। साथ आयी नर्स ने कमरा खोलते हुए दिव्या से कहा ''योर वेलकम इन न्यू एवोड फोर न्यू लाइफ''

''इट्स ओ के'' इतना ही कह पायी।

तभी उधर से विजिट करते हुए सीनियर डॉक्टर रिचर्डसन, डॉक्टर के लवादे में हल्की फ्रेंच कट दाढ़ी एवं मूँछें, सिर पर हैट लगाए हुए, गले में स्टेथस्कोप लटकाये डायरेक्ट दिव्या से मुखातिब होते हुए ''योर वेलकम दिव्या इन दिस कैम्पस फोर फ्यू मन्थस, दैन यू विल बी क्वाइट राइट एज अदर्स एण्ड दैन यू विल लिव एज योर नॉर्मल लाइफ।''

दिव्या ने डॉक्टर के चेहरे पर आत्मविश्वास देखा तो कुछ सॉन्त्वना बँधी। यह भी वह जानती थी डॉक्टर हमेशा अपने पेशेन्ट के साथ इसी तरह बात करते हैं।

हल्की सी मुस्कराहट बिखेरती हुई - ''थैंक यू सर''

कैथ ने थोड़ा विस्तृत परिचय देते हुए डॉक्टर से कहा ''सी इज नोट एलोन, सी इज माई क्लोज फ्रेण्ड फ्रॉम इण्डिया एण्ड आई एम. फ्रोस दिस सिटी; प्लीज टेक केयर माई फ्रेण्ड।''

डॉक्टर ने गर्वोक्ति स्वर में कहा ''रिचर्डसन प्रामिस यू योर फ्रेण्ड विल गेट रिकवर विदिन थ्री मन्थस। डाण्ट वरी, नाउ इट इज माइ ड्यूटी, डॉन्ट वरी एबाउट

इट।" इतना कहते हुए डॉक्टर प्रस्थान कर गया। कैथ ने दिव्या का सामान रखवाया और विदाई लेते हुए।

"मैं आती रहूँगी, टुम अपना केयर करना।"

"टुम बहुत अच्छी हो जाओगी।"

"थैंक्स कैथ"

"नो नीड टू थैंक्स दिव्या। इट इज माई ड्यूटी एज आई प्रॉमिस टू शेखर।"

"ओ के बाबा" दिव्या बोली।

"टेक केयर" कहते हुए कैथ चलने लगी। तभी दोनों गले लग जाते हैं, दिव्या को वही अपनी सगी लग रही थी और वहाँ था भी कौन।

दिव्या कमरे में बैठी नियमों की बुकलेट देखने लगी, जो उसे रजिस्ट्रेशन काउण्टर पर दी गयी थी। उसमें सुबह जगने से लेकर रात के सोने तक का विस्तार पूर्वक लिखा गया था, सावधानियाँ एवं बचाव के बारे में भी लिखा था। कहते हैं उपचार से अधिक परहेज काम करता है।

डॉक्टर्स की विजिट नर्सों की देखभाल सब कुछ था। कौन-कौन सी नर्स कौन से डॉक्टर प्रतिदिन देखेंगे क्या इलाज दिया जायेगा, क्या थेरेपी मिलेगी; खाने का क्रम कैसा रहेगा। योग, प्राणायाम का समय सब कुछ तो था, उस बुकलेट में। फिर भी एक नर्स ने आकर अपना परिचय दिया। "आई एम फ्रीडा योर नर्स, व्हाट यू वाण्ट आस्क मी एनी टाइम, आई विल वी प्रजेन्ट हीयर"

"ओ के माई गुडलक" मुस्कुराते हुए दिव्या ने कहा।

डॉक्टर की विजिट और उसके द्वारा बतायी गयी मेडीसिन के साथ विशेष प्रकार की थेरेपी ही प्रमुख थी। साथ ही उसके द्वारा की जाने वाली पोजीटिव बातें ही प्रतिदिन उसे नयी ऊर्जा देने लगी थी। योग प्राणायाम भी उसके जीवन का हिस्सा बन चुका था। नर्सों का मेल-मिलाप उसकी मित्रता में बदल गयी। वहाँ का रहन-सहन, वहाँ की प्रकृति, वहाँ का वातावरण सब कुछ अपना लिया एक महीने में दिव्या ने। अपने आपको तरोताजा महसूस करने लगी और स्वयं भी एहसास हो रहा था कि वास्तव में उसके जीवन में जो निराशा आ गयी थी, उसमें आशा का संचार होने लगा था। एक नई उम्मीद जन्म लेने लगी। एक नया एहसास जीवित होने लगा। जीवन अनमोल है, उसे जिया जाना चाहिए, उसे बरबाद नहीं करना चाहिए। जिन्दगी की आ़ख़िरी श्वॉस तक आशा का दामन हमारे साथ होना चाहिए जिन्दगी जीने का नाम है। ये सब अनायास उसके मन में चल रहा था, उसी कैम्पस में एक झरने के पास बैठी ये सब बातें सोच रही थी। साथ ही प्रतिदिन नया संकल्प लेती थी, अब मैं इस जीवन को जियूँगी।

अब मैं जिन्दा रहूँगी। इस संसार के समस्त सुखों का भोग करूँगी, जिसके लिए इन्सान ने जन्म लिया है। मैं संघर्ष करने के लिए जन्मी हूँ। माता-पिता की सेवा करूँगी, अपनी जिजीविषा को उड़ान दूँगी। जाने कितने विचार मन में उछलकूद कर रहे थे और यह विचार एकाएक और प्रखर हो जाता था कि इस जिन्दगी पर केवल उसका ही अधिकार नहीं है, शेखर का भी है। उसी की बदौलत आज मेरे अन्दर जीने की हिम्मत ने जन्म लिया है। जिन्दगी में रोशनी की एक नई किरण आयी है। मरने के निकट थी मुझे नया जीवन दान मिला है। शेखर की वजह से अब शेखर ही मेरी जिन्दगी है... बस।

इतना सोचते-सोचते आँखों से आँसू की दो बूँदें टपक पड़ी अनायास कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए।

कमरे में दिव्या को न पाकर फ्रीडा भी उसे ढूँढ़ती हुई उसी झरने के पास पहुँची और दिव्या से बोली ''क्या बाट है दिव्या टुम्हारे, आँखों से टीअर कोई प्रॉब्लम है क्या?''

फ्रीडा एकदम सकपका गयी कहीं आज ड्यूटी में लेट तो नहीं हो गयी, कहीं शिकायत न कर दे दिव्या। ''नहीं फ्रीडा ये आँसू किसी प्रॉब्लम की वजह से नहीं बल्कि उम्मीद के समर्थन में निकले हैं, जिन्दगी की जंग जीत लेने की खुशी में निकले हैं। अपनी मोहब्बत के नाम आये हैं'' और पता नहीं क्या-क्या भाव प्रकट हो गये खुशी में। फ्रीडा की समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन इतना हो समझ गयी कि उससे उसे कोई शिकायत नहीं है, यह इसका इण्टरनल मामला है।

''चलो, चलते हैं रूम में, आपकी थेरेपी का समय हो गया है। डॉक्टर रिचर्डसन आपका इन्तजार कर रहे हैं'' फ्रीडा ने कहा।

''ओह यस आई एम सॉरी चलो चलते हैं, इतना कहते हुए चली गयी अपने कमरे की ओर।

❑

कैथरीन से साप्ताहिक मिलन, शेखर और माता-पिता के पाक्षिक पत्र उसको उम्मीद दिलाये रहते थे, उसे ऊर्जा प्रदान करते रहते थे। फिर अपने देश अपनी भूमि की हुडक कभी-कभी मन में आ ही जाती थी। शेखर से मिलने की याद आती थी, आख़िर कब मिलेगा एवं उसका धन्यवाद प्रकट कर पायेगी। उसने कितना उपकार किया है। शायद इस जीवन में तो भुला नहीं पायेगी, अगला जन्म भी छोटा पड़ जायेगा। आख़िर उसने देखा क्या है हमारे अन्दर समाज से कलंकित स्त्री को अपनाने की ज़िद या बेइंतहा मोहब्बत। समझ नहीं पा रही थी। आख़िर एक पढ़ा लिखा नौजवान अच्छी

खासी नौकरी जिस पर दुनिया की कोई भी लड़की अपनी जान न्यौछावर कर दे फिर भी मुझसे मोहब्बत! हे प्रभो! मुझे शक्ति दो मैं उसकी अर्धांगिनी बनकर उसके चरण धो-धोकर पी सकूँ। उसका कर्ज इस जीवन में उतार सकूँ। उसके चरणों की दासी बनकर जी सकूँ।

यही सोचते-सोचते कब उसकी थेरेपी पूरी हुयी, उसे कब निद्रा आ गयी पता ही नहीं चला, डॉक्टर ने भी आवाज लगायी दिव्या ''आर यू क्वाइट वेल'' कोई जवाब न पाकर नर्स को आदेश दिया ''चलो अब इसे सोने दो आराम करने दो'' नर्स वहाँ से चली गयी। कुछ देर बाद डॉक्टर भी चला गया।

दिव्या की नींद कुछ देर बाद खुली तो एक झटका सा लगा, आज उसे थेरेपी के समय नींद कैसे आ गयी। पहले तो कभी थेरेपी के समय नींद नहीं आयी। डॉक्टर एवं नर्स के जाने के उपरान्त ही सोती थी। ...ख़ैर हो सकता है कि शेखर के बारे में कुछ ज्यादा ही सोच गयी थी। ख़ैर जो भी हो प्रतिदिन की तरह डॉक्टर को थैंक यू नहीं कह पायी, इसका अफ़सोस था।

शाम को प्रतिदिन उसी झरने के पास बैठी हुई सोच रही थी। ढ़ाई महीने से ज्यादा का समय बीत चुका है। डॉक्टर भी कह चुका है, अब तुम बिल्कुल ठीक हो। रिपोर्ट भी अच्छी आ चुकी है, कोई कमी नहीं रह गयी, सब कुछ ओ के है। अब तो केवल 7 दिन और शेष रह गये हैं, ये भी निकल जायेंगे, वो हसीन पल अब ज्यादा दूर नहीं, जब वह शेखर की बाँहों की स्वामिनी होगी। माता-पिता के हाथों से आशीर्वाद मिलेगा, इसी तरह के सपनों में खोई उस झरने की निरंतरता को निहार रही थी कि मेरा जीवन भी इसी झरने के समान निर्झर बनकर झरता रहेगा।

दिव्या के जीवन में यह घटना एक सपना था, उसकी जिन्दगी में उम्मीद का दिया जलाया था। उसे प्रतिदिन जीने का साहस दिया था, प्रेम का एहसास दिया था, शेखर से मिलने की आशा दी थी।

तभी अचानक उधर से डॉक्टर रिचर्डसन कुछ ज्यादा ही अनौपचारिक ड्रेस में इत्र बगैरह डाले हुए निकले और दिव्या के पास आकर बोले -

''हैल्लो दिव्या हाउ आर यू?''

''आई एम फाइन थैंक यू सर।''

''मे आई सिट विद यू नीयर दिस फाउन्टेन'' डॉक्टर ने कहा।

''व्हाई नॉट सर इट इज माई प्लेजर टू टाक विद यू'' दिव्या ने निःसंकोच कहा।

''मैं कैसा लगा रहा हूँ दिव्या?''

''अरे आप हैण्डसम दिख रहे हो।''

''थैंक यू दिव्या''

''आज कहीं पार्टी में जा रहे हैं सर?''

''ओ नो दिव्या आई केम टू यू ओनली''

''मैं तो रोज आपसे मिलती हूँ सर फिर आप इस परिधान में केवल मुझसे मिलने क्या बात है सर। बताइये मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ।'' सामान्य भाव से लिया इन सब बातों को दिव्या ने।

''आप क्या नहीं कर सकती हो, यू कैन डू एवरीथिंग फोर मी''

''मैं समझी नहीं'' डॉक्टर से थोड़ा दूर हटते हुए कहा अब थोड़ा समझने लगी दिव्या डॉक्टर की मंशा को।

''सबसे पहले टुम मुझे सर नहीं मेरे नाम से पुकारो मुझे रिचर्डसन कहो, मुझे अच्छा लगेगा।''

''सर मैं आपका नाम कैसे ले सकती हूँ'' दिव्या का मन कुछ सकपकाने लगा।

''डॉन्ट फील अफ्रेड दिव्या हीअर इज नो वन टु लुक अस''

''व्हाट डू यू मीन सर?''

''ओ दिव्या मैंने कितने बार कहा मुझसे सर मत कहो, मैं टुम्हारा रिचर्ड ओनली रिचर्ड।''

''प्लीज सर मुझे काम बताइये मैं क्या कर सकती हूँ?''

''यू डोन्ट नो दिव्या टुम मेरे लिए एक पेशेन्ट ही नहीं उससे कहीं ज्यादा हो, टुम्हारी जैसी ब्यूटीफुल कल्चर्ड गर्ल आज तक मैंने नहीं देखी मुझे टुमसे लव हो गया है।'' इतना कहते हुए उसने दिव्या का हाथ थाम लिया और अपनी ओर खींचते हुए एक किस भी कर लिया, उसके होठों पर। अमेरिका में लव की यही परिभाषा है।

दिव्या ने जोर से झटका मारा ''हटिये सर ये क्या बेवकूफी है'' थैरेपी के दौरान हाथों, पैरो की मालिश करना एक डॉक्टर का धर्म और एक मरीज का कर्म होता है, वो बात अलग थी। तब ऐसी कोई बात महसूस नहीं हुई, क्योंकि वो इलाज का हिस्सा था, लेकिन आज हाथ पकड़ना एवं चुम्बन जड़ना, बेहूदगी थी।''

दिव्या को गुस्सा आ गया, उसने हिन्दुस्तानी स्वरुप धारण कर लिया और आवेश में बोली ''मेरे पास आने की हिम्मत मत करना, वरना अंजाम बुरा होगा, एज ए डॉक्टर मैं आपकी रेस्पेक्ट करती हूँ।'' गुस्से में दिव्या का हाथ तन गया।

''अपने रिचर्ड पर हाथ उठाओगी दिव्या मैं टुमसे लव करता हूँ, टुमसे मैरिज करना चाहता हूँ, टुम यहाँ बहुत खुश रहोगी।''

''मुझे टुमसे कोई लव नहीं है और न होगा, हमें ऐसी खुशी नहीं चाहिए जो तन बेचने से आती है। तुम केवल डॉक्टर हो बस, इससे ज्यादा कुछ भी नहीं। आज के बाद इस तरीके की बदतमीजी की तो परिणाम भयंकर होगा।'' इतना कहकर चलने लगी। साथ ही यह भी महसूस हो रहा था कि जोर से चिल्लायी तो उसकी ही बेइज्जती होगी, इसलिए इस बात को यहीं दबाना चाहती थी।

हिन्दुस्तानी महिला हमेशा अपनी इज्जत के लिए मरती रहती है। यही ताकत भी है और विडम्बना भी भारतीय नारियों की।

डॉक्टर पीछे-पीछे ''दिव्या टुम मुझे ठुकरा नहीं सकती, हमारे लव को इन्कार नहीं कर सकती, आई लव यू सो मच।''

''जानते हो लव किसे कहते हैं'' दिव्या ने जोर से बोलते हुए कहा ''मुझे आपसे कोई दिलचस्पी नहीं है, आप मेरे लिए एक डॉक्टर हो, एक डॉक्टर ही रहोगे बस। इससे ज्यादा न कुछ थे और न कुछ होगे। मैं तो डॉक्टर को भगवान का दर्जा देती थी। आज मालूम पड़ा कि डॉक्टर के वेश में भेड़िये भी होते हैं।''

''बस करो दिव्या।'' डोन्ट इन्सल्ट मी आई टेल यू।''

''वरना क्या करोगे।''

''आई सैल पोस्ट योर नेक्ड फोटोग्राफ्स ऑन इण्टरनेट''

ऐसा सुनकर दिव्या का माथा ठनका उस दिन थैरेपी वाले दिन उसे नींद क्यों आ गयी थी, शायद इसी ने कुछ किया होगा, कुछ न कुछ मिलाया होगा और मेरे फोटोग्राफ्स लिये होंगे। एकदम उसके दिमाग में रील सी घूम गयी। ये भाव मन में छिपाते हुए, तल्ख़ आवाज में।

''आख़िर आप चाहते क्या हो?''

''मैं टुमसे मैरिज करना चाहता हूँ'' डॉक्टर बोला उसे अपनी विजय प्रतीत होने लगी थी।

''मैरिज इस जन्म में तो क्या अगले जन्म में भी नहीं होगी ये सब निकाल अपने दिमाग से। आई लव माई शेखर ओनली एण्ड नोबडी एल्स''

''तुम मुझे फोटोग्राफ्स पोस्ट करने के लिए मजबूर कर रही हो।''

''इट मीन्स यू आर ब्लैकमेलिंग मी'' दिव्या ने कठोरता से कहा।

''नॉट ब्लैकमेलिंग, आई टेल यू ट्रुथ, आई लव यू।''

''लव यू का अर्थ जानते हो, क्या होता है?'' दिव्या ने कहा।

''टुम मुझे, नहीं अपनाओगी''

''नेवर'' दिव्या सोच रही थी ये डॉक्टर हो सकता है फोटोग्राफ्स की कोरी धमकी दे रहा है।

डॉक्टर ने अपना मोबाइल निकालते हुए उसकी तरफ किया जिसमें दिव्या के थेरैपी के समय के नेक्ड फोटोग्राफ्स थे। दिव्या डर गयी, लेकिन दिव्या जानती थी, मुसीबत में धैर्य से कार्य लेना चाहिए। अतः उसने गम्भीरता पूर्वक कहा ''आपको जो करना है करें मैं भी तुम्हारे खिलाफ एफ.आई.आर. कर दूँगी।'' अपना ब्रह्मास्त्र छोड़ा दिव्या ने इसके अलावा वो कर भी क्या सकती थी।

तुम कुछ नहीं कर सकती जब तक हम डिस्चार्ज नहीं लिखेंगे, तुम बाहर नहीं जा सकती, मैं कह दूँगा, तुम बाहर जाने के लिए ये सब बहाना बना रही हो।''

हम हिन्दुस्तानी लड़कियाँ बहाना नहीं बनाते, यहाँ से चली जाऊँगी, इसी वक्त हॉस्पीटल छोड़कर''

''धमकी दे रही हो।'' डॉक्टर बोला

''धमकी नहीं हकीकत।''

''कहाँ जाओगी और कैसे जाओगी?'' व्यंग्यात्मक हँसते हुए डॉक्टर बोला।

अपनी इण्डिया और कहाँ ''कैसे तेरा पासपोर्ट ये रहा।''

दिव्या को अब यकीन हो गया, उस दिन नींद का कुछ इसने ही दिया था, तभी इसने फोटोग्राफ्स लिए होंगे और पासपोर्ट चुराया होगा।

दिव्या धम्म से बैठ गयी। यहाँ किसी को जानती भी नहीं। यहाँ फोन भी एलाऊ नहीं है। अपना मोबाइल लायी थी, उसे भी कैथ के पास छोड़ना पड़ा था।

''क्या सोच रही हो दिव्या? हाँ कर दो, मैं तुम्हारा कब से वेट कर रहा हूँ, आओ मेरी बाँहों में''

दिव्या ने थोड़ी हिम्मत से काम लिया और बोली ''मुझे थोड़ा समय दो, मैं कल तक बताऊँगी।''

डॉक्टर खुश हो रहा था कि उसकी योजना काम कर रही है, जैसा कि हर अपराधी को यही लगता है।

दिव्या ने उससे समझौता नहीं बल्कि थोड़ा समय माँगकर अक्लमंदी का परिचय दिया था, क्योंकि मुसीबत के समय हिम्मत एवं धैर्य से कार्य लिया जाना चाहिए। तभी सफलता की सम्भावना बनती है।

डॉक्टर फ्लाइंग किस मारता हुआ चला गया, ये कहता हुआ ''ओ के माई डीयर, आई शैल वेट फार यू, वन डे मोर।'' हाथ हिलाते हुए, विजयी मुस्कान के साथ लौट गया। अब क्या करेगी, लेकिन जो भी होगा, उसका हिम्मत के साथ सामना करेगी, यही सोचते हुए अपने कमरे में आ गयी।

❑

''हाय दिव्या'' कमरे में दाखिल होते हुए फ्रीडा ने कहा।

दिव्या का कोई जवाब न पाकर फिर ''हाय दिव्या कैसी हो दोबारा पूछा'' फिर भी कोई जवाब नहीं मिला।

दिव्या अपने बिस्तर पर लेटी रो रही थी, ''हे भगवान कहाँ फँस गये आकर।

फ्रीडा ने उसके बिस्तर पर जाकर उसे हिलाते हुए ''व्हाट हैपन्ड व्हाई आर यू नॉट टॉकिंग विद मी।''

''कोई बात नहीं फ्रीडा'' सुबकते हुए दिव्या ने कहा।

''कोई बात नहीं फिर रो क्यों रही हो क्या घर की याद आ रही है?''

''नहीं भगवान के लिए अकेला छोड़ दो फ्रीडा।''

फ्रीडा ने कहा ''मैं तुम्हारी नर्स हूँ। लगभग तीन महीने पूरे होने वाले है केवल एक सप्ताह शेष है, तुम्हारा कोर्स भी समाप्त हो चुका है और इतने दिन में तुम मेरी फ्रेण्ड बन गयी हो, ये तुमने भी कहा है। फिर भी मेरे से कोई गलती हो गयी क्या?''

''गलती तुम्हारे से नहीं मेरे भाग्य से हुई है, जहाँ जाती हूँ वहाँ नयी मुसीबत मिल जाती है।'' रोते हुए दिव्या ने कहा।

फ्रीडा ने उसे उठाते हुए ''क्या बात है माई फ्रेण्ड।'' उसकी आवाज़ में अपनापन था। कुछ भी आवाज का अन्तर मालूम पड़ जाता है कि कौन सी आवाज अपनी है और कौन सी परायी।

दिव्या फ्रीडा से चिपक गयी जैसे कोई बच्चा अपनी माँ से चिपक जाता है, जब कोई भयंकर स्वप्न देख लेता है, रोने की आवाज स्वतः तेज हो गयी।

धीरे-धीरे फ्रीडा ने शान्त किया और पूछा ''आख़िर बात क्या है, जो तुम इतना परेशान हो, तुम्हारे इलाज के दौरान तो मैंने तुम्हें कभी इतना कमजोर नहीं देखा।''

''मेरे हालात ही ऐसे हैं जो मुझे परेशान कर रहे हैं।''

''फिर भी दिव्या कुछ तो खुलकर बताओ क्या परेशानी है।''

धीरे-धीरे बताना शुरू किया और डॉक्टर वाली घटना ज्यों का त्यों पूरी बता दी आँसुओं के बीच। लेकिन मन ही मन में शंका भी हुई कहीं फ्रीडा डॉक्टर को न बता दे, कहीं मिली तो नहीं है, लेकिन एकाएक जब इसने मुझे फ्रेण्ड माना है हो सके न बताये। दुविधा में फँस गयी।

''फ्रीडा क्या वास्तव में तुम मेरी हेल्प कर सकती हो?''

''व्हाई नॉट दिव्या डेफीनिटली, दिस डॉक्टर इज वेरी इन्टेलीजेन्ट इन प्रोफेशन बट वेरी बैड इन कैरेक्टर। आई हेट दिस डॉक्टर'' कहते-कहते दिव्या को पुनः गले से लगा लिया।

''तुम क्यों रो रही हो फ्रीडा'' क्या मेरी हेल्प कर पाओगी।

फ्रीडा ने अपने आँसू पौंछे - ''ऑफकोर्स।''

फ्रीडा भी अपनी कहानी बताने लगी जो कुछ डॉक्टर ने उनके साथ किया था, क्लिपिंग बनायी थी और इण्टरनेट पर डालने की धमकी दी थी, लेकिन मैं तो यहीं की ठहरी हमसे तो डर गया था। बाद में माफी भी माँग ली थी।

''तुम बताओ और क्या कहा इस वास्टर्ड ने''

मुझसे कहा है किसी को बताया तो फोटो अपलोड कर देगा और पासपोर्ट भी जला देगा।

''टुम चिन्ता मत करो टुम जैसा कहोगी वैसा ही करूँगी'' फ्रीडा ने कहा, दिव्या को कुछ समझ नहीं आ रहा था लेकिन एकाएक अपने शेखर की याद आ गयी। लेकिन इतनी दूर शेखर भी क्या कर सकता है। वहाँ से उसके पास मैसेज कैसे पहुँचे। लेकिन फिर भी फ्रीडा से कहा ''तुम इण्डिया मेरे शेखर को किसी तरह फोन कर मैसेज पहुँचा दो आज ही मेरे बारे में बता दो। मैं बिल्कुल ठीक हो चुकी हूँ, मेरा कोर्स पूरा हो चुका है। सारी दवायें प्रीकॉशन लिख दिया गया है, केवल डिस्चार्ज ही बचा है, अब यहाँ से किसी प्रकार बचा ले इस भेड़िये से। फोटो अपलोड एवं पासपोर्ट चुराने की घटना पूरी बता दो शेखर को।

''डान्ट वरी'' ही कह पायी थी। तब तक दरवाजे पर डॉक्टर आ गया। नर्स को धमकाते हुए बोला।

''क्या खिचड़ी पका रही हो, कुछ काम धाम नहीं है तुम्हारे पास अपने समय पर आया करो, अपनी दवा दो और पेशेन्ट को आराम करने दो।''

फ्रीडा निकल गयी, कमरे से बाहर गहरी स्वॉस लेते हुए, चलो डॉक्टर ने उनकी बातों को नहीं सुना पाया।

अब डॉक्टर एवं दिव्या अकेले कमरे में रह गये। दिव्या डर रही थी।

डॉक्टर ने जाकर दिव्या के दोनों हाथ पकड़ लिये, ''क्या सोचा माई डीअर योर लवर इज वेटिंग फोर योर आन्सर दिव्या।'' दिव्या ने बड़े धैर्य से काम लिया और कुछ दिन टालने का मन बनाया। कहते है जब उंगली दबी हो तो बुद्धिमता का परिचय देना चाहिए।

डॉक्टर दिव्या के साथ जबरदस्ती करने पर उतारु था दिव्या ने सोचा चिल्लाने से कोई फायदा नहीं, कहीं पासपोर्ट जला दिया तो यही सोचकर सिहर गयी।

दिव्या ने कहा ''पहले मेरा पासपोर्ट दे दो एवं क्लिपिंग डिलीट मारो तभी मैं तुमसे लव कर पाऊँगी। जो लव करते हैं वे डराकर एवं धमकाकर नहीं करते है।''

डॉक्टर बोला ''आई एम नॉट इण्डियन आई एम अमेरिकन। आई कैन नॉट रिटर्न योर पासपोर्ट एण्ड डिलीट योर क्लिपिंग। यू आर विफूलिंग मी लाइक इण्डियन्स।

''आइ एम नॉट विफूलिंग यू बट टेलिंग ट्रुथ।''

''यदि टुम वास्तव में ट्रुथ बोल रही हो तो मेरे साथ सेक्स करो।''

''सेक्स नाम सुनकर दिव्या भड़क गयी लेकिन काबू पाते हुए लव करने के लिए सेक्स करना जरुरी है। लव तो शुरू होने दो सेक्स तो जिन्दगी भर करना है।''

डॉक्टर को लगा मेरा आइडिया काम कर गया है। बोला ''ओ के ओ के आओ मुझे किस करो तब मानूँगा तुम मुझे लव करोगी।''

दिव्या के आगे खाई थी और पीछे कुआँ। यहाँ से निकलने का कोई रास्ता भी नहीं था। फिर भी बोली ''ये तो फिजीकली सिम्बल है, मैं तो तुम्हें सोल से लव करना चाहती हूँ डीयर रिचर्ड। टुमने मुझे नया जीवन दिया है मैं तुम्हारी आभारी हूँ।''

''यस-यस काफी समझदार मालूम होती हो।''

''व्हेन विल यू कम टू माई बेड''

''गिव मी वन डे मोर प्लीज डॉक्टर।''

''ओ के ओ के, वी विल वेट फॉर टूमारो, डोन्ट फोरगेट अदरवाइज फोटो विल वी अपलोड।''

पीछा छुड़ाने के लिए ''ओ के''।

विजयी मुस्कान लेकर डॉक्टर आज फिर टल गया।

डॉक्टर के जाने के बाद जान में जान आयी दिव्या की। दरवाजा बन्द करके धम्म से गिर पड़ी बेड पर।

❑

काफी देर घण्टी बजने के बाद शेखर ने फोन उठाते हुए ''हेलो'' नम्बर बाहर का लग रहा था।

''हेलो आर यू शेखर स्पीकिंग, आई एम फ्रीडा फ्रॉम नो होप फॉर होप सेन्टर, वाशिंगटन अमेरिका।''

''यस-यस मिस फ्रीडा मैं शेखर बोल रहा हूँ, माई दिव्या इज ओ के नाउ। कब डिस्चार्ज हो रही है?''

''प्लीज लिसन टू मी केयरफुली मेरे पास ज्यादा टाइम नहीं है, फ्रीडा बोली।''

''हाँ क्या बात है?'' शेखर बोला।

फ्रीडा ने पूरी कहानी फोन से बतादी और फोन काटते हुए कहा ''डू समथिंग फोर योर दिव्या क्विकली।''

शेखर ने कैथरीन को फोन मिलाया लेकिन फोन नौकर ने उठाया और कहा ''वह आउट ऑफ सिटी है आने में लगभग एक सप्ताह लगेगा।''

शेखर का दिमाग चकराया फिर भी उसी समय अपनी गाड़ी निकाली और निकल पड़ा। अमेरिकन अम्बेसी की तरफ। ये तो अच्छा था शेखर आज छुट्टी पर था और दिल्ली में ही अपने घर पर था। अमेरिकन एम्बेसी में जाकर मिस्टर स्मिथ से मिला और अपनी समस्या से अवगत कराया और रिक्वेस्ट किया।

''मेरी दिव्या भारी प्राब्लम में है, प्लीज कुछ कीजिए।''

एम्बेसडर ने भरोसा दिलाया, कल तक तुम्हारा मैटर सॉल्व हो जायेगा, बिलीव मी, नथिंग विल हैपन टू योर दिव्या एण्ड डॉक्टर विल भी अरेस्टिड नाउ यू कैन गो।''

''नो सर प्लीज डू समथिंग इम्मीडियेटली इट इज द मैटर ऑफ माई लाइफ।''

मिस्टर स्मिथ ने कहा ''डोन्ट होरीफाइड प्लीज बिलीव माई सिस्टम आई विल डू समथिंग।''

तुरन्त वाशिंगटन उच्चाधिकारियों को फोन मिलाया और कहा- ''एक्शन इम्मीडियेटली एण्ड इनफोर्म मी विदिन टू आवर्स।

''ओ के सर'' उधर से आवाज आयी।

शेखर की तरफ मुड़ते हुए ''नाउ यू कैन गो विदाउट एनी टेन्शन, लीव दिस मैटर ऑन मी।''

''सर मे आई वेट आउट साइड प्लीज इफ यू परमिट मी'' शेखर ने निवेदन किया।

''यस यू कैन, इन द गेस्ट रुम एज यू आर आलसो इण्डियन ऑफीसर।''

ठीक दो घण्टे बाद फोन की घण्टी घनघनायी। मिस्टर स्मिथ से बात हुई।

''सर वी हैव अरैस्टिड दैट डॉक्टर हिज मोबाइल लैपटॉप हार्ड डिस्क एण्ड अदर इलेक्ट्रानिक डिवाइस। एण्ड नाउ दिव्या इज फीलिंग वेल सी इज सेफ नाउ हर पासपोर्ट रिटर्न्ड।''

मिस्टर स्मिथ ने फोन रखते हुए शेखर के पास गेस्ट रूम में खुद गये और कहा, ''योर दिव्या इज सेफ एण्ड डॉक्टर इज अरेस्टिड।''

''सर मे आई टाक माई दिव्या''

यस आइये

फोन पुनः लगाया, ''सारजेन्ट व्हेअर इज दिव्या''

''सी इज, हीअर नाउ सर''

''लेट दिव्या टाक टू मी।''

शेखर को अपने पास बुलाते हुए ''यस कम शेखर एण्ड टॉक टू दिव्या।''

उधर से आवाज आई

''हैलो दिव्या कैसी हो?''

''मैं ठीक हूँ मुझे वहाँ से निकाल लिया गया है, मेरा पासपोर्ट मिल गया है, तुम्हारी दिव्या बिल्कुल ठीक है।''

''कल की फ्लाइट से इण्डिया आ जाओ।''

''यस'' इतना कहकर फोन स्मिथ को दे दिया।

अपने अधिकारी को फोन पर ही आदेश दे दिया?

''लेट अरेन्ज ए फ्लाइट फॉर दिव्या टूमारो।''

''ओ के सर''

शेखर ने मिस्टर स्मिथ को थैंक यू बोला और कहा ''आई कैन नॉट फोरगेट योर ओवलाइज सर''

''नो ओवलाइज इट इज माई ड्यूटी'' यू वेट फॉर टमारो फोर दिव्या।''

''थैंक यू कहकर चल दिया और उस कल के मिलने की आशा में खो गया।''

❑

इन्तजार में मिनट घण्टों के समान, एक घण्टा दिवस के समान और दिवस महीने के समान और महीने वर्षों के समान प्रतीत होते हैं और फिर बात प्रेम की हो और उसमें व्याकुल दो विरही जनों की हो तो सेकेण्ड भी मुश्किल से कटती हैं। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटीन का कथन कौन भूल सकता है ''यदि हम गर्म अंगीठी के पास बैठे हों तो एक मिनट मुश्किल से कटता है और यदि एक प्रेमी अपनी प्रेमिका के साथ बैठा हो तो घण्टों भी मिनटों के बराबर लगते हैं।

आज स्थिति विपरीत है। शेखर और दिव्या नाम जरूर है, लेकिन उस दीपक के समान हैं, जिसमें तेल बाती दोनों मिलकर ही प्रकाश करते हैं। दो शरीरों की एक आत्मा है। एक सोचता है तो दूसरा महसूस करता हैं और यदि एक महसूस करता है, दूसरा इसे परिणिति तक पहुँचता है।

दिव्या की फ्लाइट समय पर है पर पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा कि वह तीन महीनों बाद अमेरिका से वापिस नहीं आ रही बल्कि तीन जन्मों के बाद वापस लौट रही है और वह उसके लिए जन्मों से प्रतीक्षा में खड़ा है। अपने हृदय की हर धड़कन को उसके नाम कर दिया था। यदि एक किश्ती है तो दूसरा इसका माँझी है। माँझी के बिना किश्ती को किनारा नहीं मिलता है, और किश्ती को मझधार में माँझी कभी छोड़ नहीं

सकता है। माँझी की पतवार उसका जीवन होती है, उसे अपने से ज्यादा प्यार होता है, तभी अपनी पतवार को सजाया है, संवारा है, संघर्ष किया है। उसे स्वस्थ एवं खुशमय बनाने के लिए खुशियाँ आलिंगन बद्ध होने को तैयार हैं, दो आत्माओं का मिलन होने को तैयार है। दो ध्रुव आज इतिहास रचने को तैयार हैं। दो ध्रुव अस्तित्व खोकर एकाकार होने को बढ़ रहे हैं। पर समय की अपनी विवशता है। जैसे अँधेरों के बाद कई दिनों से पूरणमासी का चाँद निकला है। कई दिनों के कोहरे के बाद सूरज की किरण अपनी रोशनी बिखेरने को रथ पर सवार होकर चली आ रही है।

लेकिन एअरपोर्ट पर उस फ्लाइट को छोड़कर बाकी सबकी उद्घोषणा सुनाई दे रही है। अन्य फ्लाइट की घोषणा शेखर को विचलित कर रही हैं। यद्यपि इन फ्लाइट्स में भी उन्हीं शेखर और दिव्या जैसे जाने कितनी आत्मायें इन्तजार कर रही होंगी।

ये भी सही है इन्तजार का अपना अलग आनन्द होता है। एक अलग कायदा होता है, कभी हाथ आपस में रगड़ जाते हैं, कभी दाँतों को पीसना पड़ता है, कभी पैरों से ठोकर मारी जाती, कभी दुपट्टे को उंगलियों पर लपेटा जाता है, कभी उंगली दाँतों से दबायी जाती है, कभी कलाई पर बँधी घड़ी बार-बार निहारी जाती है। आँखे इधर उधर चलायमान होती है, पूरा शरीर गतिमान होता है, एकाएक फुरफरी सी छूटती है, कभी कम्पन होता है, कभी हृदय धड़कने लगता है। मन बचैन होने लगता है, अपने प्रिय से मिलने को आतुर होता है। प्यासे पपीहे के समान जिसे स्वाति नक्षत्र की बूँद मिलने वाली होती है।

ऐसी ही स्थिति में दिव्या और शेखर दोनों ही हैं।

अचानक उद्घोषणा कक्ष से प्रसारण होता है, फ्लाइट 087 डी.एस. अपने समय पर है और रनवे पर उतरने को तैयार है। शेखर अपने आपको संभालता है। अन्य साथ में खड़े लोग अपनी-अपनी तख्ती लेकर तैयार होने लगते है। लेकिन शेखर को किसी भी तख्ती की आवश्यकता नहीं है। वह दिव्या को हजारों की भीड़ में भी पहचान लेगा या यों कहें कि आँख बन्द करके भी यदि शेखर खड़ा है और यदि दिव्या उसके पास से भी गुजर जाये तो उसकी गन्ध से ही उसे पहचान लेगा।

यात्री गण धीरे-धीरे बाहर आने लगते हैं, दिव्या के हाथों में सामान कुछ ज्यादा ही हो गया था। वह धीरे-धीरे पीछे आ रही थी। शेखर का हृदय धड़क रहा था। उसे इन्तजार था दिव्या के दिव्य दर्शन पाने का, जो मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लौट रही थी, एक वीर योद्धा के समान और उस योद्धा की आरती उतारने का तैयार खड़ा था शेखर।

अचानक भीड़ में से कुछ दूर से एक हाथ हिला, शेखर ने गौर से देखा यह उसकी दिव्या ही थी। शेखर का हाथ भी हिलने लगा हृदय की धड़कनों की गति हाथों में

आ गयी। जैसे-जैसे दिव्या नजदीक आ रही थी शेखर भी आगे बढ़ने लगा, लेकिन आगे बैरियर से बढ़ना नियमों के खिलाफ था। दोनों हाथ फैलाये इन्तजार में खड़ा था।

शेखर दिव्या के रुप लावण्य को निहारने लगा। तीन महीनों में अप्रत्याशित परिवर्तन। उसके शरीर में, रंग में चेहरे की तेजस्विता में अजीब किन्तु सजीव अन्तर था। आज उसके द्वारा पहना हुआ परिधान किसी अप्सरा से कम न था। शेखर तो पहले ही उस पर जान न्यौछावर करता था। लेकिन आज उसके रूप लावण्य का जादू ऐसा सिर चढ़कर बोल रहा था कि कहीं वह दूसरी ही दुनिया में खो गया हो।

पास आते ही दिव्या ने प्रणाम की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़ लिए। शायद शेखर के द्वारा किये गये उपकार के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हो। शेखर की वजह से ही उसे नया जीवनदान मिला था, नयी ऊर्जा मिली थी, नया जोश मिला था, नयी उमंगें मिली थी, नयी तरंगे मिली थी जो हृदय में हिलोरें ले रही थी। शरीर का रोम-रोम पुलकित हो रहा था। खुशी के मारे आँखों से खुशियाँ झलक रही थी।

अनायास दोनों हाथ फैल गये, अपनी बिछुड़ी हुई आत्मा से मिलने को उधर शेखर भी तीन महीनों नहीं बल्कि जन्मों से इन्तजार में था, उसके हाथ पहले से ही सम्पूर्ण धरा को समेटने के लिए खुले थे। आकाश एवं पृथ्वी का मिलन होना था।

शेखर एवं दिव्या आलिंगन बद्ध हो गये। और भूल गये अपने आपको। आज मुँह से नहीं बल्कि दोनों के हृदय आपस में वार्तालाप कर रहे थे। दोनों हृदय एकाकार हो गये, दोनों आत्मायें एक हो गयी। कई मिनट हो चुके थे, दुनिया से बेखबर।

तभी पास खड़े, दिव्या की माता जी ने आवाज लगायी। ''लगता है अभी से तू अपने माता-पिता को भूल गयी।''

इतने शब्दों का कान में पड़ना हुआ तब दोनों को भूल का एहसास हुआ यह एक सार्वजनिक जगह है। इस तरह आलिंगन बद्ध होना ठीक नहीं है। दोनों अलग हुए।

दिव्या ने अपने माता जी एवं पिता जी की तरफ मुखातिब होकर उनसे भी लिपट गयी। माताजी एवं पिताजी के चेहरे पर सन्तोष का भाव था, चलो आख़िर उनकी बेटी स्वस्थ हो गयी। अपनी माताजी एवं पिताजी को धन्यवाद कहना चाहा।

दिव्या ने तभी माँ ने कहा ''मेरा धन्यवाद कैसा, धन्यवाद तो उस महान पुरुष को, वो जिसके कारण तुझे जीने की वजह मिली है।''

''माँ वो तो ठीक है लेकिन जब मैं अमेरिका जाने का तैयार नहीं थी, तब आपने ही मनाया था, अब मुझे ज्ञात हुआ कि आपकी बात मानकर मैंने अपने जीवन की खुशियाँ वापस पायीं हैं।''

पिताजी की तरफ मुड़कर ''धन्यवाद आपका भी कि आपने भी मुझे अमेरिका भेजने के प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दी और इतने दिनों अकेले में रह सकी तो आपके प्रेरणादायी शब्दों के कारण ही पिता ने अपनी दुलारी को सीने से लगा लिया, तीन

महीनों का दर्द आँखों से छलकने लगा, साथ ही खुशी इस बात की थी कि बेटी ठीक होकर जंग जीतकर लौटी है, लाइलाज बीमारी से।

साथ ही मन में एक दुःख भी कि समाज में लगा एड्स पीड़िता का कलंक कैसे दूर होगा। यद्यपि वह शेखर को बहुत अच्छी तरह जानता ही नहीं था, पहचान भी गया था। शेखर उसे अपने दिलों जान से ज्यादा चाहता है यह भी जानता था शेखर अपनी शादी का प्रस्ताव भी रख चुका था। दिव्या के पापा उसे स्वीकार भी कर चुके थे, लेकिन यही कहकर शेखर को समझाया था कि अंतिम निर्णय तो दिव्या ही लेगी। आज दिव्या उसके छाती से लगी खड़ी है। धीरे-धीरे अलग होते हैं, बाप-बेटी ओर वास्तविक धरातल पर आते हैं, भावनात्मक धरातल से।

आँखों से अश्रुधारा पौंछते हुए, ''बेटी यह तेरा शेखर कब से तेरे इन्तजार में है, एक-एक दिवस इसका कैसे कटा है, यह तो यही बता सकता है या तेरा दिल समझ सकता है, हम तो केवल महसूस कर कसते हैं। अब बूढ़े माँ-बाप की केवल एक ही इच्छा है कि तुम दोनों का घर बस जाये।''

''आप भी पापा एअरपोर्ट पर ही ये क्या बातें लेकर बैठ गये, अभी तो ढ़ेरों बात करनी हैं, सारा हाल चाल बताना है, चलो घर चलते हैं। घर बैठकर ढ़ेरों बातें करनी है और आपसे पूछनी भी हैं।''

पिता ने भी हाँ में हाँ मिलाया।

शेखर की तरफ मुड़ते हुए दिव्या ने कहा ''अरे शेखर जी आपने जो हमारे लिए एवं इस परिवार के लिए किया है, उसका एहसान इस जिन्दगी में तो क्या अगले जन्म में भी नहीं चुका पाऊँगी।

''कैसी बातें करती हो दिव्या। मैं पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि मैं शेखर जी नहीं तुम्हारा केवल शेखर हूँ शेखर। आगे से भी इसी नाम से पुकारियेगा। रही बात एहसान की तो इसे तो इसी जन्म में उतारना पड़ेगा।, पगली हो गयी हो क्या कैसे एहसान की बात करती हो? एहसान हमेशा औरों पर अपरिचितों पर किया जाता है, अपनों पर नहीं। तुम तो कल भी अपनी थी, आज भी हो और कल भी।''

''अरे तुम तो बुरा मान गये।'' दिव्या बोली

''बुरा मानने की बात ही है।''

''अच्छा तो मैं माफी माँगती हूँ।''

''माफी भी अपनों से नहीं माँगी जाती।''

''तो तुम ही बताओ क्या करूँ आख़िर।'' दिव्या बोली

शेखर बोला ''अभी यह समय माफी माँगने का नहीं है, एहसान चुकाने का नहीं, गलती करने का नहीं। बल्कि खुशियों को बाँटने का है। घर चलते हैं, तुम्हारे लिए

कितनी तैयारियाँ की हैं। कितने दिनों का इन्तजार इन तैयारियों में है। चलो एक नये संसार की पटकथा की तैयारी करें और तुम लेकर बैठ गयी जिन्दगी में कर्ज़ नहीं चुका पाऊँगी।''

''ओ के बाबा माफ कर दो'' दिव्या बोली।

''ओ के बाबा'' शेखर को अतिप्रिय था फिर भी कहा ''फिर माफी की बात की।''

शेखर के हाथ पकड़ते हुए ''तो क्या करूँ तुम्ही बताओ।''

''बस यूँ ही जिन्दगी भर मेरा हाथ पकड़े रहो और कुछ नहीं करना है। बस इसी तरह इस जिन्दगी की वैतरिणी पार लग जायेगी और क्या चाहिए?''

''अरे ओ शायर... चलो भी मम्मी-पापा घर जाने के लिए इन्तजार में खड़े हैं'' एक ही स्वॉस में कह गयी।

''अरे हाँ अब घर चलना चाहिए।'' इतना कहकर सभी कार में बैठ जाते हैं और चल देते हैं घर की ओर...।

❑

द्वार पर आकर रुकती है गाड़ी। गाड़ी से उतरते हुए दिव्या अपने घर का दृश्य देखकर हैरान रह जाती है। यह क्या गेट सजाया गया है, वन्दन वार लगाया गया है। शेखर के माताजी पिताजी अगवानी करने को तैयार खड़े हैं। शेखर ने अपने माता-पिता को किसी प्रकार तैयार कर लिया था, दिव्या से शादी करने के लिए। शेखर के माता-पिता ने भी सोच लिया था। अब दिव्या स्वस्थ हो चुकी है, सुन्दर तो थी ही, गुणवान भी है। उसके माता पिता का भी व्यवहार अच्छा है, फिर तैयार भी रिश्ते के लिए। आज तो दिव्या के आगमन पर द्वार पर तैयार खड़े थे उसकी अगवानी के लिए।

दिव्या की कुछ समझ में नहीं आ रहा था, ये सब क्या हो रहा है? शेखर ने दिव्या को कोहनी के इशारे से कहा ''चलो आगे बढ़ो अपना आतिथ्य स्वीकार करो। ये मेरे माता-पिता है, तुम्हारे स्वागत के लिए खड़े हैं। यह सजावट तुम्हारे आगमन के लिए ही की गयी है। कैसी लगी यह सम्पूर्ण व्यवस्था?''

''व्यवस्था तो बहुत अच्छी है लेकिन ये सब करने की क्या आवश्यकता थी। मैं तो वही पुरानी दिव्या हूँ, वो भी अपने घर आयी हूँ।''

शेखर ने कहा ''तुम वही पुरानी दिव्या नहीं हो। वो तो अमेरिका में रह गयी। यह दिव्या का पुनर्जीवन है मेरा पुनर्विश्वास है। तुम्हें अपनाने के लिए अपलक खड़े हैं। बस तुम्हारी हाँ की कमी है, सब कुछ तैयारियाँ पूरी हैं, बस केवल तुम्हारी हाँ चाहिए।

''यहीं खड़े-खड़े या घर के अन्दर भी चलें'' दिव्या ने कहा।

''क्यों नहीं?''

''तो फिर खड़े क्यों हो?''

''तुम्हारे इन्तजार में।''

दिव्या के पापा ने कहा ''यही घुसर-फिसर करते रहोगे या आगे भी बढ़ोगे।''

''हाँ पापा'' कहकर आगे चल दी दिव्या।

''शेखर तुम भी साथ चलो देखते हैं, जोड़ी कैसी लगती है।''

शेखर के पिता ने कहा।

दिव्या शरमा गयी ''सिर झुका लिया, कुछ कहना मर्यादा के अनुकूल नहीं होगा।'' शेखर भी साथ हो लिया।

दिव्या के माता-पिता और शेखर के माता-पिता अब दोनों गेट पर खड़े हैं, आरती की थाल लेकर।

दिव्या ने धीरे स्वर में कहा ''ये सब तुमने ही किया होगा। यह सब करने की क्या जरूरत थी?''

''जरुरत तो है दिव्या, आख़िर मेरी आत्मा आज मेरे शरीर के पास आयी है, यह पुनर्जीवन तुम्हें नहीं बल्कि मुझे मिला है, तुम्हारे बिना मैं अधूरा था। लेकिन मेरा विश्वास अडिग था कि तुम अवश्य ठीक हो जाओगी, प्रभु ने मेरी सुन ली और मेरी जान वापस आ गयी।''

''अरे मजनूँ जरा धीरे बोलो, मम्मी-पापा सुन लेंगे तो क्या सोचेंगे?'' दिव्या ने अपनी गर्दन नीचे किये हुए कहा।

''अब किस बात का डर मेरी जान।'' शेखर ने रोमाण्टिक होते हुए कहा ''अरे चुप भी रहो, बेशर्मी दिखा रहे हो, बड़ों के सामने। अकेले में जो भी बातें करनी हैं, कर लेना। यहाँ तो चुप रहो मेरे आशिक...।''

मुस्कुराते हुए शेखर ने कहा ''यही शब्द अच्छा लगा, ऐसे ही बोला करो।

दिव्या ने शेखर को खुश करने के लिए ही कहा था। अब वे दानों गेट के पास पहुँच चुके थे। शेखर की माँ ने आरती उतारते हुए कहा ''क्या चाँद का टुकड़ा है, कैसी जोड़ी लग रही है। राम-सीता की तरह, जुग-जुग जियो मेरे दोनों लाडले।

दिव्या आश्चर्य चकित थी कि इतनी भी जल्दी क्या थी? कम से कम एक बार तो मेरे से पूछ लिया होता...। लेकिन इस समय कुछ नहीं कहा।

दिव्या के माता-पिता ने भी शेखर की माताजी के हाँ में हाँ मिलायी ''आप सही कह रही है भाभी जी। जोड़ी निश्चित रूप से अच्छी लगेगी, इसमें कोई दो राय नहीं है।''

''आप भी पापा?''

शेखर के पिता बोले सारी बातें यहीं कर लोगे या अन्दर भी चलोगे, कुछ चाय नाश्ता भी कराओगे मेरी बेटी दिव्या को। सात समन्दर पार से आयी है, भूखी होगी। कुछ खिलाओ-पिलाओ तब बैठकर बातें करेंगे। सभी ने स्वीकारोक्ति दे दी।

आरती उतारी गयी, नयी उम्मीदों की, नये एहसास की, नये मेहमान की, नये जीवन के लिए, नवजीवन में प्रवेश करने के लिए। नयी दुनिया में स्वागत किया गया।

दिव्या की बाहरी खुशी को तो सबने देख लिया था, लेकिन उसके अन्दर क्या चल रहा था यह किसी ने नहीं पढ़ पाया था, दिलों जान से ज्यादा चाहने वाला शेखर की अनभिज्ञ था। उसके दिल की बात से, दिव्या के मन में कुछ और भी चल रहा था, किसी ने अवसर ही नहीं दिया। उसे बात करने का। उसके हृदय की धड़कन बढ़ती जा रही थी, लेकिन अपनी बात किसी से कह भी नहीं पा रही थी। अन्दर प्रवेश किया तो देखा अन्दर की सजावट फूलों के बड़े-बड़े गुलदस्ते रखे थे।

शेखर ने आगे बढ़कर गुलदस्ता भेंट करते हुए ''यह तुम्हारे लिए दिव्या तुम्हारा स्वागत है।''

''इतना स्वागत किस लिए कर रहे हो आख़िर मुझे भी तो समझाओ। मैं कोई बदल तो नहीं गयी हूँ। मैं वही दिव्या हूँ, जो तीन महीने पहले थी। फिर अपने घर में कैसा स्वागत, कैसी औपचारिकता। मुझे बाहर का बनाने पर क्यों तुले हो। मुझे इसी घर का रहने दो।'' दिव्या ने कहा।

शेखर ने कहा ''तुम इसी घर की हो लेकिन आज हम सब चाहते हैं कि तुम दूसरा घर भी अपना लो। दोनों घरों को एक सूत्र में बाँध दो और हाँ यह बताने की आवश्यकता नहीं सबके सामने मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ, तुमसे शादी करना चाहता हूँ। अब केवल तुम्हारी 'हाँ' की प्रतीक्षा है और उसी प्रतीक्षा को यादगार बनाने के लिए यह सब उपक्रम किया गया है। अब एक मिनट भी इन्तजार बर्दाश्त नहीं होता है।''

बात को काटते हुए दिव्या बोली ''इतनी भी जल्दी क्या है। अभी तो चाय नाश्ता की बात कर रहे थे, बाद में शादी की बात शेखर, पहले खा तो लेने दो।''

अपनी माँ की तरफ मुड़ते हुए दिव्या बोली ''माँ आप लोग बैठो, मैं सबके लिए चाय नाश्ता लेकर आती हूँ।''

शेखर की माँ ने कहा ''आज हमारी बेटी कोई काम नहीं करेगी आज का सारा इन्तजाम शेखर का है। शेखर आज बहुत खुश है, उसकी खुशी के लिए तुम सब यहीं बैठो। बस यहीं बैठकर सभी नाश्ता करेंगे।''

शरमाते हुए बैठती है। ''नहीं-नहीं बेटी शेखर की बगल वाली कुर्सी पर बैठो।''

शेखर के माताजी व पिताजी की बात काटना अच्छा नहीं समझती थी, उनकी आज्ञानुसार बैठ गयी। ''हाँ अब ठीक है, कितने जम रहें दोनों। भगवान ने इन्हें एक-दूसरे के लिए ही बनाया है।'' दिव्या के पिता ने कहा तभी दो बैरे अन्दर से चाय नाश्ता पकवान ट्रे में लाते हुए एक-एक कर लगाने लगे। टेबिल भर जाती है। दिव्या का मन डूबने लगता है और मन ही मन अपने माँ बाप पर गुस्सा भी आने लगता है। लेकिन मर्यादा वश कुछ कह नहीं पाती है।

आपस में काना फूसी शुरू हो जाती है, कुछ स्तब्धता भी लेकिन वातावरण में कुछ उदासी सी प्रतीत होती है, दिव्या का खिलता हुआ चेहरा अचानक मुरझाने लगता है।

''अरे दिव्या और लो, अभी तो तुमने कुछ नहीं खाया। शेखर की माँ ने स्तब्धता को तोड़ते हुए कहा।

''नहीं ऑन्टी मैंने बहुत कुछ ले लिया, ज्यादा भूख नहीं है।''

दिव्या के पिता ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा ''बेटा दिव्या मैं पिता के ऋण से उऋण होना चाहता हूँ। शेखर तुम्हें बहुत प्यार करता है। उसके माता-पिता भी तुम्हें पसन्द करते हैं। यही सब सोचकर हम सब राजी है कि तुम्हारी शादी शेखर के साथ कर दी जाये। इसीलिए यह छोटा सा आयोजन किया गया है। शेखर के माता-पिता तुम्हें अपनाना चाहते हैं केवल तुम्हारी 'हाँ' सुनना चाहते हैं, जबरदस्ती नहीं थोपना चाहते हैं। ये हम सब अच्छी प्रकार जानते हैं, कि तुम भी शेखर को पसन्द करती हो इसलिए हमने भी हाँ कर दी है।''

दिव्या चुप थी कुछ नहीं बोली ''बोलो बेटी कुछ तो बोलो'' दिव्या के पापा वाले।

दिव्या फिर भी चुप।

''बेटी बोलो तेरी हाँ सुनने को सभी बैठे हैं'' दिव्या की माँ बोली।

बड़े धीरे और मर्यादित स्वर में दिव्या बोली ''आप सबने मेरी शादी की बात पक्की कर ली एक बार मुझसे पूछ तो लेते।''

''वहीं तो पूछ रहे हैं बेटी मुझे नहीं लगता तुझे कोई आपत्ति होगी।''

''बात आपत्ति की नहीं मम्मी जी''

''फिर क्या बात है।''

आप सब मेरे बड़े हैं। शेखर के मेरे ऊपर इतने उपकार हैं। इसी के वजह से मेरा वजूद है, उसके बिना मैं अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती।''

''तो क्या मैं इसे हाँ समझूँ।'' माँ बोली

''आप सबसे मेरा करबद्ध निवेदन है आज इस टॉपिक पर बात न की जाये तो मुझे अच्छा लगेगा।'' बात को टालने की मुद्रा में कहा दिव्या ने।

शेखर ने कहा जो अब तक चुप था ''इन सब बड़े लोगों के मध्य मुझे कुछ बोलना तो नहीं चाहिए। मैं खूब जानता हूँ कि दिव्या हाँ बोलने में झिझक रही है। बस एक बार तुम्हारे श्रीमुख से हम सब सुनना चाहते हैं।'' माहौल को हल्का बनाते हुए कहा।''

''शेखर एक निवेदन है कृपया इस मुद्दे को कुछ समय के लिए विराम दे दिया जाये तो कैसा रहेगा?'' दिव्या ने कहा।

''अरे हम सब तुम्हारी हाँ सुनने के इच्छुक है। ये तो जानते ही हैं कि शेखर को प्यार करती है।'' शेखर की माँ बोली।

दिव्या दो बार संकेत दे चुकी थी, अर्थात अपने मन की पीड़ा व्यक्त कर चुकी थी, लेकिन आज इतनी ज्यादा खुशी थी कि उसे सुनने को कोई तैयार ही नहीं था।

दिव्या ने शेखर के माता पिता से हाथ जोड़ते हुए निवेदन किया ''मैं आपका पूरा सम्मान करती हूँ आप भी मेरे माता के समान हैं, लेकिन आप आपसे प्रार्थना है कि इस बात को यहीं विराम दे दिया जाये, तो अच्छा रहेगा।''

शेखर के माता पिता आज पूरी तैयारी के साथ आये थे, गोद भरने की रस्म पूरी करने के लिए। उन्हें इस प्रकार के उत्तर की उम्मीद नहीं थी।

दिव्या ने शेखर का हाथ पकड़ा और कहा ''तुमसे मुझे एकान्त में कुछ बात करनी है'' दोनों अन्दर चले गये अन्दर क्या बातें हुई, बाहर कुछ नहीं पता। काफी बहस होती रही, केवल इतना ही सुना गया प्यार में कभी जबरदस्ती नहीं होती। अभी मेरी इच्छा नहीं है और हो सके तो शादी के बारे में भूल जाओ, दिव्या एक मित्र थी और रहेगी। हाँ तुम्हारे द्वारा किया गया उपकार आजीवन नहीं भूलूँगी, ये वादा करती हूँ।

आवाज में तीव्रता थी इसलिए इतनी बातें सबने सुन लीं थी। शायद शेखर जबरदस्ती हाँ करवाना चाहता था।

दिव्या के माता-पिता भी दिव्या के विरूद्ध कुछ नहीं करना चाहते थे, लेकिन अपनी इज्जत पर तरस खा रहे थे। शेखर के माता-पिता को भी अपना अपमान महसूस हो रहा था।

बाहर निकलता हुआ शेखर बोला ''चलो मम्मी पापा, चलना ही ठीक है।''

शेखर के माता-पिता ने हाथ जोड़कर क्षमा माँगी और कहा ''हो सके तो हमें माफ कर देना। दिव्या को समझाऊँगा फिर मैं उसे स्वयं लेकर आपके पास आऊँगा।''

''इसकी कोई आवश्यकता नहीं'' शेखर ने कहा।

''जहाँ वह चाहे उसकी शादी कर दीजियेगा मुझे कोई अफसोस नहीं होगा।''

चलते हुए कदमों में वेदना थी, लेकिन वास्तविक कारण किसी को ज्ञात नहीं था, दिव्या ही जानती थी। शेखर भी नहीं समझ पा रहा था, आख़िर उसे ठुकराया क्यों गया? वातावरण की आँखों में आँसू थे। गेट के बाहर जो फूल अब तक महक रहे थे, खिल रहे थे एकाएक मुरझा गये, गन्धहीन हो गये।

❑

''कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है'', यह कई बार सुन चुका था और पढ़ चुका था, लेकिन तब उस पंक्ति का अर्थ समझ में नहीं आया था। शेखर के जीवन में कई अर्थ तब समझ में आते हैं, जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो। भाग्य की रेखा अनेदखा कर रही हो। तब किसे दोष दिया जाये अपने आपको या परिस्थिति को, समय को, भाग्य को, जो भी हो सब कुछ विपरीत था शेखर के।

जब एकाएक सपने बिखर कर विखण्डित हो जाये, सपनों का शीशमहल भरभरा कर गिर पड़े। सपनों का हरा-भरा महकता गुलशन उजड़ जाये तब क्या किया जाये। शेखर का मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं था। बार-बार दिव्या का चेहरा उसके समक्ष घूम रहा था। उसे चेहरे से फूटते हुए स्वर ''हो सके तो शादी का ख़याल अपने मन से निकाल दो।'' शेखर अपने आप से प्रश्न करता है। आख़िर क्या कमी रह गयी उसके प्यार में। उसके लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया अपना। दोस्तों को छोड़ना पड़ा, मम्मी-पापा का विरोध झेलना पड़ा। उन सभी रिश्तेदारों का विरोध लेना पड़ा, जो उसके लिए एक से बढ़कर एक रिश्ता लाये थे। सबको ठुकरा दिया। 'माया मिली न राम'। कहीं का नहीं छोड़ा। बीच चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया, रास्ता अदृश्य है, किधर जाया जाये। इसी ऊहा पोह में दिन रात घुटता रहा, लेकिन विवश।

एक दिन माँ ने समझाया बेटा इस तरह कब तक बैठे रहोगे। तेरी ड्यूटी खत्म हो चुकी है, अपनी ड्यूटी पर जाओ। चार लोगों के पास बैठोगे तो मन हल्का हो जायेगा और हाँ जहाँ तक रही शादी की बात तो तुझे कोई दूसरी दिव्या मिल जायेगी। आख़िर अब उसके पीछे जान तो नहीं दी जायेगी। यदि ईश्वर एक रास्ता बन्द करता है तो दूसरा अवश्य खोल देता है। हो सकता मंजिल कहीं और हो। उठो और उस मंजिल की ओर कदम बढ़ाओ, खुशियाँ ढूँढ़ने का प्रयास करो। यहाँ घुटने से कोई फायदा नहीं। ''माँ यह सब तो ठीक है लेकिन...'' कहकर रुक गया। माँ का अपमान हुआ था, इसलिए शेखर माँ से कुछ ज्यादा नहीं बोल पा रहा था। ''लेकिन क्या बेटा? मैं तेरी पीड़ा को समझ सकती हूँ तुझ पर क्या बीत रही होगी? मुझे मालूम है। फिर तू कर भी

क्या सकता है? जितना तू सोच रहा है उस दिव्या के बारे में, उसने इसका आधा भी सोचा होता... खैर छोड़ कुछ लोग होते ही जन्मजात एहसान फरामोश। क्या कुछ नहीं किया तूने उसके लिए। उसकी हक़ीकत को जानते हुए। तूने उसे प्यार किया, उसका अमेरिका तक इलाज करवाया और शादी की बात की तो मना कर दिया। बड़ी अप्सरा है, कलमुँही कहीं की।''

चाहे दिव्या ने कुछ भी कह दिया हो, शेखर अब भी उसके बारे में कुछ सुनने को तैयार नहीं था। लेकिन माँ को कुछ नहीं कह सकता था, फिर भी हिम्मत जुटाते हुए समझाने की मुद्रा में माँ से कहा - ''मम्मी तुम मुझे जो चाहे सो कह लो उस दिव्या के बारे में कुछ मत कहो। हो सकता है उसकी कोई मजबूरी रही हो, जो कह नहीं पा रही हो। हो सकता है, हमसे ही कुछ भूल हो गयी हो हमें इतनी जल्दी प्रस्ताव नहीं रखना चाहिए था। उसके बिना रजामंदी के।'' माँ को गुस्सा आ गया।

''गलती तो सब हमारी ही थी। उसकी तो सब अच्छाई ही थी। पता नहीं कैसा भूत सवार है उसका। मेरी तो सुनने को तैयार ही नहीं है। एक महीना हो चुका है, अभी तक उसके ख़याल में डूबा है। नौकरी से ली गयी एक महीने की छुट्टी भी समाप्त हो चुकी है। पता नहीं क्या सोच रखा है। यदि तेरा मन नहीं मानता है तो एकाध बार फोन करके हाल चाल ले ले उसके कैसे मौज में रह रही है।''

बात व्यंग्यात्मक थी लेकिन तथ्यपरक। जब किसी से खटास हो तो इधर उधर चर्चायें करने के बजाय सीधे उसी से बात कर ली जाये, तो मन हल्का हो जाता है। लेकिन शेखर पहले ही दो बार फोन मिला चुका था। लेकिन फोन बार-बार स्विच ऑफ बोल रहा था। यह कैसे बताये माँ को कि फोन उसका बन्द है।

''ठीक है माँ कल से मैं अपनी ड्यूटी पर जाऊँगा लेकिन अब मुझसे शादी के बारे में कोई चर्चा मत करना। दुनिया में बहुत सारे लोग हैं, जिनकी शादियाँ नहीं होती है। उनका भी जीवन कट जाता है।''

''जैसी तेरी मर्जी'' बात को आगे न बढ़ाते हुए अन्दर चली गयी। दिव्या के माता-पिता ने पता नहीं कितना भला बुरा कहा ''तूने देवता जैसे पुरुष शेखर को ठुकरा दिया।'' पता नहीं अपने को क्या समझती है? जब तुझे उसे सच्चा प्यार नहीं था तो उसे अँधेरे में क्यों रखा, क्यों ख्वाब दिखाये थे, क्यों निकटता बढ़ाई थी। उसने अपना सब कुछ तेरे पर न्यौछावर कर दिया तेरे कहने पर ही उसने पी.सी.एस. किया था। लेकिन तब भी तूने उसे धोखा दिया। अपनी बीमारी का रोना रोया। तेरी लाइलाज बीमारी का उसने इलाज करवाया। तेरे जीवन की एक-एक श्वॉस उसके ऋण में दबी है। तूने उसे ठुकरा अच्छा नहीं किया। पता नहीं उसके दिल पर क्या बीत रही होगी। मेरी तो इच्छा हो रही है, मुझे तेरे हाल पर छोड़ दिया जाये, तुझसे कोई सम्बन्ध न रखा जाये।''

गुस्से में क्या-क्या निकल रहा था, उसके पिता के मुख से ''जब दुनिया तेरे ऊपर पत्थर फेंक रही थी। कलमुँही, कलंकिनी, पापिनी, चरित्रहीन, भ्रष्ट ना जाने किन-किन विशेषणों से तुझे नवाज रही थी। तब एक वही इन्सान ऐसा था जिसने तुझे सहारा दिया। तेरे जीवन में खुशियों को वापस लाया। समाज में मुँह दिखाने लायक बनाया, तुझे तेरी पहचान वापस दिलाने के लिए जमाने से लड़ गया और तूने उसे ठुकराया, तुझे तो भगवान भी माफ नहीं करेगा।'' और पता नहीं क्या-क्या कह दिया, उसके पिता ने।

दिव्या ने अपने पिता को बीच में एक बार भी नहीं टोका चुपचाप सुनती रही, पिता की सारी बातें, क्योंकि उन बातों में सच्चाई थी यथार्थ था। इसलिए एक लफ़्ज भी नहीं निकाला। ''शेखर कल भी उसका प्यार था, आज भी उसका प्यार है और कल भी रहेगा।'' इतना संक्षिप्त जवाब दिया अपने पिता को बड़े संयमित स्वर में।

गुस्सा भड़क गया जैसे किसी ने जले पर नमक छिड़क दिया हो। ''यह कैसा प्यार है, यह तो उसके जीवन से खिलवाड़ है, उसे छोड़ दिया है, बीच मझधार में लटकने के लिए। कहीं कोई कदम गलत उठा लिया तो कहीं के नहीं रहेंगे।''

''ऐसा कुछ नहीं होगा पापा। मैं भली भाँति उस शेखर को जानती हूँ। वह कायर नहीं है। वह परिस्थितियों से जूझने वाला इन्सान है। वह दूसरी शादी भी नहीं करेगा, मैं यह भी जानती हूँ। वह मेरे बिना रह भी नहीं पायेगा, मैं यह भी जानती हूँ, वह भी मेरा अन्तिम प्यार है, मैं शादी करूँगी तो उसी से वरना किसी से नहीं। मैंने भी उसे मन ही मन अपना मान लिया है। केवल शरीर समर्पण ही बचा है, रस्मों के लिए।

''फिर क्यों तड़पा रही हो उसे! वियोग में क्यों जला रही हो? तेरी बातें तू ही जाने, मेरी समझ से परे हैं। मैं कुछ नहीं समझ पा रहा हूँ। एक तरफ वो प्यार भी उसी से करती है और दूसरी तरफ शादी से इन्कार भी उसी से किया है। यह तेरा कौन सो नया नाटक है?''

''यह नाटक नहीं पापा हकीकत है। छः महीने से एक साल के अन्दर सब कुछ पता चल जायेगा आपको।

''क्या ख़ाक पता चल जायेगा, तेरी माया तू ही जाने हम तो चले। इतना कहकर कमरे से बाहर निकल गये।

❑

लगभग एक साल बीत चुका था। शेखर अपने काम से काम रखता था। उसे दुनियादारी का कोई ख़याल नहीं था। ठीक उसी प्रकार दिव्या ने भी एक साल अपने आपको एक कमरे तक ही सीमित कर लिया था। उसकी दोस्ती पत्र-पत्रिकाओं और

किताबों से ही थी। माता-पिता से भी ज्यादा बात नहीं होती थी। बीच-बीच में एक दो प्रतियोगी परीक्षाओं को और एकाध इन्टरव्यू दे चुकी थी इसी मध्य। माता-पिता ने उससे कभी नहीं पूछा तू क्या कर रही है, किसकी परीक्षा दे रही है, क्यों दे रही और कहाँ दे रही है, क्या करना चाहती है? कहने को दिव्या बेटी थी, लेकिन बेटी के रिश्ते तक ही सीमित रह गयी थी। माता-पिता भी दिव्या के लिए सिर्फ माता-पिता ही रह गये थे, कोई बातचीत नहीं। आपसी रिश्ते का प्यार उसी दिन समाप्त हो गया था, जिस दिन से देवता स्वरूप इन्सान शेखर को ठुकराया था।

दिव्या जानती थी एक दिन उसका होगा और सारी परिस्थितियाँ उसके अनुकूल होगी और सारा जमाना उसको गम्भीरता से लेगा एवं उसकी बात को ध्यान पूर्वक सुनेगा। उसे यह भी मालूम था कि उसका परिवार एवं शेखर का परिवार खुशी-खुशी उसे अपनायेंगे। इस बात के लिए वह पूर्णरुपेण आश्वस्त थी।

एक दिन सुबह-सुबह किसी ने नवीन चन्द्र के द्वार की घण्टी बजाई जो घण्टी काफी समय से मौन धारण किये हुए थी, उसी घटना के बाद क्योंकि सारे समाज से बहिष्कृत जैसी स्थिति थी उस परिवार की। प्रातः बेला में नवीन चन्द्र अलसाये हुए गेट पर पहुँचे और गेट खोला जो देखा बाहर बहुत हुजूम लगा हुआ है पुनः आँखों को रगड़ते हुए कि कहीं स्वप्न तो नहीं है गौर से देखा हाथों में कैमरे माइक लिए हुए लोग खड़े हैं।

एकाएक प्रश्न उछला, दूसरा प्रश्न, तीसरा प्रश्न, प्रश्नों की बौछार ''क्या दिव्या का यही मकान है और आप उसके पिता नवीन चन्द्र हैं।''

नवीन चन्द्र अचानक घबरा गये, आख़िर ऐसा क्या कर दिया उसकी बेटी ने, क्या नया हंगामा खड़ा कर दिया? अब पता नहीं क्या होगा? फिर हिम्मत जुटाते हुए पूछ ही लिया ''आप लोग कौन है, कहाँ से आये हैं, क्यों आये हैं, क्या कार्य है?''

उनमें से एक पत्रकार बोला हम लोग मीडिया वाले है आपकी बेटी दिव्या ने पी.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की है, हम उसे बधाई देने आये हैं और उसका इण्टरव्यू लेना चाहते हैं, जिसे प्रकाशित करेंगे अखबारों में एवं प्रसारित करेंगे चैनल्स पर। ''क्या दिव्या जी अन्दर हैं। यदि हाँ तो कृपया आपसे निवेदन है, उन्हें बुला दीजिए हमें उनके माता-पिता से भी मिलना है। जिन्होंने इतनी तेजस्वी होनहार बेटी को जन्म दिया है। उनके माता-पिता प्रणम्य हैं। उसने शहर का नाम रोशन किया है।

नवीन चन्द्र का सीना चौड़ा हो गया सगर्व बोले- ''जी, मैं ही उस दिव्या का पिता हूँ।''

इतनी बात सगर्व कह तो गये लेकिन अन्दर सकपका रहे थे। पता नहीं ये मीडिया वाले सच ही बोल रहे है या दिव्या ने कोई नया बवण्डर खड़ा कर दिया है। अभी भी सहज विश्वास नहीं हो रहा था।

''अरे नवीन चन्द्र जी बधाई! क्या हम लोग आपकी बेटी दिव्या से मिल सकते हैं?''

''अवश्य'' इतना कहते हुए तेज कदमों के साथ दिव्या के कमरे तक गये और आज बड़े प्यार से ''बेटी दिव्या तूने पी.सी.एस. पास कर लिया है। तूने तो बताया तक नहीं। बाहर मीडिया वाले चिल्ला रहे हैं, बधाई दे रहे हैं। वो तुझसे मिलना चाहते हैं।''

''हाँ पापा, मैंने पास कर लिया है पी.सी.एस., मैं तैयार होकर आती हूँ दो मिनट में'' अन्दर से बोली दिव्या। नवीन चन्द्र और उसकी पत्नी नन्दिनी दोनों अपने को सँभालते हुए बाहर निकले और मीडिया वालों से अन्दर आने को कहा ''आप लोग बैठिये दिव्या अभी आती है।''

दिव्या तैयार होकर आयी सभी की बधाइयाँ स्वीकार की मिठाई खायी एवं खिलायी अपने माता-पिता एवं पत्रकारों को। फोटोग्राफ्स लिये गये। कुछ मीडिया वालों ने माँ-बाप सहित उसका इण्टरव्यू लिया। इस सारी प्रक्रिया के बाद मीडिया वाले चले गये।

दिव्या ने अपने पिता की तरफ मुखातिब होते हुए कहा - ''मैंने आप दोनों का बहुत दिल दुखाया है। शायद अब आप समझ गये होंगे, मैंने यह क्यों किया? शेखर से क्यों मना किया था? जिसने मेरे जीवन में जीने की आशा का संचार किया। पापा मेरी भी जिम्मेदारी बनती थी कि मैं शेखर के बराबर खड़ी होने लायक बना लूँ अपने आपको। इसलिए मुझे निष्ठुर बनना पड़ा।'' कहते-कहते आँसू छलकने लगे दिव्या के आँखों से।

''जब तेरा मकसद ही पी.सी.एस. परीक्षा था तो ये सब करने की क्या जरूरत थी? ये तो शादी के बाद भी हो सकता था, शेखर के साथ रहकर।'' पिता ने समझाते हुए कहा।

''पापा मैंने एअरपोर्ट पर उतरकर शेखर के चेहरे पर जो खुशी देखी थी उसमें कहीं न कहीं एहसान छिपा हुआ था, जिसे कोई देख नहीं सकता था मैं केवल महसूस कर रही थी और उस एहसास में ऐसा लगा कि दिव्या तू मेरे कारण ही स्वस्थ हुई हैं, अब तुझे पाने का मेरा ही अधिकार हैं।'' मैं अधिकार पूर्वक पायी जाऊँ, मैं ऐसा नहीं चाहती थी। मैं कुछ बनकर उनके समक्ष खड़ी हो सकूँ। ऐसा मेरे मन में भाव था।''

''लेकिन शेखर के मन में तो ऐसा कुछ भी नहीं था।'' पिता बोले।

''पापा मैं चाहती थी कि समाज यह न कह सके कि एक बेसहारा को सहारा देकर उसके साथ सगाई की। यदि ऐसा आरोप शेखर पर लगता तो उसे मैं सहन नहीं कर पाती। लोग यह कहें कि एक एड्स पीड़िता ने अपने रूप सौन्दर्य के जाल में एक पी.सी.एस. अधिकारी को फँसा लिया और उसकी लाइफ को बरबाद कर दिया। मैं यह भी नहीं चाहती थी इसलिए मुझे सारे आरोप झेलने पड़े। स्वार्थी कहा गया, घमंडी कहा

गया। मुझे सब मंजूर था लेकिन शेखर के चरित्र पर कोई दाग लगे यह मुझे मंजूर नहीं था। मैं तो अपने शेखर को स्थायी खुशी देना चाहती थी। जीवन भर की खुशियाँ उसके कदमों में बिखेरना चाहती थी, उसकी मैं ऋणी हूँ और मैं रहूँगी।'' कहते हुए अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी, उसके आँखों से शायद जो वियोग उसे मिला था और शेखर को दिया था, वह झर रहा था।

उसके पिता ने फिर प्रश्न किया - ''लेकिन प्रश्न यह है कि अब शेखर को मनाओगी कैसे?''

''यह मेरे ऊपर छोड़ दो पापा। वह मेरे से रूठा है, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची है, उसके माता-पिता का अपमान हुआ है, वियोग का दंश झेला है। मैं उसे मनाना भी जानती हूँ, मैं उसकी हर बात समझती हूँ। आज भी, उसकी हर धड़कन पर मेरा ही नाम है।'' बस पापा आप केवल सार्वजनिक जश्न का आयोजन करो बाकी मेरे ऊपर छोड़ दो।

''एक दिन में ढ़ेर सारी व्यवस्थायें, टेन्ट लगवाना खाने-पीने का इन्तजाम तैयारियों में सब व्यस्त। दिव्या के माता-पिता जो अब तक गुमनामी का जीवन जी रहे थे उन्हें भी दिव्या ने गर्व से जीने का अधिकार दे दिया था, फोन की घण्टियाँ घूमने लगी आमंत्रण दिये गये, आयोजन में आने को और खुशियाँ बाँटने को।

जमाने की रीति है, कण्ठ का पहाड़ अकेला झेलता है मनुष्य, और जब खुशी का अवसर होता है जो उसे सार्वजनिक बाँटता है, दोनों हाथों से।

दिव्या का फोन जो एक साल से बन्द था, उसे बाहर निकाला गया, रिचार्ज भी कराया गया, मोबाइल भी पुनः दिव्या के हाथों में खुश था। सभी मित्रों को सूचना और अगली काल शेखर को।

फोन उठा केवल हैलो की आवाज आयी, शेखर दिव्या का नम्बर निकाल चुका था। फोन से तो निकल गया था, लेकिन उसके दिल से आज भी नहीं निकला था।

''इधर से हैलो शेखर मैं तुम्हारी दिव्या।''

शेखर ने कोई उत्साह नहीं दिखाया केवल हाय बोला।

''क्या बात है जानूँ तुम मुझसे नाराज हो?'' दिव्या ने कहा।

''नहीं दिव्या जी, मैं आपसे नाराज नहीं मैं तो...।''

बीच में टोकते हुए ''फिर दिव्या जी कहा, अपनी दिव्या को''

''हाँ दिव्या जी कहना ही ज्यादा उचित है मेरे लिए''

दिव्या जानती थी शेखर का घाव ज्यादा बड़ा है, अभी तक भरा नहीं है और भरना भी नहीं चाहिए। फिर भी अपने शेखर को मनाने की जिम्मेदारी भी है। इसलिए बात आगे बढ़ायी।

''आप इस समय कहाँ है क्या मैं जान सकती हूँ? मैं आपसे मिलना चाहती हूँ।''

''मिलने को अब बचा ही क्या है खण्डहरों में? वैसे मैं इस समय जयपुर में हूँ। फिर जान कर करोगी भी क्या?'' कहकर चुप हो गया।

''दिल्ली वापस कब तक आ रहे हो?''

''कल तक'' संक्षिप्त जवाब ही बचता है ऐसे परिदृश्य में।

''तो ध्यान से सुनो मेरे शेखर। आपने मेरे ऊपर इतने उपकार किये हैं, आपसे हाथ जोड़कर एक निवेदन है, जिन्दगी में आख़िरी बार एक और उपकार कर देना।

''क्या?''

कल हमारे घर एक छोटी सी पार्टी है, उसमें आपको अवश्य आना है, मना मत करना। आप बड़े दिल के हैं और मैं नादान हूँ। एक गलती समझकर माफ कर देना, आना अवश्य है। हाँ मैं यह भी जानती हूँ, आपके माताजी एवं पिताजी का भी अपमान हुआ है। मैंने उनसे बात कर ली है, उन्हें आमंत्रित कर दिया है। आप जरूर आना प्लीज मना मत करना।'' गला रुँध चुका था।

अड़िग शेखर ने कहा ''हमारे आने और ना आने से क्या अन्तर पड़ता है।''

''अन्तर तो पड़ता है शेखर जी। हमें बधाई देने नहीं आओगे।''

''किस बात की बधाई?''

''ये तो यहीं आकर पता चलेगा महोदय।''

''दिव्या जी, जो भी हो मैं फोन पर ही बधाई दे रहा हूँ स्वीकार कर लें आप।''

''आपको आना ही होगा हमारी पार्टी में। आपके बिना यह पार्टी ही नहीं होगी, ऐसा हमारा प्रण है। आपके आगमन से ही पार्टी की शुरूआत होगी। जिसने मेरे जीवन में इतने उपकार किये हों उसको बुलाना हमारा फर्ज़ ही नहीं धर्म भी है।''

''ख़ैर छोड़ो फर्ज़ और धर्म की बातें। ये बातें तुम्हारे मुख से शोभा नहीं देती हैं। शब्द भी शर्मिन्दा हो जाते हैं। मैं इन सबमें यकीन नहीं रखता हूँ। पूरे एक साल के बाद धर्म और फर्ज़ की बात याद आयी है।'' एक वाक्य में ही अपने मन की भड़ास निकल गयी शेखर की।

''मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है शेखर जी एक बार केवल दो मिनट के लिए पधारकर मुझे आशीर्वाद तो दे सकते हो।'' शेखर जो मन ही मन अनुमान लगा रहा था अब यकीन में बदल रहा था आशीर्वाद शब्द सुनकर। शायद इसकी शादी तय हो गयी

है, उसी अवसर पर बुलाना चाहती है। ख़ैर जो भी हो ''ठीक है देखेंगे।'' कहकर फोन रखने वाला था।

तभी दिव्या ने रुँधे हुए गले से ''प्लीज मना मत करना मैं जबरदस्ती तो नहीं कर सकती क्योंकि मेरा कोई अधिकार भी नहीं है। केवल एक प्रार्थना है अपने उस भगवान से जिसने मुझे यह जीवनदान दिया है। अंतिम बार निवेदन स्वीकार कर लेना एक बार एक उपकार और कर दो।''

''ठीक है आऊँगा।'' कहकर फोन काट दिया शेखर ने।''

दिव्या आश्वस्त थी कि शेखर जिस बात के लिए जुबान दे देता है, उससे आज तक पीछे नहीं हटा है। फिर भी फिक्रमन्द भी। उसका आना बहुत जरूरी था। उसी के लिए इस पार्टी का आयोजन था। एक साल पहले शेखर ने ऐसा आयोजन किया था, भले ही वह पारिवारिक था। शेखर के माता-पिता ने यह नहीं बताया कि दिव्या ने उन्हें फोन किया है।''

लेकिन अगले दिन नवीनचन्द्र के यहाँ पार्टी के निश्चित समय पर मेहमानों का जमावड़ा हो चुका था। बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ था। दिव्या आकर्षक लिवास में सजी सभी की बधाई स्वीकार कर रही थी, किसी से गिफ्ट किसी से गुलदस्ता सभी का भावनाओं का धन्यवाद कहते हुए स्वागत कर रही थी। किन्तु उसकी दृष्टि गेट पर लगी थी कि कब उसका शेखर आयेगा।

शेखर भी असमंजस में था क्या करें, क्या न करें फिर भी उसने बाजार से एक फूलों का गुलदस्ता खरीदा चलो उसके शादी के अवसर उसे यही भेंट ठीक रहेगी। सदा मुस्कराती रहे इन फूलों की तरह जहाँ भी रहे खुश रहे।

जयपुर से लौटने के बाद घर पर आराम किया था और अपने माता पिता को बस इतना ही कहा था कि एक दोस्त के यहाँ पार्टी है देर से आऊँगा। उसके माता पिता ने भी उसे कुछ नहीं बताया था यद्यपि उन्हें यह पता था यह वहीं जायेगा।

धीरे-धीरे कदम बढ़ते जा रहे थे। दिव्या के घर की ओर अर्थात पार्टी स्थल की ओर। जैसे ही पार्टी के स्थल पर बने मुख्यद्वार पर पहुँचा दिव्या के माता-पिता ने बड़ी गर्म जोशी से स्वागत किया और अन्दर लाये। दिव्या की तरफ इशारा करते हुए, जाओ मिल लो जाकर।''

शेखर पार्टी की चकाचौंध देखकर स्तब्ध था, दिव्या सभी से गिफ्ट, गुलदस्ते स्वीकार कर रही थी, खिलखिला रही थी, चेहरे पर, अजीब नूर था। शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ मौजूद थी वहाँ। यह सब देखकर शेखर का दिल बैठा जा रहा था। यहाँ तक तो आ गया लेकिन दिव्या के पास तक पहुँचने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। मन ही मन सोच रहा था, कहीं बेइज्जती करने को तो नहीं बुलाया। फिर भी मन को पक्का करते हुए आगे बढ़ा, गुलदस्ता भेंट किया करते हुए, इतना ही कहा ''बधाई

हो दिव्या जी'' मन में संकोच था, क्योंकि आयोजन देखकर कहीं से नहीं लगता था कि यह शादी का आयोजन है इसलिए बधाई के साथ शादी शब्द नहीं जोड़ा।

धन्यवाद कह पाती तब तक शेखर पीछे मुड़ गया वापस जाने के लिए।

दिव्या ने शेखर का हाथ पकड़ लिया ''कहाँ जा रहे हो शेखर जी उधर देखो।'' अपने पिता की ओर इशारा करते हुए कहा। दिव्या के पिता ऊँचे बने मंच पर माइक हाथ में लिए बोल रहे थे।

''यहाँ उपस्थित सभी देवियों एवं सज्जनो'' इतनी आवाज आते ही पार्टी में सन्नाटा छा गया सभी मंच की ओर मुखातिब होकर सुनने लगे।

शेखर को पुकारते हुए ''अरे शेखर तुम और दिव्या मेरे पास आओ इस मंच पर।''

शेखर शरमा रहा था, दिव्या उसका हाथ पकड़े हुए मंच की ओर ले गयी।

महफिल से शेखर का परिचय कराते हुए ''आप लोग इनसे मिलिए ये है शेखर शर्मा, एसडीएम मेरठ और आज के खास मेहमान।''

सभी आश्चर्यचकित थे कि वे सब तो दिव्या के आयोजन में आये थे, दिव्या की परीक्षा उत्तीर्ण करने की पार्टी पर ये कौन से खास मेहमान फिर भी अपनी जिज्ञासा शान्त किये सुनने लगे।

शेखर का मन विचलित होने लगा कि यह कौन सा नया कुचक्र मुझे बेइज्जत करने का।

अपनी बेटी को नजदीक बुलाते हुए आगे कहा ''मेरी बेटी दिव्या आज जिसने पी सी एस परीक्षा उत्तीर्ण की है, जिसकी खुशी में हम सब शरीक हुए हैं, हम आप सबका धन्यवाद प्रकट करते हैं, साथ ही एक खास बात बताना चाहते हैं कि मेरी बेटी दिव्या जो लाइलाज बीमारी से पीड़ित थी, उसके बचने की कोई संभावना नहीं थी। जिसका कोई उपचार भी नहीं था। जिसे समाज से बहिष्कृत कर देता है, मेरी एवं मेरे परिवार की जिन्दगी साक्षात नरक के समान थी। लेकिन उस नरक से निकाला इस महापुरुष ने। (शेखर को अपने पास करते हुए) इन्होंने न केवल इसे जीवन जीने के लिए प्रेरित किया बल्कि अमेरिका तक इलाज कराया। मेरी बेटी आज पूरी तरह स्वस्थ है। जीवन जीने की जिजीविषा इसके अन्दर है। आज आप सब जिसे बधाई दे रहे हो, उस दिव्या के जीवन की दीप्ति कबकी बुझ गयी होती। यदि शेखर जी इसके जीवन में नहीं आये होते। शेखर जी ने अपने जीवन से ज्यादा दिव्या को प्यार किया है, उसे जीवनदान दिया है। मैं उनके उपकार को जिन्दगी भर नहीं भूल सकता।

शेखर ने धीरे से दिव्या के कान में फुसफुसाया ''पी सी एस परीक्षा पास करने की, बहुत बहुत बधाई। यह बात फोन पर भी बता सकती थी।''

''सरप्राइज मेरे जानूँ''

ये सब बातें माइक के शोर में किसी ने नहीं सुनी सब माइक की तरफ सुन रहे थे।

दिव्या के पिता जो कभी माइक पर नहीं बोले थे, पता नहीं कहाँ से आज उनके पास शब्द भण्डार था, जो प्रस्फुटित हो रहा था।

''आज दिव्या ने पी.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की है, तो भी शेखर की प्रेरणा से ही सम्भव हुआ है। एक साल विलगाव, वियोग झेला हैं दोनों ने। बहुत बड़ा त्याग किया है शेखर ने। तपस्या की है दिव्या ने। आज उसी तपस्या के सम्मुख त्याग खड़ा है।''

''मैं आप सबको साक्षी मानकर त्याग और तपस्या के मिलन की घोषणा करता हूँ।'' माइक की आवाज थम गयी। तालियों की गड़गड़ाहट ने एक नया आकाश उठा लिया। विजय घोष, बधाइयों और जयकारों के स्वर उच्च हो गये। शेखर ने दिव्या की तरफ मुड़कर देखा। दिव्या के आँखों में आँसू थे। हाथ क्षमा की मुद्रा में जुड़े थे। मुँह से केवल एक ही स्वर फूट रहा था। ''हो सके तो शेखर मुझे माफ कर देना जो मैंने एक साल पहले तुमसे मना कर दिया था, मेरा मना करने के पीछे जो मकसद था, उसका परिणाम आपके सामने है। बड़े उद्देश्य के सामने विरोध मोल लेना पड़ता है, वही किया मैंने एक बार पुनः क्षमा चाहती हूँ।''

''वो सब ठीक है, लेकिन मेरे माता-पिता का अपमान'' दुखी मन से शेखर ने कहा।

मुस्कुराते हुए दिव्या बोली ''वो मेरे भी माता-पिता है। माता-पिता कभी बच्चों से नाराज नहीं होते हैं। वो देखो सामने बैठे हैं, हमें आशीर्वाद देने के लिए'' माता पिता उठकर आ जाते हैं। दिव्या की माँ भी आ जाती है, उन्हें लेकर आशीर्वाद में हाथ उठ जाते हैं।

पार्टी में एक ही नारा गूँजता है, ''शेखर जिन्दाबाद, शेखर जिन्दाबाद।''

दिव्या शेखर के चरणों में झुकने को होती है, तभी शेखर उसे उठा लेता है। दिव्या अपनी बाँहों में आकाश (शेखर) को भर लेती है। यह कहती हुई, ''इस लाइलाज को तुम्हारी प्रेरणा एवं अनथक प्रयास से जीवनदान मिला है, इस जीवन पर तुम्हारा अधिकार है। आज से यह दिव्या तुम्हारी हुई, सात जन्मों के लिए।''

❑